

कोमारभृत्य

वय विभाजन -

- 1) चरकानुसार - त्रिविध बाल्य मध्य व वृद्धावस्था
- 1) बाल्यावस्था - तत्र बालं अपरिपक्व धातुम् अजातव्यं जनं सुकुमारम् अवलेशसहम् असंपूर्णवलं इलेष्मधातुग्रायं आषोडशवर्षं । च.वि. 8/122

- 2) मध्यावस्था - 30 ते 60 वर्षपर्यंत
- 3) वृद्धावस्था - 60 ते 100 वर्षपर्यंत

2) सुश्रुतानुसार - त्रिविध

- 1) बाल्यावस्था - तत्र उनषाडशवर्षा बाला: । ते त्रिविधा -
 - 1) क्षीरपावस्था - संवत्सरपरः क्षीरपा: । जन्म से एक वर्षपर्यंत
 - 2) क्षीरान्नाद - द्विसंवत्सरपरा क्षीरान्नादा: । 1 वर्ष से 2 वर्षपर्यंत
 - 3) अन्नाद - परतो अन्नादः । 2 से 16 वर्षपर्यंत

2) मध्यमावस्था -

- 1) वृद्धी - 16 से 20 वर्षपर्यंत
- 2) यौवन - 20 से 30 वर्षपर्यंत
- 3) संपूर्णता - 30 से 40 वर्षपर्यंत
- 4) हानी - 40 से 70 वर्षपर्यंत

3) वृद्धावस्था - 70 वर्ष से मृत्युपर्यंत

बालक औषध भान्ना -

चरक - योग्य औषध - मधुराणि कषायाणि क्षीरवन्ति मृदूनि च ।

निषेध - अत्यर्थ स्निग्ध रुक्षोष्णा अम्ल कटु विषाक्ती च । गुरु च औषधं पानान्नम् एतद बालेषु गर्हितम् ॥

सुश्रुतानुसार औषधी दान स्वरूप -

- 1) क्षीरप अवस्था - बालक को मृदू औषध क्षीर व सर्वेसह दे व धात्री को केवल औषध दे
- 2) क्षीरान्नाद अवस्था - बालक व धात्री दोनों को औषध दे
- 3) अन्नाद अवस्था - कषायादी औषध केवल बालक को दे धात्री को न दे

शारंगधरानुसार औषधी मान्ना -

बालस्य प्रथमे मासि देया भेषजरक्तिका ।

प्रथम मास मे - एक रत्ती

प्रत्येक मास मे एक रत्ती वर्धन - एक वर्ष पर्यन्त तक वर्धन

ततपश्चात प्रति वर्ष एक माष वर्धन - 16 वर्ष पर्यन्त = 16 वर्ष बालक को 16 माष

यह मान्ना - 70 वर्ष पर्यन्त

सुश्रुतानुसार औषध मान्ना -

- 1) क्षीरप अवस्था - अंगूली पर्वद्वय समिता
- 2) क्षीरान्नाद अवस्था - कोलास्थी समीत
- 3) अन्नाद अवस्था - कोल समीत

काश्यपानुसार –

- 1) जातमात्र बालक – कोलास्थी संमित
- 2) 5 ते 10 दिन तक – कोलास्थी से अधिक
- 3) 11 से 20 दिन तक – कोलार्थ संमित
- 4) 1 मास – कोल संमित
- 5) 2 मासपर्यन्त – कोल से अधिक
- 6) 3 मासपर्यन्त – द्वि कोलसंमित
- 7) 4 मासपर्यन्त – शुष्क आमलक
- 8) 5 से 6 मासपर्यन्त – आर्द्र आमलक
- 9) 7 से 8 मासपर्यन्त – आर्द्र आमलक से अधिक

काश्यपानुसार चूर्ण मात्रा –

- 1) दीपनीय चूर्ण – अग्रपर्वागुर्लीग्राह्य
- 2) जीवनीय व संशमनीय चूर्ण – अग्रपर्वागुली से दुगुनी
- 3) वमन व विरेचन चूर्ण – दीपनीय चूर्ण से अर्ध भाग

काश्यपानुसार कषाय मात्रा –

- 1) दोष नाशक कषाय – 2 प्रसृत (शर्करा व मधु सह)
- 2) तामक विरेचक कषाय – 1 प्रसृत
- 3) दीपनीय संशमनीय कषाय – 2 प्रसृत

कल्क मात्रा –

- 1) दीपनीय कल्क – 1 कर्ष
- 2) जीवनीय संशमनीय कल्क – 2 कर्ष
- 3) वामक विरेचक कल्क – अर्ध कर्ष

Age wise classification –

- 1) New born – First seven days after birth
- 2) Neonates – First twenty eight days after birth
 - a) Early neonates – first seven days after birth.
 - b) Late neonates – seven to twenty eight days after birth.
- 3) Live born – It is product of conception that shows an evidence of life like breathing, Heart rate, pulsation of umbilical cord,
- 4) Still birth – it is product of conception that fail to show any evidence of life as a Gestational age is 20 weeks or more or wt exceeds 500gms.
- 5) Gestational age – Gestational age is calculated from the first day of the last normal Menstrual period till the date of birth.

- a) pre term – is a neonate before 37 weeks or less than 259 days
- b) Full term – is a neonate born in gestational age between 37 to 41 weeks.
- c) Post term – is a neonate born in gestational age of 42 weeks or more.

Prenatal period – extends from 22nd week of gestation to 7th day after birth.

Post natal period –

- 1) Toddler – 1-3 years
- 2) Pre school child – 3-6 years 3) School age – 6 – 10 years

कौमारभृत्यतंत्र

सूत्रस्थान – 1) लेहाध्याय

लेहन उद्देश – सुखदुःखं हि बालानां दृश्यते लेहनाश्रयम् ।

गर्भिणी द्वारा उत्पन्न रस के कर्म – 1) मातृपुष्ट्यर्थ 2) गर्भपुष्ट्यर्थ 3) स्तनपुष्ट्यर्थ

माता पोषण द्वारा गर्भ की त्रिविधि प्रकृति निर्माण – 1) वातस्थूणा 2) पित्तस्थूणा 3) श्लेष्मस्थूणा

बालक औषधी मात्रा –

विडंगफलमात्रं तु जातमात्रस्यदेहिनः। भेषजं मधुसर्पिभ्यां मतिमानुकल्पयेत् ॥

वर्धमानस्य तु शिशोर्मासे नु मासे विवर्धयेत् । अथामलमात्रं तु परं विद्वान्त वर्धयेत् ॥

1) जातमात्र बालक – विडंगफल मात्र अनुपान – मधु सर्पि

2) वर्धमान शिशु मे – मास मासानुसार मात्रा वर्धन परंतु आमलक प्रमाण से अधिक न बढ़ावे

लेहन योग्य व अयोग्य –

लेन योग्य	लेहन अयोग्य
1) अक्षीरा, अल्पक्षीरा वा दुष्टक्षीरा, प्रसुता जननी	1) सर्वरसाशिन्या स्त्री के पुत्र
2) दुष्प्रजाता (दुः प्रसवा), भृशव्याधीपिङ्गीत सुता	2) गुरुस्तन्योपसेवी, अजीर्णी, उर्ध्वजन्मुरुजान्वित
3) वात पित्त दोष प्रधानता पर कफवर्जित हो	3) स्वल्पो यो दृढगात्रकः
4) स्तन्य से जो बालक तृप्त न होते हो	4) कल्याणमात्र (जिसकी माता स्वर्गावासी हो गयी हो)
5) पीत्वा पीत्वा रूदन्ती (दुध पुनः पुनः पीत्वे परमी गेट	5) आमरोग, ज्वर, अतिसार, कामला, शौथ, गाण्डु, छर्टि
6) अनिद्रा मिशी ये	स्वास, कास, हुद्रोग, गुदबस्तीउदरामय, आनाह, गण्ड,
7) महाशना 8) अल्पमूत्रपुरीषाश्च 9) दीप्तानयश्च	विसर्प, अरोचक, अलसक
10) निरामयाश्च तनवो मृद्रुंगा ये च कर्शिता (निरामय होने पर भी तनु, मृद्रुअंग व कृत्ता हो)	6) निदालु, बहुविटमूत्र
11) वर्च कर्म न कुर्वन्ति बाला ये च व्यहात् परम्	7) अहनि (प्रतिदिन), अशित (भोजनोपरांत), दुर्दिने, अतिमात्रा मे व असात्म्य वस्तु लेहन न करे

लेहन विधि –

सुवर्ण घृष्ट कर मधु व सर्पि सह सेवन = इसे सुवर्णप्राशन कहते हैं

सुवर्णप्राशन लाभ – मेधाअमिबलवर्धक, आयुष्यकर, मांगल्य, पुण्य, वृष्य, वर्ण्य, ग्रहापहम्,

मासात् – परम मेधावी व्याधीभिर्त च शृष्ट्यते

षडभिर्मासै – श्रुतधर

लेहनार्थ योग –

1) ब्राह्मी मण्डूकपर्णी त्रिफला चित्रको वचा । शतपुष्पा शतावर्यो दन्ती नागबला त्रिवृत् ॥

एकैकं मधुसर्पिभ्यां मेधाजननमध्यसेत् । कल्याणकं पण्चगव्यं मेध्यं ब्राह्मीयृतं तथा ॥

2) समंगा त्रिफला ब्राह्मी द्वे बले चित्रकस्तथा । मधु सर्पिरिती प्राश्यं मेधायुबलवर्धये ॥

3) कुष्ठं वटांकुरा गौरी पिष्टल्य त्रिफला वचा । ससैन्यवैधृतं पक्वं मेधाजननमुत्तमम् ॥

सूत्रस्थान – 19 – क्षीरदोष व ग्रह संबंध

क्षीरदोष व ग्रह संबंध –

1) कटू तिक रसात्मक दुग्ध – शकुनी ग्रह आक्रान्त

- 2) व्यापन दुष्ट व सान्निपातज लक्षणयुक्त दुष्ट – स्कंद व षष्ठीग्रह का प्रभाव
 3) स्वादु व कटु रसात्मक दुष्ट – पूतनाग्रह प्रकोप

दूषीत क्षीर प्रभाव –

- 1) स्वादु रसात्मक – बहुविटमूत्रता
- 2) कषायरसात्मक – मूत्रविडग्रह
- 3) तैलवर्णयुक्त – बलवान बालक
- 4) घृतवर्ण – महाधन (धनवान) बालक
- 5) धूम्रवर्ण – यशस्वी बालक
- 6) शुद्ध दुष्ट – सर्वगुणोदित बालक

निशकरण – तस्मात् संशोधनपरा नित्यं धात्री प्रश्यस्यते ।

क्षीर विशोधनार्थ उपाय – (धात्री के लिए)

- 1) कषायपान, वमन, विरेचन, पथ्यभोजन
- 2) वाजीकरण औषधी सिध्द स्नेह सेवन

क्षीरवर्धनार्थ उपाय –

- 1) नाडिका सागुडा सिध्दा हिंगजातिसंस्कृता । क्षीरं मांसरसो मद्यं क्षीरवर्धनमुन्नम् ॥ नाडिका – कालशाक वाजीकरणसिध्दं त्रा क्षीरं क्षीरविवर्धनम् । घृततैलोपसेवा च बस्तयश्च पयस्करा: ॥
- 2) मधुराण्यवृत्तपानानि द्रवानि लवणानि च । मद्यानि सिधुवर्ज्ञानि ऊकं सिध्दार्थकान्ते ॥ वराहमाहिषादूर्ध्वं मासानां च स्तो हितः । लशुनानां पलाण्डूनां सेवनं शयनं सुखम् ॥ क्रोध अध्व भयशोकानामायासानां च वर्जनम् ।
 - 1) भधुर अन्नपन, द्रव, , लवण अन्नपान,
 - 2) सिधुवर्ज्ञानि मैदा, रिच्छार्तक से भिन्न श्लाक
 - 3) वराह व माहिष छोड़कर अन्य पशु मासरस सेवन
 - 4) लशन, पलाण्डु सेवन
 - 5) सुखपूर्वक शयन, क्रोध अध्व शोक भय आयास आदी वर्ज्ञ

अशुद्ध क्षीरसेवनजन्य व्याधी –

1) स्तनकीलक –

हेतु – अनापान सह धात्री द्वारा वज्रा सेवन

वज्रा – तृण कीट तूष शूक्र मास्तिका अंग मल, लोष्ट, केदा, अम्ली आदी

संप्राप्ती – अपच्यमान वज्रा – विकलीन होकर बायु द्वारा स्तन्यवह सिरा मे गमन – पयोधर (स्तन) मे पहुँचकर शीघ्र विकार उत्पत्ति । उस स्त्री को पीतवज्रा स्त्री कहते हैं।

पीतवज्रा स्त्री लक्षण – अजीर्ण, अरती, ग्लानी, अनिमित्त रूजा, अरुचि, पर्वभेद, अंगमर्द, शिरोरुजा, दवथु अंगग्रह कफित्वलेद, ज्वर, तृष्णा, तिडभेद, मूत्रसंग्रह, स्तंभ, स्त्राव, संततः सिराजाल शोथ, शूल, रुजा, दाह, स्तनः स्पृष्ट न शक्यते (स्तन स्पर्श न शक्यते), कीलवत अंग मे बाधा पहुँचाता है ।

टोषानुसार स्तनकीलक गै लक्षण –

- 1) वात से – आशु निवर्तते (वर्धते)
- 2) पित्त से – शीघ्र पाक
- 3) कफ से – चीर क्लेशयति

चिकित्सा –

घृतपानं प्रथमतः शस्यते स्तनकीलके । स्त्रोतांसि मार्दवं स्नेहाद्यान्ति वज्रं च च्यावते ॥
 निर्दोहो (दूध निकाल देना) मर्दनं युक्त्या पायनं च गलेन च (मुख /गल से औषधी पान)
 शीत सेक, प्रलेप, विरेचन, पथ्यभोजन. अविटग्ड मे स्त्रावण, पक्व मे पाटन व विद्रुधीवत उपचार

बालक आहार – (इतर संहिता)

1) सद्य प्रसूत बालक परिचर्या –

अ) चरक संहिता –

- 1) अश्मनोः संघटटनं कर्णयोः मूले
- 2) शीतोदकेन वा उष्णोदकेन परीषेक
- 3) अचेष्ट ही रहनेपर कृष्णकपालिका शूर्प से वायु करे ;जब तक की चेष्टा उत्पन्न हो जाये
- 4) उपरोक्त उपक्रम प्राणप्रत्यागमन होनेतक करे . तत पश्चात स्नान
- 5) सुपरिलिखीत अंगुली पर कार्पास लगाकर तालु ओष्ठ कंठ प्रमार्जन
- 6) संधव+सर्पि से बालक वमन

नालछेदन – अष्ट अंगुल पर बधन कर पश्चात छेदन

जातमात्र परिचर्या – मन्त्रोपमन्त्रित मधु व घृत लेहन व नत पश्चात दक्षिण स्तन से स्तन्यपान

अ) सुश्रूत –

2) जानमात्र बालक परिचर्या

- 1) बालक मुखस्थानज उल्ब संधव सर्पि द्वारा अपनयन
 - 2) मूर्धि स्थान पिचू आस्थापन
 - 3) नाभीनाडी अष्टांगुल स्थाने बंधन कर पस्चात छेदन
 - 4) मधु सर्पि अनन्ता (सुवर्ण) अंगुली द्वारा लेहन
 - 5) बला तैल अभ्यग
 - 6) क्षीरीवृक्ष क्षाय/ सर्वगंधोदक/ गैप्यहेमप्रतप्त वारी/ कपित्थपत्र लक्षाय से स्नान
- 1) प्रथम दिने – मधुसर्पि अनन्ता (सुवर्ण) त्रिकालं पाययेत
 - 2) द्वितीय व तृतीय दिने – लक्ष्मणा सिध सर्पि पान

तत्पश्चात मधु यत्र स्वपाणितलसंमित मात्रा मे पान

वाभट – स्वपाणितलसम्मित नवनीत स्तन्य के अनुपानसह

स्तन्यपान अवस्था – सिराणाम छुदिस्थानां विवृतत्वात् प्रसूतिः । तृतीयेऽन्हि चतुर्थे वा स्त्रीणां स्तन्यं प्रवर्तते ॥

प्रसूतिपश्चात तृतीय या चतुर्थ दिने स्तन्यपान करे । सुश्रूत / संग्रह

मोगट (पियुष) – सूतिका का प्रथम 3-4 दिन का स्तन्य = गुरु व कफकर अतः बालक मे निषेध

स्तन्यप्रवृत्ति हेतु –

तदेव अपत्यसंस्पर्शाद् दर्शनात् स्मरणादपि । ग्रहणाच्च शरीरस्य शुक्रवत् संप्रवर्तते ॥ सु. नि. 10/21

स्तन्य प्रमाण – 2 अंजली

मातृस्तन्य महत्व –

मातुरेव पिबेत् स्तन्यं तत्परं देहवृद्धये । अ.हु. ३. 1/15

मातृदुर्ग गुणधर्म –

- 1) जीवणं ब्रह्मणं सत्यं स्नेहनं मानुषं पयः ।
नावनं रक्पिते च तर्पणं च अक्षिशूलिनाम् ॥ च. सू. 27/224
- 2) नार्यस्तु मधुरं स्तन्यं कषायानुरसं हिमम् ।
नस्य आस्त्योत्तनयोः पथ्यं जीवनं लघु दीपनम् ॥ सु. सू. 45/57
- 3) नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ।
चक्षुः शूलाभिधातन्ध नस्य आश्वेतनयोः हितम् ॥ भा. प्र. दुर्घटवर्ग
- 4) मधुरं मानुषीक्षीरं कषायणच शीतं लघु ।
चक्षुष्यं दीपनं पथ्यं पाचनं गोचनं च तद् ॥ ग. मि. 19

स्तन्यपान अपनयन काल – अथैनं जातदशनं क्रमशोऽपनयेत् स्तनात् । अ.स.उ. 1/53
दात निकलने पर क्रमशः स्तनपान कम करे ।

स्तन्याभावे धात्री नियुक्ती –

अष्टांगसंग्रहानुसार दो धात्री नियुक्त करे ।

धात्री परीक्षा – च. शा. 8/52

- | | | |
|---|---|-----------------------------|
| 1) समान वर्णा | 2) वौवनस्था | 3) अव्यसनी |
| 4) अविरुद्धा | 5) निभता (अर्चचल) | 6) अनातुरा |
| 7) जीवद्वत्सा/जातावत्सका | 8) अजुगुप्सिता (धृणा न करनेवाली) | 9) ब्रह्मवारिणी |
| 10) अर्वंगा | 11) बदुक्षीया/दोष्यी | 12) शुक्लाम्बराचारा |
| 13) देश जातीयाम् | 14) अक्षुद्रा / अक्षुदकर्मिणी | 15) कृलो जाता |
| 16) अरोगा | 17) पुवत्सा | 18) अप्रमता |
| 19) अनुच्चारशाचिनी (बालक बल मूत्रे स्वच्छता करनेवाली) | 20) अनन्तावशाचिनी (चरित्र व शीलसम्बन्ध) | |
| 21) कुशलोपचारा | 22) शुचिमशुचिदेषिणी | 23) स्तन स्तन्य सम्पत युक्त |

काश्यपानुसार धात्री –

समानसत्त्वा बालानाम तस्माध्दात्री प्रशस्यते ।

उद्देगवित्रासकारी विपरीता न श्रस्यते ॥ का. सू. 28/33

स्तन संपत् –

चरक	सुश्रुत
प्रकृति वर्ण गन्ध रस स्पर्श युक्त	शीतल, अमल, ननु, शंखावभास
उदकपात्रे च दुहामानं उदकं व्येति (जल मे मिस्त्रीभूत)	अप्सु एकीभावं गच्छति अफेनिल, अतंतुमत, (अप्सु) न उत्पलवते अवसीदति वा

स्तन संपत – (च. शा. 8/53)

- 1) नातिउद्धर्वौ (स्तनी)
- 2) नातिलम्बौ (स्तनी)
- 3) नातिकृश (स्तनी)
- 4) नातिपीनौ (स्थूल)
- 5) युक्तपिप्पलकौ
- 6) सुखप्रपानौ

असम्पत् स्तनजन्य रोग – (सु. शा. 10/25)

1) उर्ध्वस्तनी – करालं कुर्यात्

2) लम्बस्तनी – नासिकामुखं छादयित्वा मरणमापादयेत् स्तन्य विकृति –

1) स्तन्य वृद्धि – स्तन्यं स्तनयोः आपीनत्वं मुहुर्मुहुः प्रवृत्ति तोदं च । सु. सु. 15/17

1) स्तनयोः आपीनत्वं – स्तन स्थूलत्वं

2) (स्तन्य) मुहुर्मुहुः प्रवृत्ती

3) स्तन तोद

2) स्तन्य क्षय –

हेतु – क्रोध शोक अवात्सल्यादीभिः स्त्रिया स्तन्यनाशो भवति । सु. शा. 10/32

लक्षण – स्तन्य क्षये स्तनयोः म्लानता स्तन्य असम्भवो अल्पता वा । सु. सु. 15/12

स्तन्यक्षय चिकित्सा –

चरक	सुश्रुत	काश्यप
ग्राम्य औटक आनूप शाकधान्य मांस	यव गोधूम शाली षष्ठिक मांसरस	वराहमाहिषमांस व्यतिरिक्त इतर मांस सिधार्तक व्यतिरिक्त इतर शाक
सीधु वर्जीत मदय	सुरा सीवीरक पिण्याक	सीधु वर्जीत मदय
मधुर अम्ल लवण भूयिष्ठ आहार	-----	मधुर, द्रव व लवण आहार
क्षीरिणी औषधी व क्षीरपान	-----	-----
अनायास	सोमनस्य उत्पाद	भय शोक आयास वर्जन
बीरण शाली षष्ठीक इक्षुवालिका दर्भ कश काश गुद्दा इत्कामूल (चरकोक्त स्तन्यजनन दशेमानि)	लशुन मत्स्य कशेरूक शृंगाटक विस विदारीकंद मधुक शतावरी मलिक अलाबु कालशाक	लशुन पलाण्डु सेवन सुखकारक शायन

स्तन्य दुष्टी –

1) चरक – 8

1) वातज – वैरस्य, फेनसंघात, गैक्ष्य

2) पित्तज – वैवर्ण्य, दौर्गंध्य

3) कफज – अतस्निग्ध, गुरु, पिच्छिल

2) सुश्रुत – 4

1) वातज – कषाय रसात्मक, क्षिप्तं च प्लवते अम्भसि

2) पित्तज – कटु, अम्ल, राज्यो अम्भसि च पितीका

3) कफज – घन, पिच्छिल, जले अवसिद्धि

4) सान्निपातज – सर्वलिंग

5) अभिधातज (मानसाभिधातज) – केवल उल्लेख

3) हारीतोक्त क्षीरदोष – 5

1) अल्पक्षीरत्व – वात से

2) उष्णक्षीरत्व –]

3) अम्लक्षीरत्व –] पित्त से

4) घनक्षीरत्व –]

5) क्षारक्षीरत्व –] कफ से

हारीतोक दुष्टस्तन्यज व्याधी -

1) घनक्षीर	आध्मान, निरोध (मलमूत्रवातनिरोध), श्वास, कास, उत्कुल्लिका
2) अल्पक्षीरत्व	कृश, दीन, श्वास, अतिसार हतबाक् (वाणीनाश)
3) उष्णक्षीर	ज्वर, शोष, ज्वरानिसार, अल्पत्व (शारीरिक व मानसिक वृद्धी में अल्पत्व)
4) क्षारक्षीर	चक्षुरोग, कण्डू, क्षत, इलेम्भास्त्राव, नासा व आस्य क्लेटयुक्त होना

स्तन्यदुष्टी चिकित्सा -

चरक - तेषां तु त्रयाणामपि क्षीरदोषाणां प्रतिविशेषमभिसमीक्ष्य यथास्वं यथादोषं च वमनविरेचनास्थापनानुवासनानि विभज्य कृतानि प्रशमनाय भवन्ति । च. शा. 8/56

- तर आदौ स्तन्यशुद्धर्थे धात्रीम स्नेहोपपादितम् ।

संस्वेद विधिवद् वैद्यो वमनेनोपपादयेत् ॥

सम्यक वमन पथात - संसर्जन क्रम, दोषकालबलानुसार स्नेहन कर विरेचन

युनः संसर्जन कर दोषघ्न अन्नापान

स्तन्यशोधन गण - पाठा महोषध सुरटारू मुस्ता मूर्वा गुडूचि वत्सकफल किरणतिक्त उटुकरोहिणी सारीवा

दुष्टस्तन्यज व्याधी -

1) उत्कुल्लिका - वर्णन - हारीत

हेतु - घनक्षीरसेवन

लक्षण - अध्मान, श्वास,

चिकित्सा - उदरस्थाने जलीकाद्वारे रक्तमोक्षण

स्वेदन व उदरस्थाने द्रहन कर्म, उदरस्थाने लप, तीक्ष्ण दव्ययुक्त गुदवर्ती

2) क्षीरालसक -

हेतु - धात्रीद्वारे त्रिदोषप्रकोपक आहार सेवन (हारीत), त्रिदोषदुष्ट स्तन्य बालक द्वारा सेवन

लक्षण - सहित नुर्मधी जलोपमम मलप्रवृत्ती, पीत सिर घन मूत्रप्रवृत्ती

ज्वर अरोचक तृट छर्दि शुष्कोद्वार विजृम्भिका अंगभंग, कुजन वेपथु भ्रम

चिकित्सा - धात्री व बालक दोन्हों को वमन

बालक क्षीरान्नाद अवस्था -

हिसंवत्सापरा क्षीरान्नादः । सु.सु. 35/29

एक से दो वर्ष तक

इस अवस्था में बालक आहार -

1) सुश्रुत - षष्ठ मास मे लघु व हितकर आहार

2) अष्टांगसंग्रह / अष्टांगहृदय - षष्ठ मास मे अन्नप्राशन

3) कार्यप - षष्ठ मास मे फलप्राशन व जातदंत पक्षात / दशम मास मे अन्नप्राशन

Weaning - means introduction of top feed or complimentary feed

According to WHO should be started from 4-6 months of age

According to unicef should be started from 6 months.

स्तन्याभावे इतर क्षीर -

वारभट - छागण्य वा गोपय हस्वपंचमू से सिध्द कर दिया जाय ।

गोक्षीर गुणधर्म –

स्वादु शीतं मृदू स्निग्धं बहलं इलक्षण पिच्छिलम् ।
गुरु मन्द प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः ॥ च. सू. 27/118

कुमारागार –

प्रशस्तवास्तु शरणं सज्जोपकरणं शुचि ।
निर्वातं च प्रवातं च वृद्धास्त्रीवैदय सेवितम् ॥
निर्मल्कुणाखु मशकतमस्कं च शस्यते ॥ अ. स. ३. 1/32

कुमाराधार –

अभियुक्तः सदाचारं नातिस्थुलो न लोलुपः ।
कुमाराधारः कर्तव्यस्तन्नाद्यो नालचित्तवित् ॥ अ. स. ३. 1/57

क्रिङ्गलकानि – (चरकोक्त)

- | | |
|--------------------|----------------------|
| 1) विचित्राणि | 5) घोषवती |
| 2) अगुरु | 6) अवित्रासणाणि |
| 3) अतीक्षणाग्राणी | 7) अप्राणहरणि |
| 4) अनास्यप्रवेशिणी | 8) जातुष्ठं (वाग्भट) |

संस्कार – प्रभुख -16

- 1) गर्भाधान – पुरुष 25 व स्त्री 16 वर्ष की आयु से संनानप्राप्त्यर्थ प्रयत्न करें ।
- 2) पुसंवन संस्कार – गर्भाधानपश्चात् द्वितीय वा तृतीय मास में
- 3) सिम्नोनयन संस्कार – गर्भाधानपश्चात् चतुर्थ मास के शुवल पक्ष में
बालक वृद्धीवर्धनार्थ

4) जातकर्म संस्कार –

- चरक – मन्त्रोपमनित मधुसर्पि तोहन
- सुश्रुत – मधुसर्पि अनन्ताचूर्ण लेहन
- वाग्भट – अथास्य जातकर्म प्राजापत्येन विधिना कुर्यात् ।

5) नामकरण संस्कार –

अ) चरक – 10 वे दिन (दशमे अहनि)

- नाम – दो प्रकार के 1) नाक्षत्रिक – नक्षत्रानुसार – द्रव्याक्षरं चतुःअक्षरं वा
2) अभिप्रायिक – माता पित इच्छानुसार

आदय अक्षर – घोषवत, मध्य – अन्तस्थ वर्ण अक्षर
अन्त मे – उष्ण वर्ण अक्षर ,

वह नाम वृद्ध रहीत (वृद्धी संज्ञक) हो। त्रिपुरुषानुक हो ।

ब) सुश्रुत – दशमे दिने – नाक्षत्रिक वा अभिप्रायिक

ब) अष्टांगसंग्रह – दशमे वा द्वादशे दिने

त्रिपुरुषानुक, आदौ घोषवद् अन्त्य वर्ण – उष्ण

पुत्र नाम – विसर्गान्त व सम अक्षरी, पुत्री नाम – विषम अक्षर

क) अष्टांगहृदय – दशम दिने

6) निष्क्रमण संस्कार – चतुर्थ मास मे अलंकृत कर बाहर सुतिकामार स बाहर निष्क्रमण

7) अन्नप्राशन संस्कार – षष्ठ मास मे अन्नप्राशन (सुश्रुत / संग्रह)

8) चूडाकर्म/ मुण्डन संस्कार – जन्मपश्चात 3-5 वर्षमे

9) कर्णवेधन संस्कार – प्रयोजन – रक्षाभूषण निमित्त

6/7/8 वे मास मे बालक रक्षार्थ दैवकृत छिद्र स्थाने वेधन

बालक प्रथम दक्षिण कर्ण मे वेधन, बालिका प्रथम वाम कर्ण मे वेधन

दैवकृत छिद्र व्यतीरीक स्थाने वेधन होने पर

1) कालिका सिरा स्थाने वेधन – ज्वर, शोथ, दाह, तेदना 2) मर्मरिका सिरा स्थाने वेधन – ज्वर, तेदना, ग्रंथी

3) लोहितीका – मन्यास्तम्भ, अपतानक, शिरोग्रह, कण्ठशूल

10) उपनयन संस्कार – विद्याग्रहणार्थ गुरु समोप जाना

11) वेदारंभ संस्कार – गुरुकुल मे वेदाध्ययन

12) समावर्तन संस्कार – 25 वर्ष उपरान्त वेदाध्ययन पूर्ण होनेपर गृहस्थाम मे प्रवेशार्थ

13) विवाह संस्कार – षोडश वर्षा बाला व पंचविंशती पाप्ता पुरुष विवाहार्थ योग्य

14) वानप्रस्थाश्रम संस्कार – 50 वर्ष पश्चात भौतिक जीवन त्याग कर वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश

15) संन्यास संस्कार – वानप्रस्थाश्रम मे जीवन व्यतीन पश्चात अध्यात्म पाप्त्यर्थ संन्यास

16) अन्येष्टी संस्कार – मन्युषपश्चात किया जानेवाला दादादी संस्कार

उपवेशन संस्कार –

काशयप – घट मास मे

अष्टांगसंग्रह – पंचमे मासि पूण्ये अहनि धरण्यमुनेशायेत्।

दंतोद्भवन –

काठयपानुसार – पूरुण दंत – 32 सर्वज्ञात दंत – 8 दिन – 24 (दे बार उत्पन्न होनेवाले)

1) यावन्सु एव च मासेषु दन्ता निषिद्ध्यन्ते तावत्सु अहःसु उद्दिद्यन्ते ।

जितने मास मे दंत का निषेचन होता है उतने ही दिन मे वे उद्देश होकर बाहर आते हैं ।

2) यावत्स्वेत च मासेषु जातस्य सत् उद्दिद्यन्ते तावत्स्वेत च वर्षेषु पतिताः पुनरुद्दिद्यन्ते ।

उत्पन्न होने के बाद जितने मास मे दंत निकलते हैं उतने ही वर्षो मे गिरकर पुनः निकल आते हैं ।

मध्य द्वावुत्तर स्थानज दंत – राजदन्त नाम – पवित्र माने जाने हैं उनके खण्डित होने पर वह मनुष्य श्राद्ध योग्य नही माना जाता ।

दंतोद्भवन मे व्यक्तीगत भिन्नता –

1) कुमारीयो मे कुमारो की अपेक्षा दंतजन्म आशुतर व अल्पबाधाकर होता है – सुषिर व मृदू होने से

2) कुमारो के दंत प्रकृष्टकाल से व आबाधबुलता से निकलते हैं क्राण – स्थिर व धन होते हैं

3) नुणां तु चतुर्थादिषु मासेषु दन्ता निषिद्ध्यन्ते । पुरुषो मे चतुर्थ मास मे दंत निषिक होते हैं ।

दंतोत्पत्ती प्रकार – 4 (चतुर्विध दंतजन्म)

1) सामुदग् – क्षयी नित्यसंपातात् (क्षय की अवस्था मे होने से नित्य गिरते हैं)

2) संवृत – अथन्य (अप्रशस्त), मलिष्य

3) विवृत – वीतमनित्यलालालोपहत् (नित्य लालास्त्राव होता है), असंच्नदन्तवादाशु दन्तवैवर्ण्यकरम् आसन्नाबाधमिती । ओष्ठो द्वारा पूर्ण ढके न होने से विवर्ण होते हैं व सदा रोग होते हैं ।

4) दंतसंपत – अष्टम मास मे आनेवाले दंत संपतवुक्त होते हैं ।

चतुर्थ से अष्टम मास दंतोत्पत्ती लक्षण -

चतुर्थ मास	दुर्बला, आशुक्षयिण च आमयबहुलाश्च
पंचम मास	स्यन्दनाश्च, प्रहर्षिणश्च, आमयबहुलाश्च
षष्ठ मास	प्रतिपाश्च (वक्र), मलग्राहीणश्च, विवर्णाश्च, घुणदन्ताश्च,
सप्तम मास	द्विपुटा, स्फोटिनश्च, रजीमन्तश्च, खण्डाश्च, रूक्षाश्च, विषमः च उन्नताश्च

अष्टम मास – सर्वगुणसंपन्नाश्च भवन्ति ।

दन्तसंपत – पूर्णता समता धनता शुक्लता स्निग्धता इलक्षणता निर्मलता निरामयता किंचिदुत्तरोन्नतता
दंतबंधानां च समता, रक्तता स्निग्धता बृहद् धनस्थिरमूलता चेति दन्तसंपत उच्यते ।

दन्तोद्देदकालीन व्याधी (अष्टांगसंग्रह)

दन्तोद्देदश्च सर्वरोगायतनम् । विशेषेण तन्मूला ज्वर शिरोभिताप तृष्णा भ्रम अभिष्ठंद कुकुणक पोथकी
वमथु कास श्वास अतिसार विसर्प । अ.स. उ. 2/19

TEETH –

1) deciduous teeth /primary teeth/milk teeth / baby teeth =

These begin to erupt at about 6 moth of age and one pair appears at about each month

There after until all 20 are present.

Usual time of eruption of deciduous teeth –

- 1) central incisors – 6-8 months
- 2) lateral incisors - 8-10 months
- 3) first molars - 12-16 months
- 4) canines - 16-20 months
- 5) second molars – 20-30 months

Usual time of eruption of permanent teeth –

- 1) first molars - 6-7 years
- 2) central incisors – 6-8 years
- 3) lateral incisors - 7-9 years
- 4) canines - 9-12 years
- 5) first and second premolars – 10-12 years
- 6) second molars – 11- 13 years
- 7) third molars – 17-21 years

कार्यपोक वेदनाध्याय –

1) शिरःशूल –

भृशं शिरः स्पन्दयति निमिलयति चक्षुषी ।

अवकूजति अरतिमान स्वप्नश्च शिरोरुजि ॥

अवकुजति – निद्रा मे चिल्लना अरतिमान – वैचेनी , निद्रानाश

2) कर्णवेदना –

कर्णो स्पृशति हस्ताभ्यां शिरो भ्रमयते भृशम् ।

अरति अरोचक अस्वप्नैः जानीयात् कर्णवेदनाम् ॥

3) मुखरोग –

लालास्त्रावणमत्यर्थं स्तनदेष अरति व्यथाः ।
पीतमृद्धिरनि क्षीरम् नासाश्वासी मुखामये ॥
पीतमृद्धिरनि क्षीरम् – पान किये हुए क्षीर का बमन

4) कण्ठवेदना –

पीतमृद्धिरति स्तन्यं विष्टम्भि इलेघ्मसेवनम् ।
इष्टत् ज्वरे अरुचि : ग्लानि : कण्ठवेदनयाऽर्दिते ॥
इलेघ्मल सेवन से मलविष्टम्भ

5) अधिजिह्विका –

लालास्त्रावो अरुचि ग्लानिः कपोले श्वयथु व्यथा ।
मुखस्य विवृत्वं च जानीयाद् अधिजिह्विकाम् ॥

6) ग्रहरोग –

ज्वर अरुचि मुखस्त्रावा निष्टनेश्व गलग्रहे । निष्टनेश्व – श्वास कष्टना

7) कण्ठशोथ –

कण्ठ(एठ)के श्वयथुः कण्ठे ज्वर अरुचि शिरोरुजः ॥

8) ज्वर –

मुहुर्नभयते अंगानि जूम्भने कासते मुहुः ।
धात्रामालीयते अवस्थान् स्तन्यम् न अतिअभिनन्दति ॥ धात्री से चिपक जाना है
प्रस्त्रावोष्णात् वैतपर्ये ललातस्यातितपृता । प्रस्त्राव – मुख से स्त्राव , ऊरीर उष्णात्व
अरुनिः पादायोः शैता ज्वरे र्व्युः पूर्ववेदना ॥

9) अतिसार –

टेहर्वैरर्थ्यं असि मुखग्लानि अनिद्रिता ।
वानकर्मनिवृत्तिः च इति अतिसारवेदना ॥ वातकर्मनिवृत्ती – वात अपना कर्म न करना (अनुलोमन

10) उदरशूल –

स्तन्यं लुदस्यते रौति च उत्तानश्च अवभज्यते ।
उदरस्ताव्यता शैत्यं मुखस्वेदश्च शृलिनः ॥

स्तन्यं व्युदस्यते – स्तनपान छोड़ देना है, उत्तान अवभजन – उत्तान जायन करना है

11) छर्दि (बमन) –

अनिमित्तं अभीक्षणं च यस्योद्वारः प्रवर्तते ।
निद्रा जृम्भा परीतस्य छर्दिस्तस्योपजायते ॥

12) श्वास –

निष्टनत्युग्साऽत्युष्णं श्वासस्तस्योपजायते । बालक छाती से उष्ण श्वास गमन

13) हिक्का –

अवस्थान् मारुतोद्वारः करो हिक्का प्रवर्तते ॥

14) तृष्णा –

स्तन्यं पिबति चात्यर्थं न च तृष्णिति रोदिति ।
शुष्क ओष्ठ तालु तोये अप्सु दुर्बल तृष्णायाऽर्दितः ॥

अधिक स्तन्यपान करनेपरभी तृप्ति होती नहीं बालक रोदन करता है. ओछ व तालु शुष्कता

15) मूत्रकृच्छ्र –

रोमहर्षो अंगर्हश्च मूत्र काले च वेदना ।
मूत्र कृच्छ्रे दशत्योष्टो बस्ति स्पृशनि पाणिना ॥

16) अश्मरी –

स शर्करातिमूत्रत्वं मूत्रकाले च वेदना ।
प्रततं रोदिती क्षामस्तं ब्रुयादश्मरीगडम् ॥ क्षाम – दुर्बल / क्षीण

17) अर्झ –

बृद्ध पक्व पुरीषत्वं सरकं वा कृशात्मनः ।
गुद निष्ठीडनं कण्डू तोदं चार्शसि लक्षयेत् ॥

18) चक्षुरोग –

दृष्टि व्याकुलता तोद शोथ शूलाश्रु रक्तता । रक्तता – नेत्र आरक्तता
सुप्तस्य चोपलिप्यन्ते चक्षुषी चक्षुरामये ॥ निदा समये उथय नेत्र उपलिपता

19) मदात्यय –

मूर्च्छा प्रजागर छर्दि धानी द्रेष अरति भ्रमैः ।
विनासा उद्गेग तृष्णाभिः विद्याट वाले मदात्ययम् ॥

20) अपस्मार –

अक्स्माद् अटद्वसनम् अपस्माराय कल्पते ।

21) उन्माद –

प्रलाप अरति वैचित्य उन्मादं उपलक्षयेत् ।

22) आनाह –

विशालस्तव्यनयनः पर्वभेद अगतिक्लमी ।
संख्यद मूत्रानिलविद् शिशुरानाह वेदनी ॥

23) अलसक –

शिरो न धारयति यो भिदयते जृम्भते मुहुः ।
स्तनं पिबति नात्यर्थं ग्रथितं छर्दयति आपि ॥
विषादाध्मान अरुचिभिः विद्यादलसकं तिशो ।
विसूचिका अलसकयोः दुःखने लक्षणोष्ठये ॥

24) विसूचिका –

दह्नान्ते अंगानि सूच्यन्ते भज्यन्ते निष्टन्त्यति । निष्टन्त्यपि – श्वासकष्टता
विसूचिकायां बालानां हृदि शूलं च वर्धते ॥

25) आमदोष –

स्तैमित्य अरुचि निदा गात्रपाण्डुकता अरति ।
रमणाशनशय्यादीन् धानीं च द्वैष्टि नित्यशः ॥ रमण (खेल), अशन, निदा, धानी इनसे नित्य द्रेष
अस्नातः स्नातरूपश्च स्नातश्वास्नात दर्शनः ।

26) विसर्प –

रकमण्डलकोत्पत्तीः तुष्णा दाहो ज्वरो अरतिः ।

स्वादुशीतोपशायित्वं विसर्पस्याग्रवेदना : ॥

27) पांडू –

नाभ्यां समलतः शोथः श्वेताक्षिनखवक्त्रता ।

पाण्डुरोगेऽग्निसादश्च श्ववथुश्वाक्षिकुटयोः ॥

28) कामला –

पीतचक्षुः नखमुखविटमूत्रः कामलार्दितः ।

उभयन्न निरूत्साहो नष्टाग्नि रूधिरस्युहः ॥ रूधिर प्रति आकांक्षा

29) जन्तुदंश –

स्वस्थवृज्जपरो बालो न शोते तु यदा निशि । स्वस्थ बालक रात्री में शयन न करे

रक्तविंदुचितांगश्च विद्यातं जन्तुकादितम् ॥

30) प्रमेह –

गौरवं वध्दता जाडयम् अकरमाद् मूत्रनिर्गमः ।

प्रमेहे माद्धिका क्रान्तं मूत्रं श्वेतं घनं तथा ॥

31) पीनस (प्रतिश्याय) –

मुहुर्मुखेनोच्छ्वासिति पीत्वा पीत्वा स्तनं तु यः । स्तनपानसमये पुनः पुनः मुख से श्वास

स्त्रवतो नासिके चास्य ललाटे चाग्नितप्यने ॥

स्त्रोतांस्यभीक्षणं स्पृशति पीनसे कासते ।

32) उरोधात –

उरोधाते तथैत एवाग्निष्टन्त्वरसात्तिकम् ।

प्रतिश्याय व्यतिरिक्त बालक उर से श्वास (महाश्वास) निकालता है।

प्रसवकालीन व्याधी –

अ) मूढगभं –

परिभाषा – तमेव कदाचित् 1) विवृद्धसम्यगागतमपथ्यग्रथम् अप्राप्तं

2) अनिरस्यमानम्

3) विगुणापानमोहितं

मर्द मूढगर्भमित्वाचक्षते । सु. नि. 8/3

प्रकार – सुश्रुत, माधव, भावप्रकाश, योगरलाकर तुसार -4

1) कील / संकीलक –

तत्र उर्ध्वबाहुशिरः पादो यो योनिमुखं निरुच्छिदं कील इव स कीलः । सु. नि. 8

2) प्रतिखुर –

निःसृतहस्तपादशिरः कायसङ्गी प्रतिखुरः । सु. नि. 8

3) बीजक –

यो निर्गच्छति एकशिरेभुजः स बीजकः । सु. नि. 8

4) परीघ –

यस्तु परिघ इव योनिमुखमावृत्य तिष्ठति स परीघः । सु. नि. 8

हारीतोक्त मूढगर्भ – देषज मूढगर्भ – 8

वानज, पित्तज, कफज, सान्निपातज, द्वंद्वज

सुश्रुतोक्त मूढगर्भ गती – 8

- 1) उभय सक्रिय से योनिमुख मे प्रवेश
- 2) आभुग्न एक सक्रिय से उदय
- 3) आभुग्न सक्रियशरीर स्फुग देशेन तिर्यगागतः
- 4) उरः पार्श्व पृष्ठ से आगमन
- 5) अन्तः पार्श्वपृष्ठ शिर एवं एक बाहु
- 6) आभुग्न शिर व बाहुद्वय
- 7) आभुग्न मध्य व हस्तपाटशिर से उदय
- 8) एक सक्रिय योनिमुख मे व एक सक्रिय पायु मे

असाध्य मूढगर्भ लक्षण –

- 1) सुश्रुत – गर्भकोषपरासंगो मक्कलो योनिसंबृतिः ।

हन्यात् स्त्रीयं मूढगर्भे यथोक्ताश्चाप्यपद्रवाः ॥ सु. सू. 33/11

गर्भकोषपरासंग – इल्लहणानुसार – गर्भाशय का अन्याधिक संग या गर्भ का पर स्थान मे जाकर संग

- 2) वारभट –

योनिसंवरणभ्रंशामकक्लश्चासमिडीताम् ।

पूत्युद्धारां हिमांगी च मूढगर्भा एरित्यजेत् ॥ अ. हु. शा. 2/38

- 3) काञ्चयप –

पूतिगन्धी मुखं यरन्या शूलं च एव उपजायते । निद्रा वा अभिद्रवत्येनां मूढगर्भा न जीवति ॥

मयूरस्त्रीवासंकाशं या पश्यन्ति हुतशनम् । शूनपादमुखी चैव मूढन जीवती

रकवस्त्रपरिथाना रकगाल्यानुलेपना । स्माधते सा शावाना वा इमशानं याधिगेहति ॥

मूढगर्भा सगर्भा वा गर्भिणी सा विनश्यति ॥ खिलस्यान 10

मूढगर्भ चिकित्सा –

मूढगर्भस्य तु जरायुपातनसामान्यं कर्मत्येके । मन्त्रादिकर्मा अथ अर्थवर्वेदविहीत इति एके ।

दृष्टकर्मना शाल्यहन्त्री शाल्यहरणमिति एके । अ. सू. शा. 4/35

उदगविपाठन –

बस्तिद्वारे विपन्नायाः कुक्षिः प्रस्पन्दते यदि । तत्क्षणाजन्मकाले तं पातवित्वोध्दरेद् भिषक ॥ सु. नि. 8

प्रसवोत्तर व्याधी –

- अ) नाभीरोग – चरकोक्त – 4

- 1) उचुण्डिता – दीर्घ व पीनत्वयुक्त
- 2) पिण्डलिका – परिमण्डलयुक्त गोल वा कठिन
- 3) विनामिका – अन मे उच्छून व मध्य मे निम्न (खोलगट)
- 4) विजूमिका – मुहुर्मुहु वृद्धीमती

चिकित्सा – तत्र अविदाहीभिर्वातिपित्तप्रशमनैरर्थ्यं उत्सादन परिषेकैः ।

सर्पिभिश्चोपक्रमेत् ॥ च. शा. 8/45

ब) अष्टांगसंग्रह / वार्गट - 2 1) उन्नत 2) अनुन्नत
अस्प्यक नालकर्तन से - 2 1) विनामिका 2) विजूमिका

क) नाभीतुंडी लक्षण व चिकित्सा (सुश्रुतोक) -

वातेनाध्मापितां नाभीं सरुजां तृणिदसंनिताम् । मारुतधैः प्रशमयेद् स्नेहवेदोपनाहतैः ॥ सु. शा. 10/43

उपशीर्षक - संग्रह / वार्गट

कपाले पवने दुष्टे गर्भस्थस्यापि जायते ।

सवर्णो नीरूजः शोफस्तं विद्यादुपशीर्षकम् ॥

उल्बक / अम्बुपूर्ण - (अष्टांगसंग्रह)

हेतु - गर्भोदक का बमन न होने से अथवा कण्ठगत इलेघ्मा का हुदय से संपर्क होने से दूषित हुआ रस मार्ग का (प्राणवह स्त्रोतस) आवरण कर लेता है ।

लक्षण - 1) बद्ध मुष्टी (मुष्टीया बांध लेना)

2) हुद्रोग आक्षेपक शास कास छर्दि ज्वर आदि रोगों से पिडीत उल्बकं सहजं व्याधीं अम्बुपूर्णं तं वदेत् ।

चिकित्सा - 1) प्रातः काल के अंतर्गत मे छागमूत्र स्त्रोतोविशेषनार्थ पान

2) स्नान व अभ्यंग न करे

3) बिल्वादीं पंचमूल व पंचकोल सिद्ध सर्पि पान

परिदर्श - छवि

त्वक दहन पश्चात जो व्रण त्वचा पर रहता है व त्वक कांती व्रण वर्ण समान बनती है ।

चिकित्सा - (संप्रह)

मूर्वा कमल शर्मी शिरीष सारंगवा यष्टी तील उशीर व द्रव्यों का लेप

राजिका - (अष्टांगसंग्रह)

गर्भ व स्वेद से वालक शरीर पर सरुज धन राजिकासमान पिटका उत्पन्न होती है ।

अजगलिलका - (सुश्रुत)

स्निग्ध सर्वर्ण ग्रथित निरूज व मुदगसन्निभ पिटका

दोषाधिक्य - वातकफ

चिकित्सा - जलौकाद्वारा रक्तमोक्षण , पाक होनेपर व्रणवत चिकित्सा

तालुनगन - (सुश्रुत)

मस्तुलुंगक्षयात् यस्य ताल्नस्थि नामयेत्

चिकित्सा - जीवनीय गणोक मधुर रस द्रव्य सिद्ध सर्पि से अभ्यंग पान , शीताम्बुआ से उद्देजन

गुदगत विकार -

1) गुदधंश -

प्रवाणातिसाराभ्यां निर्गच्छति गुदं वहि: ।

रुक्षदुर्बल देहस्य तं गुदधंशमादिशेत् ॥ सु. नि. 13/63

चिकित्सा - 1) सत्वध्वन्यगुदे पूर्व स्नेहस्वेदौ प्रयोजयेत् ।

सुस्विन्नं तं मृतूभूतं पिचुना संप्रवंशयेत् ॥ च. चि 19

2) अम्लसर्पि पान वा अनुवासन

गुदनिःस्सरणे शूले पानमम्लस्य सर्पिषा ।

प्रशस्यते निराणामथवा अप्यनुवासनम् ॥ च. चि. 19/42

चांगेरी धूत वा चब्बादी धूत पान

3) सुश्रुत - स्नेहस्वेद कर आभ्यंतर प्रवेशन तत्पश्चात गोफणा बंध

मूषक तैल - आंत्रवर्जित मूषक + महत पंचमूल -पान व अभ्यंगार्थ

भैषज्यरनावली - गव्य वसा अभ्यंग

2) शूकरदंष्ट्रक -

सदाहो रक्तपयन्तस्त्वपाकी तीव्रवेदनः ।

कण्डमाज्वरकारी च स स्याच्छूकर दंष्ट्रक ॥ भा. प्र. -क्षुद्ररोग

गुदस्थाने दाह कण्डू आरक्त वर्णी पाकहीन तीव्र वेदनायुक्त ज्वरयुक्त शोथ / भ्रंश

चिकित्सा - भंगराज हरिद्रासह लेपन, राजीवमूलकल्क (क्रमल) गो सर्पिसह पान

3) गुदपाक -

बालस्य गुदपाकाख्यो व्याधिः पित्तेन जायत । भा. प्र.

चिकित्सा - गुदपाके तु बालानां पित्तघ्नी क्रिया कार्येत् ।

रसांजनं विशेषेण नानालेपयोः हितम् ॥ भै. रु.

4) अहिपूतना -

पर्याय - पृष्ठारू, गुदकृटद, अनामक गैग, मातृका दोष

हेतु - सुश्रुतोक - 1) शकृतमूत्र विसर्जन यश्चात गुद धावन थीक तरह से न करना ।

2) स्वेदाधिक्य, स्नानादी न करना

भोज / माधव - दृष्टस्तन्य पान, मलादी अक्षालन

लक्षण - सुश्रुत - रक्तकफोद्वात् कण्डू उत्पत्ती

कण्डूयना ततः क्षिप्रं स्फोटाः स्नानश्च जायते ।

एकीभूतं व्रणै घोरं तं विद्यादहिपूतनम् ॥ सु. नि. 13/59

भोजप - कण्डू दाह रुजायुक्त पिडका

चिकित्सा - धात्री स्तन्य शोधन, पित्तकफच औषधी

धात्री को पटोल त्रिफला रसांजन सिद्ध धूतपान

Napkin rash - caused by B. proteus .

5) पश्चादुज - वर्णन - भैषज्यरनावली

हेतु - माता द्वारा विकृत / दुष्ट अन्न सेवन कर बालक को स्तन्यपान करने से

पित्त प्रकुपित होकर बालक के गुद प्रदेश मे व्याप्त हो जाता है ।

लक्षण - जलीकोदर सन्निभ व्रण, दाह, ज्वर

हरीत पीत वर्ण का मलभेद

चिकित्सा - चन्दनादी लेप

6) सन्त्रिरूध गुद -

वेगसन्धारणाद् वायुः विहतो गुदमाश्रितः ।

निरूणाधि महत्त्वोतः सूक्ष्माद्वारं करोति च ॥

मार्गस्य सौक्ष्म्यात् कृच्छ्रेण पुरीषं तस्य गच्छति ।

सन्निरूपगुदं व्याधिमेनं विद्यात् सुदुस्तरम् ॥ सु. नि. 13/57

चिकित्सा - सन्निरूपगुदे योज्या निरूपद्वयकशक्तिया । सु. चि. 20/47

प्राणवह स्त्रोतोगत व्याधी -

1) उल्बक / अंबुपूर्ण - वर्णन - अष्टांगसंग्रह

हेतु - प्रसवपश्चात् गर्भोदक वमन द्वारा बहिर्गमन न होने से या मुखस्थित इलेष्मा शोधन न होने से

संप्राप्ति - उक्त इलेष्मा रसानुग होकर हुदय स्थाने गमन व हुदय विकृती

लक्षण - हुद्रोग आक्षेपक श्वास कास छर्दि ज्वर

उल्बक सहजं व्याधीं अम्बुपूर्णं तं वदेत् ।

चिकित्सा - व्योष हरीतकी वचा हरिद्रा कल्क दुग्धासह पान

बालक को मृदू वमन, छामूत्र पान

बालक को स्नान व अभ्यंग वर्ज्य

क्षीरगन्नाद अवस्था व्याधी -

1) कुकुणक -

हेतु - काशयपोक्त -

1) माता द्वारा मधुर रसात्मक आहार, मस्य, मांस, पय, शाक, नवनीत, दधि, सुरासव, पिण्ड, तिलपिष्ठ आलकाजी, तथा मर्व काल मे अभिष्यंदी आहार सेवन,

2) भूक्त्वा भुदत्वा दिवा शेते विमङ्गा च दुरुद्धते

संषाप्ती - उस स्त्री के दोष प्रकृपीत होकर दोषमार्ग अवरुद्ध होकर स्तन्य को दुषीत कर देते हैं ।

अनुप्रवेशाद् आक्षेपाद् उष्ण मत्त्वावनादीयि । जात्वते नयनव्याधिः इलेष्मानोहितसंभवः ॥

उक्त क्षीर बालक द्वारा सेवन करने से आक्षेप तथा उष्णता के कारण इलेष्मा व रक्त के कारण नेत्ररोग उत्पत्ती

सुश्रुतोक - स्तन्य धुकोप तथा बाट पित्त लफ रक्त दुष्टी के कारण

वाग्भट - कुकुणकः शिशोरेव दन्तोत्पत्ती निमित्तः ।

योगरलाकर / माधव - दुष्ट स्तन्य से

लक्षण -

1) काशयपोक्त -

1) अभीक्षणं अस्त्रं स्न्नवते (नेत्र द्वारा निरंतर स्नाव)

2) न च क्षीवती दुर्मनः (क्षबथु नहीं आती)

3) नासिका परिमृजाति, कर्णं वाच्छति दुःखितः

4) ललाटाक्षिकुटं च नासां च परिमर्दति

5) नेत्रे कण्ठूयते अभीक्षणं पाणिना चाप्यतीव तु

6) स प्रकाशं न सहते अशु चास्य प्रवर्तते

7) वर्त्मनि श्वयथु चास्य जानीयात् कुकुणकम्

2) वाग्भटोक - स्यात्तेन गिशुरुच्छून तामाक्षि वीक्षणाक्षमः । स वर्त्म शूलपैच्छिल्य कर्णं नासाशी मर्दन

3) सुश्रुत - सुर्यप्रभां न सहते

चिकित्सा - काशयपोक्त - धात्री वमन, शोधन पश्चात् स्तन निर्दोहन (स्तन से दुष्ट स्तन्य निर्हरण)

बालक अक्षिप्रमार्जन कर दूष्ट रक्त अवसेचन , हरिदा पिपल्ली युक्त अंजनवर्ती
वाम्भट – वमन सर्वरोगेषु विशेषण कुकुणके । अ. हु. 9/31

Ophthalmia neonatum –

Is a bacterial purulent conjunctivitis occurring in the new born within the first
Three weeks of life.

Causative organism – Gonococcus is more common,
Pneumococcus, staphylococcus aureus and streptococcus haemolyticus are
rare.

कुरण्ड – वर्णन – योगरत्नाकर

दोष – पित्त

लक्षण – वृषण स्थाने शोथ , ज्वर दाह , स्पर्शासहत्व

चिकित्सा – द. वृषण शोथ होनेपर वाम कर्ण स्थाने वेधन , वाम वृषण शोथ होनेपर – द. कर्ण वेधन
पारिगर्भिक –

क्षीरप व क्षीरान्नाद दोनो अवस्थाओ मे होता है ।

हेतु – गर्भिणी माता का दुग्ध सेवन

लक्षण – कास, अनिसाद, वमथ, तन्द्रा , कार्य, अरुचि, भ्रम,

पर्याय – परिभ्रत

चिकित्सा – पारिगर्भिके रोगे तु पूज्यते वहिदीपनम् ।

फकक् रोग –

लक्षण – बाल: संवत्सरा प्रादाभ्यां यो न गच्छति । स फकक् इति निजेय ॥ काइदःप

प्रकार – 3

1) क्षीरज 2) गर्भज 3) व्याधीज

1) क्षीरज – धात्री इलैष्मिकदुग्धा तु फकक् दुग्धेति सञ्जितः ।

तन्त्रीरणे बहुव्याधीः कार्यात् फकक् त्वमाप्नुयात् ॥ का > चि. /4

धात्री के कफदूष्ट दुग्ध सेवन से बालक अनेक व्याधी पिङीत व कृश होता है उसे क्षीरज फकक कहते है

2) गर्भज फकक् – गर्भिणी मातृकः क्षिप्रं स्तन्यस्य विनिवर्तनात् ।

क्षीयते प्रियते वाऽपि स फकको गर्भपिङीतः ॥

जिस बालक की माता गर्भिणी हो उसके क्षीर का विनिवर्तन (क्षय) हो जाता है ; अतः बालक को स्तन्य अभावसे बालक क्षीण हो जाता है वा मृत हो जाता है ।

3) व्याधीसम्बवज फकक – निज वा आगंतु व्याधी से उत्पन्न

लक्षण – अनाथः विलश्यते बालः क्षीणमांसबलद्युतिः ।

संशुष्क स्फिचबाहुः महा उदर शिरेमुखः । पीताक्षो हृषितांगश्च दृश्यमान अस्थीपंजरः ॥

प्रम्लानाधरकायश्च नित्यमूत्रपुरीषकृत् । निश्चेष्टाधरकायश्च वा पाणिजानुगमोऽपि वा ॥

दौर्बल्यान्मन्दशेष्टश्च मन्दत्वात् परिभूतकः । माक्षिकाकृमीकीटानां गम्यश्चासन्नमृत्युरुक् ॥

विशीर्णहुष्टरोमा च स्तब्धरोमा महानखः । दुर्गम्ये मलिनः क्रोधी फकक श्वसिति ताम्यति ॥

अतिविट मूत्रदूषिकाशिणहुणकमलोद्ववः । इत्येतैः कारणैर्विद्यात् व्याधीजां फककंतां शिशोः ॥ का. चि

1) अनाथ बालक का मांस तेज बल क्षीण हो जाता है

2) स्फिक बाहु शुष्कता, उदर शिर मुख बडे हो जाते है, पीत अक्षी, अंग हर्षयुक्त, शरीर अस्थीपंजरयुक्त

- 3) अधरकाय म्लान, पुरीष व मूत्र सदा निकलता है, अधरकाय निश्चेष्ट होने से हस्त व जानु से चलता है
- 4) दुर्बलता के कारण चेष्टा मंदता, उससे माक्षिका कीट कमी आक्रान्त कर शीघ्रमत्यु देनेवाले रोग उत्पन्न
- 5) उसके रोम नख विशीर्ण स्वव्य व हुष्ट होते हैं, नख बड़े होते हैं, दूगन्ध मलिन होता है, श्वास लगता है
- 6) मल मूत्र की अधिकता होती है, दूषित मिंग्याण मल (नासिका मल) एवं इतर मल आदि लक्षण होने हैं

चिकित्सा –

कफाधिक्य होने पर गोमूत्र + क्षीरपान

वाताधिक्य होनेपर बस्ती, स्नेहन, स्वेदन

स्नेहनार्थ – कल्याणक घृत, घटपल घृत, अमृत घृत

सप्तरात्र पश्चात त्रिवृत क्षीर से शोधन

राजनैल प्रयोग – वंध्यत्व, पंगृत्व नाशन भी होता है।

त्रिचक्र फक्कर रथ प्रयोग

Rickets –

Incidence is more in bone growing age i.e. 6 months to 2 years

Poor socio economic status having vitamin D deficiency.

Clinical features –

Restlessness, irritability, sweating.

Pigeon chest, Kyphosis of lumber and thoracic spine
'pot belly' abdomen.

PEM and tetanus neonatrum, polio myelitis, epilepsy, measles, chicken pox)

बालधर्ह –

हेतु – हिसा रति अचीनाकाश्चा यह प्रहणकारणम् । अ.हु. उ. 3/32

भंग्या – 1) चरक – गहोन्माद वह एक एकार

2) रुश्त – 9

1) स्कन्द 2) स्कन्दापस्मार 3) पूतना 4) अन्धपूतना 5) शीतपूतना

6) शकुनि 7) रेवती 8) नैगमेय 9) मुखमंडिका

3) वार्षट – 12

पुरुष शरीरधारी – 5

1) स्कंद

2) स्कन्दापस्मार / विशाख

3) मेष / नैगमेष

4) श्वप्रह

5) पितृग्रह

स्त्री शरीरधारी – 7

1) शकुनि

2) पूतना

3) शीतपूतना

4) अन्धपूतना

5) मुखमंडिका

6) रेवती

7) शुष्करेवती

वार्षटानुसार प्रमुख ग्रह – रक्तं ग्रह

काश्यपानुसार प्रमुख ग्रह – रेवती ग्रह – नाम – 20

1) वारूणी 2) माता 3) रेवती 4) शीतवती 5) ब्राह्मणी 6) कण्डु 7) कुमारी 8) पूतना

9) बहुपुत्रिका 10) विरुद्धिका 11) शुष्का 12) रोदनी 13) षष्ठी 14) भूतमाता 15) यमिका
16) लोकमातामहि 17) धरणी 18) शारण्या 19) मुखमंडिका 20) भूतकिर्ति

रावणकृत बालतंत्र - 12

1) नन्द 2) सुनन्दा 3) पूतना 4) मुखमंडिका 5) कटपूतना 6) शकुनिका
7) शुष्करेवती 8) आर्यका 9) स्वस्तिमातृका 10) नित्रप्रतामातृका 11) पिलीपिच्छिका 12) कामुकामातृका
यह ग्रह प्रथम दिन, प्रथम मास, प्रथम वर्ष, द्वितीय दिन, द्वितीय मास, द्वितीय वर्ष इस तरह 12 वर्षतक ग्रासते हैं
हारीतोक ग्रह - 8

1) लोहिता 2) शकुनि 3) रेवती 4) शिवाग्रह 5) वायसी 6) उर्ध्वकेशी 7) कुमारी 8) सेना
यह ग्रह प्रथम ते आठ दिन तक ग्रासते हैं।

योगरलाकर - 9

1) स्कन्द 2) स्कन्दापस्मार 3) शकुनि 4) रेवती 5) पूतना 6) गंधपूतना 7) शीतपूतना
8) मुखमंडिका 9) नागमेय

ग्रहबाधा पूर्वरूप -

तेषां ग्रहिष्यतां रूपं प्रततं रोदनं ज्वरः । अ. स. उ. 3/12

ग्रहबाधा सामान्य लक्षण -

जम्मा, भू आक्षेप, दीनता, फेनस्त्राव, उर्ध्वदष्टी, दंतदंश, पजागर, रोदन, वजन, स्तन्यविद्वेश, स्वरवैकृतम्
नखैः अकस्मात् परितः स्व धात्र्य अंगविलेखनम्, नष्टसंज्ञा, शूनांग.

ग्रहबाधा प्राकारानुसार लक्षण -

1) स्कंदग्रह -

शुश्रूत - शूनाक्षः क्षतज-सागन्धिकः स्तनद्विद् वक्रास्यो हत चलित एकपद्मनेत्र ।
उद्धिनः सुलुलितचक्षुरल्परोदी स्कन्दार्ती भवति च गाढ मुष्टि वर्चाः ॥ सु. ३. 27/8
संग्रह - तत्रैकनयनस्त्रावी विरोधिष्ठिपते मुहुः । हतैकपक्षः स्नब्बांगः स्वेदोनतकन्धरः ॥
दन्तखादि स्तनद्वेषी व्रज्यत्रीदिती विस्तरम् । तक्रतक्षीवमनलालां भृशमुर्ध्वं निरीऽन्ते ॥
वासान्त्रगन्धिः उद्धिनो बुद्धमुष्टिशक्तृ शिशुः । चलित एक ओक्षि गण्ड भूः सरक उभयलोचनः ॥
स्कन्दार्तस्तेन वैकल्यं मरणं वा भवेद् ध्रुवम् ।

2) स्कन्दापस्मार -

सुश्रूत - निःसंज्ञो भवति पुनर्भवेन् सर्संजः संरब्धः करचरणैः च नृत्य इव ।

विडपूत्रे सृजति विनदः जृम्भमाणः फेनश्च प्रसृजति तत्सखाभिपन्न ॥

संग्रह - संज्ञानाशो मुहुः केशलुंचनं कन्धगानतिः । विनम्य जृम्भमाणस्य श्वाकृन्मूत्रपर्वतनम् ॥

फेनाद् वमनम् उर्ध्वेक्षा हस्ताधूपादनर्तनम् । स्तन स्वजिक्हा सन्दंश संरम्भज्ञरजागराः ॥

पूयशोणितगंथश्च स्कन्दापस्मार लक्षणम् ॥

3) श्वग्रह - वर्णन केवल वाघट द्वारा

कम्पो हुषितरोमत्वं स्वेदश्वस्तुः निमिलनम् । बहिगयामनं जिहादंशोऽन्तः कण्ठकूजनम् ॥
धावनं विटसगन्धत्वं क्रोशनं च श्वच्छुनि ॥

4) पितृग्रह - वर्णन केवल वाघट

रोमहर्षो मुहुस्त्रासः सहसा रोदनं ज्वरः । कासातिसारवमथु जृम्भातृद् शवगन्धता ॥
अंगेषु आक्षेपविक्षेप शोषस्तंभ विवर्णता । मुष्टिबन्धः श्रुतिः च अक्ष्योः बालस्य स्युः पितृग्रहे ॥

5) पूतनाग्रह -

- 1) सुश्रुत - स्त्रस्तांगः स्वपिति सुखं दिवा न रात्रौ विडभिन्नं सृजति च काकतुल्यगन्धिः ।
चर्यातो हृषिततनुरुहः कुमारस्तथ्यालुः भवति च पूतना गृहीतः ॥
- 2) संग्रह/ हृदय - पूतनायां विमिः कपस्तन्दा रात्रौ प्रजागरः हिधा आध्मानं शकुद् भेदः पिपासा मूत्रनिग्रहः ॥
स्त्रस्तन्हुष्टांगरोमत्वं काकवत् पूतिगन्धिता ॥

काश्यपोक्त अरिष्ट लक्षण -

नक्षत्र ग्रहचन्द्रार्क तारकाग्निकनिनिकाः । दृष्ट्वा प्रपर्तिताः स्वपने पूतनाभ्यो भयं भवेत् ॥
स्वप्न मे नक्षत्र ग्रह चन्द्र सूर्य तारका तथा नेत्र कनिनिका नीचे गिरी हुड दिखेते तो उसे पूतना ग्रह का भय समझे

6) शीतपूतनाग्रह -

- 1) सुश्रुत - उद्दिग्नो भृशमति वेपते प्ररुदयात् संलीनः स्वपिति च यस्य च आन्तकूजः ।
विस्त्रांगो भृशमतिसार्यते च यस्तं जारीयाद् भिषगीह शीतपूतनार्तम् ॥
- 2) हृदय - शीतपूतनाया कम्भो रोदनं तिर्यग् इक्षणम् । तष्णा आन्तकूजो अतिसारो वसावद् विस्त्रगंधता ॥
पार्श्वस्य एकस्य शीतत्वं उष्णत्वं उष्णत्वं अपरस्य च ।

7) अन्धपूतना -

- 1) सुश्रुत - यो द्रेष्टि स्तनम् अतिसार कास हिकका उर्दिभिः ज्वरसहितभिर्द्युमानः ।
दुर्बर्णा सतनमधः जायो ध्मलगन्धिस्तनं ब्रूयमिष्वन्न इहान्ध पञ्चनार्तम् ॥
- 2) संग्रह/ हृदय - अन्धपूतनया उर्दिं ज्वरः कासोऽन्धनिद्रना । चर्चसो भेद वैवर्ण्यदौर्गन्ध्यान्यंगशोषणम् ॥
दुष्टे साटनिकाहु पोथकी जन्मशूनताः । हिमोद्देगस्तन द्वेष्वैवर्ण्यस्तर तीक्ष्णता ॥
वैषथ्यमित्यगन्धब्यमथवा साम्लग्नन्धना ।

7) रेवतीग्रह -

- 1) सुश्रुत - रक्तास्यो हरितमलो अतिपाष्टहुदेहः इवावो ता ज्वरमुखपाकलेदनार्तः ।
रेवत्या व्यथिततनुश्च कर्णनासं सृदनाति धूवप्पिणीदितः कुर्यासः ॥
- 2) संग्रह/हृदय - रेवत्या इयवनीलत्वं कर्णनासाधिमर्दनम् कास हिध्या अक्षिविक्षेप वक्रवक्रवग्रकता ॥
बस्तगन्धो ज्वरः शोष पुरीषं हपितं द्रवम् ॥
- 3) काश्यप - ज्वरातिसारो वैसर्पः पिडनेन्द्रियदूषणम् । आनाह शूलमरुचि न श्वासकासतृट् ॥
निदानशो अतिनिद्रा च मुखपाको वणोद्वयः । एकांगकः पक्षवधः क्षीरालसकविसूचिका ॥
हिकका मूर्छा मतोमोहो रोदनं मनव्यनेत्रना । म्ववर्णामिभेदश्च पाण्डुत्वं कामला अर्गते ॥
क्षीरदूषण जाशो च शिरोरूपधृतपदवः । नासाद्विकर्णरोगाश्च त्रासकुर्वनरोदनम् ॥
ये चान्ये चैव विविधा ये रोगानानुकिर्तिः । रेवतीरोषसंभूतं भूयिष्ठं तं उदाहुतः ॥

8) शुष्करेवती -

- 1) अष्टांगहृदय -
जायते शुष्कम रेवत्यां क्रमात्सवींगसंधयः । भुण्जानो अन्वं बहुविधं यो बालः परिहीयते ॥
तृष्णागृहीतः क्षामाक्षो हन्ति तं शुष्कतेवति ॥

9) मुखमण्डिका -

- 1) सुश्रुत - म्लानांग सुखचिर पाणिपादवक्त्रो बहाशी कलुषसिरावृतोदरो यः ।
सोद्वेगो भवति च मूत्र तुल्यगन्धिः स ज्ञेयः शिशुरिह वक्रमण्डिकाऽर्तः ॥
- 2) संग्रह/ हृदय - मुखमण्डितया पाणिपादास्यरमणीयता । सिराभिरसिताभारचितोदरता ज्वरः ॥

अरोचको अमाग्लपनं गोमूत्रसमग्न्धता ।

10) शकुनि ग्रह –

1) सुश्रुत –

स्तस्तांगो भयचकितो विहंगंधि संस्त्राविवरण्परिपीडितः समन्तात् ।

स्फोटैश्च प्रचिततनुः सदाहपैविज्ञेयो भवति शिशुः क्षतः शकुन्या ॥

2) अष्टांगहृदय –

स्तस्तांगत्वमतीसारे जिव्हातालुगलेव्रणा । स्फोटा: सदाहरूक्पाकाः सन्धिषुस्युः पुनः पुनः ।

निश्यन्ति प्रविलीयन्ते पाको वक्त्रं गुदेऽपि वा । भयं शकुनिग्न्धत्वं ज्वरश्च शकुनिग्रहे ॥

ग्रह व गन्ध –

ग्रह	विशिष्ट गंध	सुश्रुत	वाग्भट/सं
1) स्कन्द ग्रह	क्षतज सगन्धिक वसा व रक्तगन्ध	+	+
2) स्कन्दापस्मार	पूयशोणितगन्धित्व		+
3) नैगमेष ग्रह	वसा गन्ध वस्त आमगन्धता	+	+
4) श्वग्रह	विटसगन्धत्व		+
5) पितृग्रह	श्वगन्धता		+
6) शकुनि ग्रह	विहंग गंधि शकुनि गन्धत्व	+	+
7) पूतना ग्रह	काकतुल्य काकवत् पूतिगन्धता	+	+
8) शीतपूतना	वसावत् मन्धता		+
9) अन्यपूतना	अम्लगन्धि मत्थगन्धि	+	+
10) मुखमण्डिका	मूत्रतुल्यगन्धि गोमूत्रगन्धि	+	+
11) रेवतीग्रह	वस्तगन्धि		+
12) शुष्क रेवती	मृदूगन्धत्व		+

बालग्रह चिकित्सा – दैवव्यपाश्रय , बलिकर्म

योगरलाकर – आगंतुज उन्नाद व वातरोगोक्त पथ्यापथ्य

काश्यपोक्त चिकित्सा –

- 1) वमन साध्य ग्रह – स्कन्द, स्कन्दापस्मार, स्कन्दपिक, नैगमेष
- 2) वमन निषेध – रेवती, पौण्डरीक, शकुनि, पूतना, मुखमण्डिका
- 3) विरेचन निषेध रेवती

अष्टांगसंग्रह – अष्टमंगल घृत

बालक के इतर व्याधी –

निरुद्धप्रकश, परिवर्तिका, वृषणकच्छू, व्यंग निलीका, मूखपूषीका – सुश्रुत

1) अरिकीलक - (काश्यपोक्त)

हेतु - पक्व उष्ट्रीका चूर्ण बालक द्वारा अंग पर मर्दन, न्रपुस एर्वास्त्रबीज सेवन दिवास्त्राप

संप्राप्ति - प्रकृपीत वात मेद मे प्रवेशीत होकर त्वचा मेद से युक्त होकर अरिकीलक उत्पत्ती

स्वरूप - कर्कन्धा, गोम्नारब्धा पिङ्का

चिकित्सा - स्नेह व गुड द्वारा दहन, छेदन कर क्षार प्रतिसारण

अथवा क्षारसूत्र बंधन कर व्रण कर्म करे

2) महापदम् - (काश्यप)

पर्याय - शिशुविसर्प - कुमार व सुकुमारो मे विशेषतः होता है।

विसर्पस्तु शिशोः प्राणनाशनो वस्तिशीर्षजः ।

पद्मवर्णो महापद्मनामा दोषन्त्रयोद्धवः ॥

शंखाभ्यां हुटयम् याति हुटयाद् वा गुदं ब्रजेत् ॥

दोषाधिक्य - निदोष दूष्य - रक्त प्रकार - 7 (दोषानुसार)

चिकित्सा - उध्वं व अधो शोधन ततपश्चात् लेप अभ्यंग,

3) चर्मदल - (काश्यप)

क्षीण्य एवं क्षोरक्षाद अवस्था मे होता है।

दोषाधिक्य - वात

लक्षण - चर्म अवदरण

प्रकार - 4 वात गित्त कफ्त सान्तिणात्त

Pediatrics

Age wise classification –

- 1) New born – First seven days after birth
- 2) Infant – 1st year of life.
- 3) Neonates – First twenty eight days after birth
 - a) Early neonates – first seven days after birth.
 - b) Late neonates – seven to twenty eight days after birth.
- 4) Live born – It is product of conception that shows an evidence of life like breathing, Heart rate, pulsation of umbilical cord,
- 5) Still birth – it is product of conception that fail to show any evidence of life as a Gestational age is 20 weeks or more or wt exceeds 500gms.
- 6) Gestational age – Gestational age is calculated from the first day of the last normal Menstrual period till the date of birth.
 - a) Pre term – is a neonate before 37 weeks or less than 259 days
 - b) Full term – is a neonate born in gestational age between 37 to 41 weeks.
 - c) Post term – is a neonate born in gestational age of 42 weeks or more.
- 7) Low birth weight – less than 2.5 kg birth weight irrespective of gestational age
- 8) Very low birth weight – less than 1.5 kg weight irrespective of gestational age
Prenatal period – (0 to till birth)
 - a) Ovum – 0 to 14 days
 - b) Embryo – 14 days to 9 weeks
 - c) Foetus – 9 weeks till birth.

Perinatal period – extends from 22nd week of gestation to 7th day after birth.

Post natal period –

- 1) Toddler = 1-3 years
- 2) Pre school child = 3-6 years
- 3) School age = 6 – 10 years

Adolescence – usually between 10 -20 years.

- 1) Early prepubescent - Female – 10-12 years
Male – 12-14 years
- 2) Middle pubescent – Female – 12-14 years
Male – 14-16 years
- 3) Late or post pubescent – Female – 14-18 years
Male – 16-20 years

The circumference of head and chest are almost equal at the age of one year.

Crown rump length is always less than head circumference during 1st year of life.

The Denver Development screening test (DDST) to assess the child's development

Length of child		Weight of child	
At birth	50 cm	At birth	2.8 kg
1 Year	75 cm	5 months	Double wt.
2 Year	85 cm	1 Year	3 times
3 Year	95 cm	2 Year	4 times
4 Year	100 cm	3 Year	5 times
		4 Year	6 times

Reflexes –

- 1) Moro reflex - appear at 3 month, disappear after 12 weeks.
- 2) Staping reflex – 6 weeks.
- 3) Placing reflex – 6 weeks.
- 4) Palmar grasp – 6 month
- 5) Sucking and Rooting reflex = 5 – 7 months.
- 6) Planter grasp – 10 months.

Apgar score –

Introduced by American anaesthetist. It is quantitative method of assessing Infants respiration, circulation and neurological status.

Score	0	1	2
Respiratory effort	None	Slow, irregular	Good crying
Heart rate	Absent	< 100	> 100
Colour of body	Blue or pale	Body pink Extremities blue	Pink
Muscle tone	Flaccid	Some flexion	Active
Reflex	No response	Grimace	Cough or sneezes

Normal Apgar score is 8 to 10

Moderately asphyxia = 5-7

Severe asphyxia = < 4

The upper segment to lower segment ratio is being 1.7 and 1.9 to 1.

Dyslexia – used to describe loss of reading skills

In case of new born –

- 1) Heart rate – 120 – 140 /min
- 2) Respiratory rate – 35 – 40 / min
- 3) Blood pressure – 80/40 /min
- 4) First stool is meconium
- 5) First breast secretion from mother is colostrum.

Umbilical cord – length 50 cm.

Having 2 arteries and 2 veins. Among two veins the right one

Disappears by the 4th month.

Head circumference –

- 1) At birth – Average 13.75 inches
- 2) At 6 months – 17 inches
- 3) At one year – 18 inches
- 4) At two years – 19 inches

Chest circumference is 3 cm less than head circumference at birth.

The circumference of head and chest are almost equal at the age of 1 year.

If the head circumference exceeds 1 cm in 2 weeks during first three months

'Hydrocephalus' must be suspected.

Breast milk –

High carbohydrate but low protein. Rich in polyunsaturated fatty acid.

Colostrum – milk secreted during first 3 days. Contain more antibodies and vit. ADEK

Transitional milk – milk secreted following two weeks. Less immunoglobulin and

Protein content. More fat and sugar.

Immunization –

- 1) Immunization – is the process of inducing immunity artificially by either vaccination
Or administration of Antibody.
- 2) Immunobiologics – This term is used for antigen substances such as vaccines,
Toxoids, immunoglobulins and antitoxins. These are used to
Produce active or passive immunization.
- 3) Vaccine – A suspension of infectious agent given for the purpose of establishing
Resistance to an infectious disease.
- 4) Toxoid – A modified bacterial toxin, that has been made nontoxic, but retain the
Capacity to stimulate the formation of antitoxin.
- 5) Immunoglobulin antitoxin – these are antibody containing solution.
These are antibody derived from serum of animal after stimulation
With specific antigen used for passive immunization.

Types of vaccines – PSM notes.

No other vaccine should be administered within 4 weeks interval after administration
Of measles / MMR vaccine.

Pertusis – not recommended after 5 years of age.

DPT, TT and Typhoid vaccines should not be frozen.

Main vaccines –

- 1) Sample vaccine – for Rabies.
- 2) Salk vaccine – killed polio vaccine
- 3) Sabine vaccine – Live oral polio vaccine (OPV)
- 4) Schwartz vaccine – for measles.

Main immunoglobulins –

- 1) All antibodies are immunoglobulins but all immunoglobulins are not antibodies
- 2) Placenta is the source of human gamma globulin.
- 3) IgG is the smallest and warm Ig. And can cross the placenta.
- 4) IgM is the largest, cold and earliest immunoglobulin to be synthesized
- 5) Commonest immunoglobulin deficiency = IgA
- 6) Ig present in milk = IgG and Ig A

DOTS – directly observed treatment short course.

Since India has implemented 'Revised National Tuberculosis control
Programme' (RNTCP) using 'DOTS' strategy.

National Vaccine	immunization schedule
For pregnant women	
TT-1	Early in pregnancy
TT-2	4 weeks after TT-1
TT-booster	If received 2 TT doses in a pregnancy within last 3 years
For infants	
BCG	At birth or as early as possible till one year of age
Hepatitis	At birth or as early as possible within 24 hours
OPV-0	At birth or as early as possible within 15 days
OPV-1, 2 & 3	At 6 weeks, 10 weeks & 14 weeks
DPT 1, 2 & 3	At 6 weeks, 10 weeks & 14 weeks
Hep B 1, 2 & 3	At 6 weeks, 10 weeks & 14 weeks
Measles	9 completed months - 12 months
Vitamin - A (1 st dose)	At 9 months with measles
For children	
DPT booster	16-24 month
Measles 2 nd dose	16-24 month
OPV booster	16-24 month
Japanese encephalitis	16-24 month
Vitamin - A (2 nd to 9 th dose)	16 months then one dose every 6 months coverage of 5 years
DPT booster	5-6 years
TT	10 years & 16 years

Neonatal jaundice –

A bilirubin level of more than 5mg/dl manifests as clinical jaundice or icterus in Neonates. Severity of jaundice is assessed by Krammer's rule.

Physiological jaundice –

Due to elevation of unconjugated bilirubin concentration during the 1st week.

Icterus appears after 36 hrs of birth and disappears within 14 days to 1 month.

Treatment – no specific treatment required.

Icterus disappears as the liver matures.

Pathological jaundice –

Clinical jaundice appearing in first 24 hours.

Causes –

- 1) Hemolytic disorders
- 2) Rh incompatibility
- 3) ABO incompatibility
- 4) Sepsis
- 5) G – 6 –PD deficiency.
- 6) Intrauterine infections – Toxoplasmosis, Rubella, Herpes zoster, Syphilis
TORCH infection.

Rh incompatibility – Rh – ve mother conceives an Rh + ve baby through an Rh + ve father.

ABO incompatibility - The mother having the blood group 'o' and baby having Blood group 'A' or 'B'

Increased in level of total bilirubin by more than 0.5 mg/dl /hr or 5mg/dl/24 hrs.

Total bilirubin > 15mg/dl

Direct bilirubin > 2mg/dl

Treatment of pathological jaundice –

Phototherapy and B.T.

Side effects of phototherapy –

a) immediate – loose motions, fever, Hypocalcemia, Bronz baby syndrome, congenital erythropoietic porphyria.

b) Delayed – Retinal damage, skin malignancy.

Congenital hemolytic jaundice / Criggler Naijar Syndrome –

Type -1 = autosomal recessive disorder having complete absence of UDPGT (Uridine Disphosphate Glucuronyl Transferase)

The total bilirubin level is usually more than 30mg/dl.

Kernicterus is seen in almost 50% cases.

Type – 2 is autosomal dominant and is more common than type 1.

The TSB is usually 20 mg / dl

Kernicterus is rarely seen.

Gilbert syndrome – is benign disorder having decreased activity of UDPGT.

Dubin Johnson syndrome – it is considered to be autosomal recessive inherited Defect in hepatocytes secretion of bilirubin glucuronide.

Hemophilia -

1) **Hemophilia A** – (classical hemophilia)

Due to deficiency of AHC anti hemophilic factor.

2) **Hemophilia B** – (Christmas disease)

Due to deficiency of factor

3) **Hemophilia C** – (PTA deficiency.)

Due to deficiency of factor

Von Willebrand disease – (Pseudo hemophilia)

This is an autosomal dominant disorder and characterized by disproportionate bleeding following minor trauma.

Rheumatic fever - characters – arthritis, carditis, chorea.

For diagnosis of Acute Rheumatic fever –

1) Increased anti streptolysin 'o' titre.

2) Positive throat culture.

3) Recent scarlet fever.

PEM (protein energy malnutrition) –

The assessment of nutritional status is done according to weight for height,

Height for age and presence of edema.

1) WHO recommends the use of 'Z' score or standard deviation score (SDs)

2) Gomez's international classification -

Normal	Weight more than 90% of expected for that age.
I grade	76 – 90 %
II grade	61 – 75 %
III grade	< 60%

Marasmus –

Gross wasting of muscles and subcutaneous tissue, resulting in emaciation
Mark shunting or no oedema.

Kwashiorkor – 3 essential features

- 1) Markedly retarded growth
- 2) Psychomotor changes
- 3) edema on dependent parts.
- 4) Flag sign is present – hairs become discoloured.

Marasmus	Kwashiorkor
Having gross deficiency of energy with Inadequacy of protein	Gross deficiency of protein with Inadequacy of energy.
Infancy 6 – 12 month	1,2,3 years
Muscle wasting is severe	Muscle is not severe
No oedema	Oedema on dependent parts
No liver enlargement	Liver enlargement
Hairs dry	Hypo pigmented easily pluckable hairs
Skin dry	Dermatosis pigmentosa
Monkey face	Moon face , flag sign
Less prone to infection	More prone to infection

Neonatal tetanus – occurs within 5 to 15 days. Usually around 8th day so called as 8th day disease.

Thalassemia – Thalassemias are the commonest monogenic diseases due to globin Gene defect. It is microcytic and hemolytic anemia

Types – 2

- 1) Beta thalassemia – most common
- 2) alpha thalassemia – found in south east asia.

Sickle cell anemia – it occurs as a result and deletion of B globin gene on chromosome 11.

Acquired Hydrocephalus –

'Sun set eye sign – sclera above the cornea is visible
Crack pot resonance on skull percussion

PICA – (Geophagia) –

Is defined as habit disorder to eating substance other than food.

Epilepsy –

Pathology of epilepsy is divided in two groups –

- 1) Idiopathic – Grand mal and Petit mal
- 2) Secondary

1) The idiopathic epilepsy is characterized by temporal lobe seizure
2) Organic or secondary is less common and may occur with the cerebral Palsy, mental retardation, and EEG abnormality.

Hepatitis –

Also known as serum hepatitis. Is endemic.

Incubation period – 6 weeks to 6 months.

Virus – Dane particle. (DNA) virus.

Vaccination – 1 ml = 0 schedule = 0,1,6

1 ml = 1 month

1 ml = 6 months after 1st dose.

Children below 11 years = $\frac{1}{2}$ dose.

Birth asphyxia – characterized by

- 1) Hypoxia
- 2) Hypercapnia
- 3) Hypo perfusion
- 4) acidosis.

Gray baby syndrome – because of high doses of chloramphenicol.

Bronz baby syndrome – immediate side effect of phototherapy.

Ophthalmia neonatorum –

Is form of conjunctivitis occurring in infants younger than 4 weeks.

Etiology – Chlamydia Trachomatis

Neisseria gonorrhoea

Chemical – silver nitrate

Staphylococcus aureus

Treatment – 10% sulfacetamide eye drops.

Prevention – drops of 0.5 % erythromycin or 1% silver nitrate.

Polio myelitis –

RNA virus.

Agents - three serotypes – 1,2 and 3.

I.P. - 7 to 14 days.

Clinical features –

1) Abortive polio – occurs in 4-8 % of infection.

2) Non paralytic – aseptic meningitis. occurs in 1-2 % of infections. Tripod sign.

3) Paralytic polio – rapid onset of flaccid paralysis.

Vaccination –

1) Inactivated (Salk) polio vaccine (IPV)

Contains all three types of polio viruses inactivated by formalin.

2) Oral (Sabin) polio vaccine (OPV)

Contains live attenuated viruses (1,2,3) grown in primary monkey kidney.

Small pox – variola virus. Totally eradicated in 1980.

Chicken pox – Varicella zoster virus.

Also called as human herpes virus – 3

Occurs below children below 10years.

Mumps –

Agent – Myxovirus parotiditis.

Incubation period – 2 to 3 days (18 days)

Vaccination – 0.5 ml I.M.

Complications – orchitis, ovaritis, pancreatitis, myocarditis.

Rubella - also called as German measles

Agent – RNA virus.

I.P. – 2 to 3 weeks.

Measles – also called as Rubiola means 'Red spots'.

Agent – RNA myxovirus.

Diagnosis – Koplick's spots and typical rash.

Vaccination – 0.5 ml S.C. at 9 month.

Complication of measles – diarrhea, pneumonia, otitis media, febrile convulsion.
Sub acute sclerosing pan encephalitis (SSPE) rare.

Diphtheria –

Agent – *C. diphtheriae*

- 3 types –
1) Anterior nasal
2) Facial
3) Laryngeal

Mainly affect the children below – 5 years.

Types of diphtheria bacilli – gravis, mitis, intermedius.

Diagnosis – Schich test

Transmission – through infected cutaneous wound.

Pertussis – also called as 'Whooping cough'

In Chinese called as 'Hundred day cough'

DPT contains –

- 1) Diphtheria toxoid
- 2) Tetanus toxoid
- 3) B pertussis

Typhoid –

Continuous fever with stepladder rise.

2nd week – rose spots on upper abdomen, back, chest.

3rd week – relative bradycardia with dicotic pulse. Soft splenomegaly.

Rising Widal titre.

IP – 1 to 14 days.

Widal is negative in first week and positive second or third week.

Vaccines – 3

- 1) Monovalent – contains 's' typhi.
- 2) Bivalent – contains 's' typhi and 's' paratyphi
- 3) TAB – 's' typhi, 's' paratyphi, 's' paratyphi E

Route and dose – 0.5 cc s.c.

Influenza – is acute respiratory tract infection cause by influenza virus.

3 types – A, B, C

IP – 18-72 hours.

Miscellaneous –

- 1) The level of Vitamin K is minimal in new born
- 2) Löffler's syndrome – ascariasis pneumonia.
- 3) Commonest emergency in new born – Resuscitation.
- 4) Commonest malignancy in children – Leukemia.
- 5) Posterior fontanelle closes at 4 to 6 months and anterior fontanelle at 9-18 m.
- 6) Neural tube defect occurs due to deficiency of – folic acid
- 7) Babinski sign is positive in a normal infant up to age 1 ½ years.
- 8) Baby doubles his birth weight at age 5 months.
- 9) BCG is the only widely used live bacterial vaccine
- 10) Rabies – also known as 'Hydrophobia' – caused by Lyssavirus.

स्त्री रोग – प्रसुतीतंत्र

स्त्री शरीर रचना –

स्त्री स्त्रोणी –

पुरुषोः प्रमाणविस्तीर्णा स्त्रीश्रोणीः; अष्टादशांगुलविस्तारमुरः; ततप्रमाणा पुरुषस्य कटी ॥ मु.सु. 35/12

पुरुष उर प्रमाण = स्त्री श्रोणी

स्त्री उर विस्तार = 18 अंगुल = पुरुष कटी

स्त्री – श्रोणी अस्थीया –

1) चरक – 3 श्रोणीफलक – 2 भगास्थो – 1

2) सुश्रुत – 5 गुदास्थी – 1 भगास्थी – 1 नितम्बास्थी – 2 त्रिकास्थी – 1

3) वाग्मट – 4 भगास्थी – 1 त्रिकास्थी – 1 नितम्बास्थी – 2

स्त्री – श्रोणी – संधी

सुश्रुतानुसार कटीकपाल में 3 संधी (मु.शा. 5/26)

गुद भग व नितम्ब = सामुदग

कटीकपाल = तुन्नसेवनी

भगविस्तार = द्वादश अंगुली (12 अंगुली)

स्परानपत्र / भगशिशिनका – वर्णन – डल्हण

स्त्री में अधिक स्त्रोतस – 3 स्तन में 2 आर्तववह – 1

योनी आकृती –

शंखनभ्याकृतियानिरन्त्यावर्ता सा प्रकीर्तिः । तस्यास्तुतीये त्वावर्ते गर्भशब्दा प्रतिष्ठिता ॥ सु.शा. 5/43

योनी – शंख नाभ्याकृती तृतीय आवर्त मै गर्भशब्दा स्थित होती है ।

योनी की नाड़ीया – 3

वर्णन – भावप्रकाशद्वारा

स्थान – मनोभवागारमुख

1) समीरण – मदनानपत्र में होती है – इसके मुख पर शुक्र पतन होनेपर – निष्फल

2) चान्द्रमसी – कन्दर्पर्गेह म होती है – इसके मुख पर शुक्र पतन होने पर – पुत्री प्रसव

3) गौरी – उपस्थ गर्भ में होती है – इसके मुख पर शुक्र पतन होने पर – पुत्र प्रसव

गर्भाशय –

स्थान –

1) सुश्रुत – स्त्रीणां गर्भाशयो अष्टमः इति । सु. शा. 5/8

– पित्तपव्वाशयोर्मध्ये गर्भशब्दा यत्र गर्भस्तिष्ठति ॥ सु.शा. 5/39

– यथा रोहितमत्यस्य मुखं भवति रूपतः । तत्स्थंस्थानां तथाख्यां गर्भशब्दा विदुर्वृथा: ॥

– स्त्रीणां तु बस्तीपार्श्वगतो गर्भाशयः सन्निकृष्टः । सु. चि. 7/33

2) अष्टांगसंग्रह –

– डत्रीणां पित्तपव्वाशयोः मध्ये गर्भाशयो अष्टमः । अ.स> शा. 5/46

3) अष्टांगहृदय –

– गर्भाशयो अष्टमः स्त्रीणां पित्तपव्वाशयो अन्तरे । अ.ह. शा. 3/11

4) काश्यप -

- तेषामधस्ताद्विपुलं स्त्रोतः कुण्डलसंस्थितम् । जरायुणां परिवीतं स गर्भशय उच्यते ॥
गर्भशय स्थान - योनी के नवीय आवर्त मे

पित्तपक्वाशय मध्यमे

बरनीपार्श्वगत

जरायु से आच्छादीत होता है

रूप - रेहित मत्स्य के रूप का

5) भावप्रकाश - धरा गर्भशय; प्रोक्तः पित्तपक्वाशयान्तरे । स्तनौ प्रवृद्धौ तावेव बुधैः स्तन्याशयौ मतौ ॥

6) शारंगधर - धरा गर्भशय; प्रोक्तः स्तनौ स्तन्याशयौ मतौ ।

आर्तववह स्त्रोतस -

मूलस्थान - गर्भशय व आर्तववाही धमन्या

विध्व लक्षण - वस्त्रात्व, मैथुनासहत्व, आर्तवनाश

धमनी -

1) उद्धंग धमनी - स्तनसंश्रीत व स्तन्य वहनार्थ

2) अथोगामी - अर्तव वहन, पुरुषो मे शुक्रवहन

मर्न - 4 स्तनरोकीत - 2 स्तनमूल - 2

सुश्रुत द्वारा अडमरी चिकित्सा मे शास्त्रकर्म समये अष्ट मर्मों का यारिहरण करने का निर्देश दिया है ।

मूत्रवह, शुक्रवह, मुष्ठकस्त्रोत, मूद्रप्राप्तेक, सेवनी योनी, गुरु बस्ती

पेशी - स्त्रीयो मे 20 अधिक

1) उभय स्तनो मे प्रत्येकी - 5 = 10

2) अपत्त्व पथ मे = 4 अप्त्यन्तरे - 2 व लाहूमुखाश्रीत - 2

3) गर्भछिद्र संश्रीत - 3

4) शुक्रातंव प्रदेशीनी स्थाने - 3

स्त्री वय विभाजन -

1) सुश्रुत व वामभटानुसार - समत्वागत वीर्य अवस्था - पुरुषो मे 25 व स्त्रीयो मे 16 वर्ष

2) हारीतानुमार - 1) बाला - 5 वर्ष तक

3) मुष्ठा - 11 वर्ष तक

4) बाला मुष्ठा - 16 वर्ष तक

5) प्रौढा - 28 वर्ष तक

6) प्रगल्भा - 41 वर्ष तक

स्त्री शुक्र - भावप्रकाश ने स्त्री शरीर मे आठ धातु मानकर अष्टम धातु शुक्र माना है ।

रज / आर्तव / शोणित -

उत्यती - रसादेव स्त्रीया रक्तं रजःसंज्ञं प्रवर्तते । सु.सु. 14/6

रस धातु का उपधातु

भावप्रकाश व शारंगधरानुसार - रज रक्त का उपधातु

स्वरूप - आर्तवं आमेय ।

रक्तलक्षणं आर्तवं गर्भकृत च ।

परिमाण – 4 अंजली

रजोदर्शन व निवृत्ती आयु – 12 से 50

तद् वर्षाद् द्वादशाद् उर्ध्वं याति पंचाशतः क्षयम् । सु.सू. 14/6

तद् वर्षाद् द्वादशाद् काले वर्तमानासूक्त पुनः । जगपक्वशरीराणां याति पंचाशतः क्षयम् ॥ सु.शा. 3/11

ऋतुकाल – 12 ते 16 दिन (सुश्रुत व वाग्भटानुसार द्वादश रात्र व एकीय मतानुसार 16 रात्र)

रजःस्त्राव कालावधी –

- 1) चरक – 3 दिन
- 2) वाग्भट – 5 दिन
- 3) हारीत व भेल – 7 दिन

आर्तव स्वरूप –

मासेनोपचितं काले धमनीभ्यां तदार्तवम् । इष्टत कृष्णं विवर्णं च वायुर्योनीमुखं नयेत् ॥ सु. शा. 3/10

शुध्द आर्तव स्वरूप –

चरक – मासान्निष्पिच्छाहार्तीं पंचरत्रानुबंधि च । न एव अतिबहु नात्यत्वं आर्तवं शुध्दं आदिशेत् ।

गुणजाफलसर्वर्णं च पद्यालककसन्निभम् । इन्द्रूगोपर्मंकाशं आर्तवं शुध्दमादिशेत् ॥ च. चि. 30

सुश्रुत – शशासूक् प्रतिमं यत् तु यद्वा लाक्षारसोपमम् ; तदार्तवं प्रशंसन्ति यद् वासो न विरन्जयेत् ॥ सु. शा. 2

वाग्भट – लाक्षारसशाश्वाभैः थौतं यच्च विश्वज्यते । अ.हु. शा. 1/18

काशयप – रजस्वला मे नस्य व वमन निषेध बनाया है ।

ऋतुमती स्त्री लक्षण –

पीनप्रसन्नतदता, प्रक्लीभात्ममुखद्रीजाम (मुख व दंत अस्त्रोदयुक्त), नरकामा, प्रियकथा,

स्त्रस्तकुक्षीमूर्धजाम्, सुरक्षुजकुचश्रोणीनाभ्युरुच्याधन्स्फीचाम्, (भुजा स्तन श्रोणी नाभी उर्घ मे स्फुरण)

हर्ष औन्तुक्यपत्,

रजःकाल	ऋतुकाल	ऋतुव्यतीतकाल
वात	कफ	पित्त

प्रसव विज्ञानीय –

सामान्य प्रसव काल –

चरक – नवम से दशम मास । 9–10 ततपश्चात गर्भ विकासी होता है

सुश्रुत – नवम दशम एकादश द्वादश 9–12

अष्टांगसंग्रह – 12 मास तक 12 तक

अष्टांगहुदय – 12 मास तक 12 तक

काशयप – गर्भावास काल – दशमास 10

हारीत – दशम व एकादश मास 10 – 11

भावमिस्त्र व योगरलाकर – द्वादश मास तक 12 तक

प्रसव कारण –

कालस्य परिणामेन मुक्तं वृत्ताद् यथा फलम् । प्रपद्यते स्वभावेन नान्यथा पतितुं धूवम् ॥

एवं कालप्रकर्षेण मुक्तो नाडीनिवन्धनात् । गर्भाशयस्थो यो गर्भो जननाय प्रपद्यते ॥ सु. नि. 8/7

- 1) काल परिणाम

- 2) नाडी विबन्ध मुक्ती
- 3) स्वभाव
- 4) गर्भ वास वैगमय
- 5) संपूर्णता

सूतीकागार वर्णन – सर्व आचारो द्वारा

सूतिकागार प्रवेश – नवम मास में

प्रसव काले गर्भाशयन्तर गर्भ स्थिति –

चरक – प्रसुतिमारुतयोगात् परिवत्ति अवाक् शिरा निष्क्रमति अपत्यपथेन । च.शा. 6/24

सुश्रुत – स योनिं शिरसा याति स्वभावात् प्रसवं प्रति । सु.शा. 5/45

प्रसव अवस्था – (सुश्रुत)

- 1) प्रजायिनी – जाते हि शिथिले कुक्षो मुक्ते हुदयबन्धने । सशूले जघने नारी ज्ञेया सा तु प्रजायिनी ॥
 - 1) कुक्षि में शिथिलता
 - 2) हुदय बंधन मुक्ती
 - 3) जघन प्रदेश में शूल
- 2) उपस्थित प्रसवा – तत्रोपस्थितप्रसवायाः कटिपष्ठं प्रति समन्ताद् वेदना भवत्यभीक्षणं पुरीषपवतीमूर्त्रं
 एषित्यत्र योनीमुखान् ऋतेष्या च ।
 - 1) कटीपष्ठ समन्तात् वेदना
 - 2) पुरीष प्रवृत्ती व मूर्त्रसेचन
 - 3) योनीमुख से इतेष्यमस्त्राव
- 3) प्रजनविष्णामाना – यवागू आकंठ पान

स्त्रावानुसार पुत्री / पुत्र अनुमान – काश्यप

- 1) तन्त्री वर्ण (गुडूची स्वरस) अल्प पिच्छिल स्त्राव – पुत्रजन्म
- 2) किंशुकोटक सम स्त्राव – पुत्री जन्म

अकाल प्रवाहण से हानी – (सुश्रुत) = बधिर मूक, व्यस्तहनु, मूर्धाभिघातिन, कास श्वास शोष, विकट पुत्र गर्भसंग चिकित्सा –

- 1) योनी में धूपन – कृष्णसर्पनिर्मोक अथवा पिण्डितक से धूपन
- 2) ओषधी धारण – विष्ण्यपुष्टि मूल को हस्त में धारण, सुवर्चला अथवा विशल्या धारण

अपरासंग चिकित्सा / अपरापतनार्थ चिकित्सा –

- 1) बालवेणिका से कंठ स्थाने अधिस्पर्शन / केशवेष्टीत अंगुली से कंठ स्थाने स्पर्शन
- 2) भूर्जपत्र काचमणि सर्पनिर्मोक, कटुकालाबु, कृतवेधन, कटूतैल योनी में धूपन
- 3) लांगलीमूल कल्क पाणिपादतल स्थाने लेपन
- 4) सिद्धार्थक कुछ लांगली सुरामंड आदी का आस्थापन
- 5) सिद्धार्थक तैल उत्तरबस्ती
- 6) स्निग्ध व कर्त्तीत नख हस्त से अपरा आहारण
- 7) शतपुष्पा हिंगु आदी का योनी में पिचू धारण

अन्तमृतगर्भ – हेतु

अतिमात्रदोषोपचय, तीक्ष्णोष्ण अतिमात्र सेवन, वातमूत्रपुरीषवेगविधारण, विषमाशन, यानस्थानसंपीडन
अभिधात, क्रोध शोक इर्षा भय, साहस इ

अन्तमृत गर्भ लक्षण –

चरक (शा. 8/30) – 1) स्तिमीतं स्तब्धं उदरमाततं शीतमश्मान्तर्गतमिव भवति अस्पन्दनो गर्भः

- 2) शूलं अधिकं उपजायते
- 3) न चाव्यः प्रादुर्भवन्ति
- 4) योनीः न प्रास्त्रदत्ति
- 5) अद्विष्णी चास्या स्त्रस्ते भवतः
- 6) ताम्यति, व्यथते, भ्रमते, श्वसिती, अरती बहुला च भवति
- 7) न चारया वेगप्रादुर्भावो यथावदुपलभ्यते

सुश्रुत (सु.नि. 8/12) 1) गर्भ अस्पन्दन

- 2) आवीर्ना प्रणाश
- 3) उद्यावपाण्डुता
- 4) उच्छवासपूतीत्व
- 5) शूल

अन्तमृत गर्भ चिकित्सा – 1) गम्भेश्वर्यस्य जरायु प्रपतनं व संशमन

(च.शा.8/31) 2) अर्थवर्वदोक्तं भवति चिकित्सा
3) परिदृष्टकर्मा शल्यवेतय द्वाग शल्य हरण

मूढगर्भ – सुश्रुत – 5

हानीत – दोषज मूढगर्भ – 7

1) कील / संकीलक – तत्र उर्ध्वबाहुशिरपातो यो योनिमुखं निष्ठणाद्धि कील इव त्र कीलः ।

बाहु शिर व पाद उर्ध्व की ओर
योनीमुख को कील सम अतरुद्ध करनेवाला

2) प्रतिखुर – निःसृतहस्तपादशिरः कायसंगी प्रतिखुरः ।

हस्त पाद व शिर से निकला हुआ परंतु काय के से संगी अर्थात रुका हुआ

3) वीजक – यो निर्गच्छति एक शिरोभुजः स वीजकः ।

जो एक शिर व भुजा द्वारा निकला हुआ है

4) परिष्य – यस्तु परिष्य इव योनिमुखमादत्य निष्ठाति स परिष्य ।

जो गर्भ योनीमुख को पारेष की सम आवृत्त करता है ।

हारीतानुसार – देषज मूढगर्भ – 7

वातज पित्तज कफज सान्निपतज + द्वंद्वज 3 = 7

मूढगर्भ गती – 8 सुश्रुत, माधव, भावप्रकाश, योगसनाकर

अष्टांगसंग्रह – त्रिविध गती – उर्ध्व अथ तिर्यक

संस्थान – 8

अष्टांगहुदय – अंतिम दो गती को 'विष्कंभ' नाम देकर असाध्य बताया है ।

असाध्य मूढगर्भ लक्षण –

गर्भकोषपरासंग मक्कलो योनिसंवृतिः । हन्यात् स्त्रियं मूढगर्भं यथोक्ताश्वाप्यपुद्रवः सु.सू. 33

वार्गभट – योनिसंवरण, योनिभ्रंश, मक्कल, श्वास, पूरीउदगाग, हिमांगी (शरीर शीतता)

मूढगर्भ चिकित्सा –

- 1) जगायुपतनं
- 2) अर्थर्ववेदविहीत मंत्र
- 3) दृष्टकर्मा शल्यकोविद द्वारा शल्यापहरण

मूढगर्भ (शल्योध्दारणार्थ) क्रिया –

नातोऽन्यत् कष्टतममस्ति यथा मूढगर्भशल्योध्दारणम् । सु.चि. 15/3

- 1) उत्कर्षण 2) अपकर्षण 3) स्थानापवर्तन 4) उद्वर्तन 5) उत्कर्तन 6) भेदन 7) छेदन
8) पीडन 9) क्रन्तुकरण 10) दारण

मूढगर्भ छेदनार्थ – सुश्रुतानुसार मडलाग्र शस्त्र व वार्गटानुसार मंडलाग्र + नखशस्त्र उपयोग करे ।

वृद्धीपत्र तीक्ष्ण होने से उसका निषेध बताया है ।

मूढगर्भ मे उदर विपाटन –

बस्तमारविपन्नायाः कुक्षेः प्रस्पंदते यदि । तत्क्षणाङ्गान्मकाले तं पाटयित्वोधरेद भिषक् ॥ सु. नि. 8/14

मृत बस्त (अजा) समान स्त्री की कुक्षि यदि स्पंदन करती हो तो जन्मकाल मे तुरंत ही उदर का पाटन कर डिशु को बाहर निकालना चाहिए ।

अष्टाग्रसंग्रह – बस्तमार की जगह ‘बस्तिन्द्रामे’ यह पाठभेद

सूतिका विज्ञानीय –

सूतिका परिभाषा –

- 1) अनेन विधिना अध्यर्धमासमपरसंस्कृता विमुकाराहा । यारा विगतसूतिःऽभिधाना स्यात्, पुनरार्तवदर्शनादित्येके ।
सु. शा. 10/16

- 2) एनं च मासाद्यर्थान्मुक्ताऽगदियन्त्रणा । गतसूतिकाभिधाना स्यात्युनार्तव दशनात् । अ.हृ. शा 1/100

सूतिका काल –

- 1) चरक – उल्लेख नहीं
- 2) सुश्रुत – अध्यर्ध मास (45 दिन) / पुनः आर्तव दर्शनतक (एकीय मत)
- 3) अष्टांग संग्रह व हुदय – अध्यर्ध मास (45 दिन) / पुनः आर्तव दर्शनतक (एकीय मत)
- 4) काठयण – षड मास

सूतिका परिचर्या –

काश्यप – गर्भिणी को त्रैवृत मणि श्रोणी मे व प्रजाता को डिर पर धारण करना चाहिए ।

चरकोक परिचर्या –

- 1) स्नेहपान – सूतिका बुभुक्षित होनेपर पिप्पली पिप्पलीमूल शंगबेर चूर्णसह सर्पि तैल वसा मज्जा इनमेसे एक स्नेह का पान
- 2) उदरवेष्टन – तैल अभ्यंग कर उदरवेष्टन – वायुआ उदर मे आध्मापन न करे इसलिए
- 3) यवागूपान – स्नेहजीर्ण पश्चात पिप्पलादी स्थिद स्निग्ध यवागूपान
- 4) उष्णोदक परिषेक – उभय काले उष्णोदक से परिषेक

यह परिचर्या पंचरात्रा वा सप्तरात्र तक करनी चाहिए

सुश्रुतोक परिचर्या –

- 1) अभ्यंग – बला तैल से अभ्यंग कर बातहर क्वाथ से उपचार करे

- 2) शेषदोषहरणार्थं पिप्पलीमूल हस्तीपिप्पलीचिव्रक शंगबेर चूर्ण गुडोदक से उष्णा पान – दो या तीन रात्रि
- 3) स्नेहयवाग् पान – रक्तशुद्धी पश्चात् त्रिरात्रपर्यंत स्नेहयवाग् पान
- 4) ततपश्चात् यतकोलकुलत्थ सिद्धं जांगलरस सह शाली ओदन अग्निबलानुसार सेवन
वाग्भटानुसार सूतिका – बृंहणयोग्य
- काश्यपानुसार सूतिका मे मंड प्रयोग हितकर
सूतिका मे आस्थापन देने से – आमकृत दोष (चरक सि.2/15)
- सूतिका मे नस्य देने से – स्त्रुतरक्त समान क्षामता अरुची अग्निसाद आदी उपद्रव
देशभेदानुसार सूतिका परिचर्चा वर्णन – काश्यप
- 1) आनूपदेशस्थ सूतिका – अनूप देश मे विशेषतः वातकफज विकार होते हैं इसलिए प्रारंभ मे स्नेह निषेध
अग्नि व बलवर्धक मंडादी उपयोग
स्वेद निवातशयन व सर्व उष्ण द्रव्य सेवन हितकर
- 2) जांगलदेशस्थ सूतिका (धन्वभूमीजाता सूतिका) – पिप्पल्यादी कषाय के अनुपान से घृत तैल या अन्य
स्नेहपान
- बलवती सूतिका – तीन या पाच रात्री तक उपरोक्त स्नेहपान
- अबला सूतिका – तीन या पाच रात्री तक यवाग् पान
- ततपश्चात् स्त्रिय अन्न के संसर्ग से उपचार
उपरोक्त परिचर्चा सुश्रुतानुसार
- काश्यपानुसार – जागल देश मे वातपित्तात्मक व्याधी होने की वजह से स्नेह सात्म्य होने से स्नेहोपचार
- 3) साधारणदेशस्थ सूतिका – काश्यपानुसार जामात्या निधि हितकर
पूत्र व पुत्री जन्म पश्चात् पथ्य – (काश्यप)
- 1) कुमारसन पश्चात् – तैल सेवन
 - 2) कुमारीपसव पश्चात् – घृतसेवन
- उपरोक्त स्नेहोपचार यशात् दीपनीय औषध सिद्धं यवाग् पाच अथवा सात दिन पान
स्नान – अष्टांगसंग्रहानुसार दश अथवा छादश दिने स्नान करे
- सूतिका व्याधी –**
- सूतिका व्याधी = कष्टसाध्य / असाध्य
- कारण – 1) चरकानुसार – गर्भवृष्टिक्षयितश्चीलधातुत्वात्
प्रकाणवेदनाक्लेदनरक्तनिःस्त्रुनिविशेषशून्यशरीरात्
- 2) सुश्रुतानुसार – अपतर्पणात्
- सूतिकाव्याधी सामान्य चिकित्सा –**
- भौतिक (भूतबाधाहर) जीवनीय बृंहण मधुर व वातहर औषधीसिद्ध अभ्यंग उत्सादन परिषेक
अवगाह व अन्नपान सेवन (च.शा. 8/49)
- सूतिकाव्यापद –**
- काश्यप ख्विलस्थानोक्त सूतिकोपक्रमणीय अध्याय मे – 64
- चिकित्सास्थानोक्त दुष्प्रजाता चिकित्साध्याय – अतिरिक्त – 10 एकुण = 74
- सूतिका व्याधी सामान्य चिकित्सा –**
- काश्यप – व्रैवृत योग अभ्यंग पान बस्ती के लिए उपयोगी – सर्व वातविकार नाशन

भावप्रकाश / योगरलाकर – सूतिकारोग शान्त्यर्थं कुर्याद् वातहरी क्रियाम् ।

देवदार्यादी क्वाथ

सौभाग्य शुंठी पाक / नागरखंड

प्रतापलंके श्वर रस

बला तैल प्रयोग

सूतिका एवं दुष्प्रजाता मे – मद्य पान – काश्यप

मक्कल शूल –

निदान – स्वक्ष शरीर की प्रजाता (प्रसूता) स्त्री मे प्रसूतीषश्वात रक्त विशोधन न होने से

संप्राप्ती – अवशोधीत रक्त वायु वारा अवरुद्ध होकर नाभी अथ बस्ती पार्श्व वा बस्ती शिर स्थाने
ग्रंथी उत्पत्ति

लक्षण – नाभी बस्ती उदरशूल, सूचीभिरविनिस्तुद्यते भिद्यते दीर्घत इव च पक्वाशयः समन्नादाध्मानमुदरे

मून्रसंग (सुश्रुत), शिरोबस्तीकोष्ठशूल – वारभट

चिकित्सा – 1) वीरतर्वादी गण क्वाथ मे उषकादी गण प्रतिवाप देकर पान

2) यवद्वार चूर्ण पिण्डल्यादी गण क्वाथ सह

3) पिण्डल्यादी चूर्ण सुरामंडसह पान

4) वरुणादी गण क्वाथ पंचकोल व एला चूर्ण प्रक्षेप देकर पान

5) शुद्ध हींग गोघतसह

रक्तविद्रुधी –

ऊर्जाणां अप्रजातानां प्रजातानां तथाऽहितैः । दाहज्वरकरो घोरो जायते रक्तविद्रुधिः ॥

अपि सम्यक प्रजातानां अमुक कोयादनिःसूतम् ॥ रक्तजं विद्रुधिं कुर्याद् कुक्षो मक्कलसाज्ञेतम् ॥ सुनि
प्रजाता अथवा अप्रजाता स्त्री मे अहित सेवन से – दाहज्वरजर रक्तविद्रुधी उत्पन्नी ।

अथवा सम्यक प्रजाता स्त्री मे सम्यक रूप से रक्त निर्हरण न होने से – रक्तज विद्रुधी उत्पत्ती

सप्ताह मे शान्त न होनेपर इसका पार होता है ।

चिकित्सा – अम विद्रुधी मे शाफवत चिकित्सा करे ।

सूतिका ज्वर –

सर्वेषामेव रोगाणां ज्वरः कष्टतमः मतः । तस्यादौ विधिं वक्ष्ये निदानाकृतिभेषजैः ॥ का.खि. 11

काश्यपानुसार सूतिका ज्वर भ्रेद – 6

वातज पित्तज कफज सन्त्रिपातय आगंतुज (ग्रहज व स्तन्यज)

ज्वर हेतु – प्रजाता तथा अप्रजाता सी द्वारा अहितकर आहार विहार सेवन, स्तन्यागमन, ग्रहयाधा, दुष्प्रजायन इ.
सूतिका के सान्त्रिपातज ज्वर के काश्यपानुसार कारण –

संस्कृते: स्नेहशीताम्बु स्नानपान अशन आदिभिः । सन्त्रिपातजरो घोरो जायते दुरुपक्रमः ॥ का.खि. 11

स्तन्यज ज्वर लक्षण – स्तनयोः स्तंभं, पिपासा, हुदयद्रव, कुक्षिपार्श्वकटिशूल, अंगमर्द, शिरोरुजा,

पियुष शुद्धी होनेपर क्रममात्र से निकल जाता है ।

ग्रहज ज्वर – उद्वेपक, निष्ठनन (दीर्घ श्वास), चक्षुषो विभ्रम, श्रम, हस्तनेत्र कम्पन, हारिद्रमुखनेत्रता,

क्षणेन श्यावता अंगानां क्षणेन च सर्वर्णता, केशलुचन, पवनज्वररूपाणि भूयिष्ठानि करोति

काश्यपानुसार ज्वर सामान्य चिकित्सा –

1) दोषों की वृद्धीनुसार उपशमन

2) धातुप्रसादन

3) युक्तीपूर्वक स्वेदन अपतर्पण पाचन क्रषाय अभ्यंग सर्पि प्रयोग

सातिका ज्वर मे पेयादी –

पेया – दीपयाति अग्निं, धातुं संशमयति, गर्भदोषघन,

मंड – दोषविपाचन

क्रषाय प्रयोग – संसर्जन क्रम मे दोषादी पचन पश्चात तथा ज्वर मट्ट होने के पश्चात पाच दिन पश्चात पाचार्नीय

। क्रषाय व सात दिन पश्चात अनुलोमन क्रषाय देना चाहिए

सान्निपातज ज्वर मे – वात बलवान होनेपर संस्कृत मांस तथा यूष व पूरण घृत प्रयोग

सान्निपातज ज्वर चिकित्सा सिधांत –

जो दोष बलवान हो उसकी सर्वप्रथम चिकित्सा करे ।

अल्पान्तरबल दोषो मे सर्वप्रथ कफ की चिकित्सा व पस्चात वातपित्तात्मक ज्वरोक्त चिकित्सा करे ।
स्तन्यज ज्वर चिकित्सा – स्तन्यशुद्धि

ग्रहज ज्वर मे – ग्रहज विधि व वातज्वर नाशक चिकित्सा

गर्भनिरोधक / गर्भपातक योग वर्णन – भावप्रकाश व योगरनाकर

योनी अर्थ –

सुश्रुत – पकुपितास्तु दोषाःयोनीमभिप्रपत्ना; सुकुमारान् दुर्गन्धान् पित्तिलग्नधिरस्त्राविणः उत्राकारान् करीरासन् जनयन्ति ।

परिषाम – योनी व आर्तव उपचन्ति ।

चिकित्सा – अर्जांक चतुर्विधि चिकित्सा – भेषज द्वारा अग्नि शस्त्र

योनीकन्द –

हेतु – द्विस्वाप आतिक्रोध व्यायाम अतिमेथुन क्षत्र आदी

स्वरूप – पूयशोणितसंकाश, निकुचाकृतिसंक्षेप (माधव), लकुचाकृती (भावप्रकाश)

प्रकार – 4

वातज	पित्तज	कफज	सान्निपातज
रुक्ष विवर्ण स्फुटित	दाह राग ज्वरयुक्त	नीलपुष्पसमान(अनसीपुष्प) तीलपुष्पसम	सर्वलक्षणयुक्त

चिकित्सा – गारिक आम्रास्थी रजनी अंजन कटफल चूर्ण मधासह

त्रिफला क्वाथ मधासह परिषेक

मूषक तैल पिचु धारण

आर्तवदुष्टी – अष्टौ रजोदोषाः

वातपित्तलेष्मकुणपग्राथीपूर्तीपूयक्षीणमूत्रपुरीषरेतसः प्रजोत्पादने न समर्था भवन्ति । – सुश्रुत

1) वातज – वातवर्णवेदनं (सुश्रुत), तनु रुक्ष फेनिल अल्प विच्छिन्न सर्वजं चिराच्च निषिद्ध्यते (सं)

2) पित्तज – पित्तवर्णवेदनं (सुश्रुत), किंचीतपीत अपिच्छिल नील दहतीव (संग्रह)

3) कफज – इलेष्मवर्णवेदनं (सुश्रुत), मज्जोपससृष्ट प्रभूत विवर्ध (संग्रह)

4) रक्तज – कुणपर्गाथी अनल्प (सुश्रुत),

5) वातकफज – ग्रंथीभूत

- 6) पितकफज – पूतीपूयनिभ (सुश्रुत), पूयाभं (वाग्मट)
- 7) वातपितज – क्षीण
- 8) सान्निपातज – मूत्रपुरीषगंधी

साध्यासाध्यन्व –

वातज पितज कफज – साध्य

कुणपगंधी ग्रंथीभूत पूतीपूय क्षीण मूत्रपुरीषगंधी – असाध्य

चिकित्सा – सुश्रुत – अर्तवशुद्ध्यर्थ उत्तरवस्ती, पिचू, इ.

विशिष्ट चिकित्सा –

- 1) ग्रंथीभूत आर्तव – पाठा त्र्यूषण व वक्षक क्वाथ
- 2) कुणपगंधी आर्तव – भद्रश्रिय (श्रीचन्दन) अथवा चन्दन (रक्तचंदन) क्वाथ
- 3) क्षीण आर्तव – आर्तवक्षय की चिकित्सा

काश्यप – शतपुष्णा शतावरी कल्प

योगरलाकर – पूगपाक

आर्तवक्षय –

- 1) यथोचित् कालात् अदर्शनं
- 2) अलाता (आर्तव अल्पता)
- 3) योनोवेदना

चिकित्सा – तत्र संशोधनं आग्नेयणा च द्रव्याणा विधिवद उपयोग।

नष्टार्तव –

दोषः आबृत मार्गन्वात् आर्तवं नश्यति स्तियाः । – सुश्रुत

चिकित्सा बस्ती चिकित्सा

मत्स्य कुलन्ध अम्ल काजी तिल माष सूरा दधि गोमूत्र उर्द्धश्वन नक्त शुक

काश्यप – लशुन शतपुष्णा शतावरी प्रयोग

आर्तववृद्धी –

आर्तवं अंगमर्दं अतिप्रवृत्तीं दौर्ग्राध्य च ।

प्रदर –

रजः प्रदीर्घते यम्मात् प्रदरस्तेन स स्मृतः । च.

हेतु – लवण अम्ल गुरु अनिसेवन, कठू विटाही स्निग्ध पिशीत सेवन, ग्राम्योदक मेदव वृशग पायस दर्थी शुक मस्तु सुरादी सेवन,

संप्राप्ती – रक्त प्रमाणं उल्कम्य गर्भशश्यगतः सिराः । रजोवहा: समाश्रित्य रक्तमादाय तद्रजः ॥

यस्माद्विवर्थ्यत्याशु रसभावाद्विमालता । तस्मादसृग्दरं प्राहुरेतत्रविशारदाः ॥ च. चि. 30/209

सामान्य लक्षण – तदेव अतिप्रसंगेन प्रवृत्तमनुतावपि । विजानीयाद् अतोऽन्यद्रुक्लक्षणात् ॥

असृग्दरो भवेत् सर्वः सांगमर्दः सवेदनः ॥ सु.शा. 2/18

ऋतुकाल के अतिरिक्त व अत्याधिक मात्रा मे अतिरिक्त भी रज की प्रवृत्ती तथा रक्त के लक्षणो से भिन्न हो उसे असृकदर जानना चाहिए।

सर्व प्रदरो मे अंगमर्द व वेदना होती है।

प्रकार – 4 (चरक)

	वातज	पित्तज	कफज	सान्धिपातज
स्त्राव वर्ण व स्वरूप	फेनिल तनु रूक्ष इयाव अरूण किंशुकोदक सकाश	नील पीत असीत अत्युष्णि	पिच्छिल पांडुवर्ण गुरुस्तिंध शीतल	दुर्गंध पिच्छिल पीत विद्यंध सर्पिवसामज्जोपमय
वेदना	सरूज अथवा निरूज	नीतान्तरकं स्त्रवति मुहुर्मुहुरथार्तिमत्	घनं मंदरूजकरम्	शाश्वत् स्वत्य अथास्त्रावं
सार्वदेहिक लक्षण	कटिवंक्षण्डुन्नार्थ्यपृष्ठ श्रोणिषु वेदना	दाहसागतृषामोहज्वर भ्रमयुक्त	छर्दि अरोचक हुल्लास श्वास कास	तृष्णा दाह ज्वरान्वितम्

सान्धिपातज प्रदर – क्षीणरक्ता दुर्बला ताम् असाध्यां विवर्जयेत् ।

चिकित्सा –

- 1) रक्तयोनी आदी के चिकित्सा सिध्दांतानुसार दोषानुसार रक्तस्थापक चिकित्सा
- 2) वातजादी योनीव्यापदोक्त चिकित्सा
- 3) रक्तातिसारोक्त, शोणितपित्त, रक्तार्श व्याधी में उक्त चिकित्सा
- 4) सुश्रूत – रक्तपित्तविधानेन यथावत् उपाचरेत्

चरक

आध्यंतर योग –

- 1) दार्वादी क्वाथ – शारंधर
- 2) तण्डुलीयक मूल कल्क तंडुलोदक सह, रसांजनं व लाक्षा छागपय सह
- 3) जीरकावलेह व खण्डकष्माण्डावलेह, बोलार्दी

सोमरोग –

द्रेत् – स्त्री द्वारा अत्याधिक वैथुन, शोक श्रम अभिचार (मंत्र), अनिसासरक योग प्रयोग, गरयोग प्रयोग

प्रकार – 1

वर्णन – भावप्रकाश, योगरञ्जकर

स्त्राव स्वरूप = प्रसन्न, विमल, शीत, निर्गन्ध निरूज सित

वह अत्याधिक दुर्बल स्त्री उक्त स्त्राव को धारण नहीं कर सकती
शिर शिथीलता, मुख व तालु शोष, मूच्छर्झ, जम्भा प्रलाप

चिकित्सा –

- 1) कदलीफल व धात्री फल मधुसह
- 2) चक्रमर्द मूल तण्डुलोदकसह
- 3) कदलीकंद घृत
- 4) वंगेश्वर रस

सोमरोग उपद्रव मूत्रातिसार –

सोमरोगं चीरं जाते यदा मूत्रमतिस्त्रवेद् । मूत्रातिसारं तं प्राहुः बलविध्वसतं परम् ॥ भा. चि.

मूत्रातिसार चिकित्सा –

तालकन्द खर्जुर मधुक विदारेकन्द चूर्ण शर्करा व मधुसह
चक्रमर्द मूल तण्डुलोदक सह

वन्ध्या -

हारीतानुसार - 6

- 1) काकवन्ध्या (एक प्रसवोपरान्त वन्ध्यत्व)
- 2) अनपत्या
- 3) गर्भस्त्रावी
- 4) मृतवत्सा
- 5) बलक्षय के कारण वन्ध्या
- 6) अजातरजसा स्त्रीसह मैथुन करनेपर गर्भ व भग संकोच उसरो वन्ध्यत्व घट प्रकार का उल्लेख नहीं; उपरोक्त प्रकार अनुमान से)

स्तनरोग -

कन्याओं में स्तनरोग न होने का कारण -

धमन्यः संवतद्वाराः कन्यानां स्तनसंश्रिताः । दोषविसरणात् तासां न भवति स्तनामयाः ॥
तासामेव प्रजातानां गर्भिणीनां च ताः पुनः । स्वभावाटेव जायन्ते सम्भवन्यतः ॥ सु. नि. 10/16
एवमेव स्तनसिंहा विवृता: प्राप्य योषितम् । सूतानां गर्भिणीनां वा ।

नाडीनां सूक्ष्मवक्रत्वात् कन्यानां तु न जायते ॥ अ.हु. नि. 11/19

उन्या - नाडीनां संवतद्वारा / सूक्ष्मवक्रत्वात् - दोषविसरणात् - स्तनरोग नहीं होते
योषिता / गर्भिणी / सूतिका (सूताता) - स्तनसिंहा विवृता - स्तनरोग होते हैं ।

स्तनकीलक / पीतवज्ञा स्त्री / स्तन वज्ञ -

हेतु व सुप्राती - धात्री द्वारा अन्नपानासह वात्र सेवन - पचन न होकर रससह स्तन्यवह सिंहाओं से गमन
कर स्तनबाही सिंहाओं में आश्रय - ऊंचा विकार उत्पन्नी

चिकित्सा - धूतपान से प्रथमतः शम्यते स्तनकीलके ।

धूतपान से स्त्रीवत्सा मदू न होने पर स्तन का युत्तीपुवक निर्दोहन मर्दन व एवं पश्चाता
शीत सेक ल प्रलेप

स्त्रीरोग – प्रसुतितंत्र

गर्भधान विधि –

विवाह एवं गर्भधारणार्थ योग्य आयु –

- | | |
|------------------------------|------------------|
| 1) सुश्रूत – पुरुष – 25 वर्ष | स्त्री – 16 वर्ष |
| 2) वाग्मट – पुरुष – 20 वर्ष | स्त्री – 16 वर्ष |

सामान्य मैथुन स्थिती व विपरीत स्थिती में मैथुन निषेध –

स्त्री को उत्तान शयन कर बीज ग्रहन करना चाहिए

- 1) न्यूब्जन स्थिती में मैथुन – बात बलवान होकर योनी पीड़न
- 2) दक्षिण पार्श्व शयन कर मैथुन – इलेष्मा च्युत होकर गर्भाशय अवरोध
- 3) वाम पार्श्व शयन कर मैथुन – पित च्युत होकर रक्त व शुक्र का विदाह करता है

गर्भोत्पत्ती के लिए आवश्यक घटक –

धूवम चृणीं सान्निध्यात् गर्भः स्याद् विधीपूर्वकं । ऋतु क्षेत्र अम्बुदीजानां सामग्र्यादण्कुरो वथा ॥

संयोग दिनानुसार संतानोत्पत्ती –

- 1) युग्म दिवसे संयोग – पुत्र उत्पत्ती
- 2) अयुग्म दिवसे संयोग – दृहिण (पुत्री) उत्पत्ती

पुत्रकामनार्थ – चतुर्थी, ब्रह्मी, अष्टमी, दशमी, द्वादशी संयोग

पुत्री कामनार्थ – पचमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, दिवसे संयोग

त्रयोदशी प्रभृत्या निन्दा

- आहार – जोधनपक्षात् 1) पुरुष चतुर्शीरातो मधुर आहार सेवन करे
2) स्त्री तैत्तिराती सेवन करे

गर्भ परिभाषा –

- 1) शुक्रशोणीतजीवसंगोगे तु खनु कुद्धिते गर्भसंज्ञा भवति । च. शा. 4/5
- 2) शुक्रशोणित गर्भाशयस्थ आत्मप्रदृति विकारसंमूच्छितं गर्भ डत्युच्यते । सु. शा. 5/3
- 3) कामान्मिथुनसंयोगे शुद्धशोणितशुक्रजः । गर्भः संजायते नार्यः स जातो बाल उच्यते । शा. पू. 6/11

गर्भ के षडधातु –

गर्भस्तु खलु अन्तरिक्षवावाग्नितोपभूमिविकारद्येतनाधिष्ठानभूतः ।

एवमन्या युक्त्या पञ्चमहाभूतविकारसमुदायात्मको गर्भश्वेतनाधिष्ठानभूतः स इत्यव वस्त्रे धानुरुक्ता । च. शा. 4

पांचमहाभूत + चेतना = गर्भस्य षडधातु

गर्भ में चेतना अवतरण – तत्र पूर्वम चेतनाधातुः सत्त्वकरणो गुणग्रहणाय प्रवर्तते ।

गर्भ के पांचभौतिक अंगावयव –

1) पार्थिव	गंध, घ्राण, गौरव, मूर्ती, धैर्य, केश, नख अस्थी आदी
2) आप्य	रस, रसन, शैत्य, मार्दव, स्नेह, क्लेद, इलेष्मा, मेद, रक्त, मांस, शुक्र
3) तैजस	रूप, दर्शन, प्रकाश, पक्ति, औष्ठ्य, संताप, मेथा, वर्ण, भास्नेज, जोर्य
4) वायवीय	स्पर्श, स्पर्शन, रौक्ष्य, प्रेरण, धातुव्यूहन, चेष्टा, प्रश्वासोद्धास, परिस्पर्दन, लाघव,
5) आकाशीय	आब्द, श्रोत्र, लाघव, सौक्ष्म्य, विवेक (विविक्तता), मुख, कण्ठ, कोण्ठ

गर्भवृद्धी -

गर्भस्य खलु स्मनिमित्ता मारुताध्मान निमित्ता च परिवृद्धिर्भवति । सु. शा. 4/57

गर्भपोषण -

1) चरक -

1) व्यष्टगतिगासावुभुक्षरतु खलु गर्भः परनन्नवृत्तीः

मातरमाश्रित्य अ) उपस्नेह

ब) उपस्नेद जीवित रहता है / पोषण होता है ।

च. शा. 6/23

2) तत् अनन्तर (अंगावयव व्यक्त होने के बाद) -

अ) कुछ पोषण लोमकूप मार्ग द्वारा प्राप्त उपस्नेह से

ब) कुछ पोषण नार्भीनाडी मार्ग से होता है ।

2) सुश्रुत -

मातुस्तु ऋ खलु ग्मवहार्वा नाड्यां गर्भनाभी नाडी प्रतिक्षडा , सास्य मातुराहारसवीर्यमभिवहति ।

तेन उपस्नेनास्याभिवृद्धीर्भवति ।

3) वाग्भट -

गर्भस्य नादो मातृश्च हुदि नाडी निवध्यते ।

यदा स पृष्ठिगात्मोति केदार इव कुल्यया ॥ अ. शा. 1/56

कलानुसार गर्भवृद्धी हेतु -

1) गर्भजगणा भावानो राष्ट्रदस्तथा (मातृज. पितृज. सात्यज. आदी)

2) वृन्दावन मौखिक (आदार विहार सौष्ठव)

3) माता दाता उपस्नेह उपस्नेद से

4) कलानुसारिगात्म

स्तनात्मसिक्षद्वा कुक्षो वृद्धिं प्राप्नोति । च. शा. 4/27

आपन्नगर्भा स्त्री के शरीर में स्त्र के कार्य (च. शा. 6/23) - 3

1) स्वशरीर पुष्ट्यवे

2) स्तन्याय (स्तन्यजननार्थ)

3) गर्भवृद्धार्थ

गर्भ के स्त्रीकर व पुरुषकर भाव -

1) क्लेव्य 2) भीरुत्व 3) अवैशाश्व 4) मोह 5) अनवस्थितत्व 6) अधोगुरुत्व

7) असहन 8) शैथिल्य 9) मार्दव 10) गर्भाशयवीजभागयुक्तता

विपरीत भाव - पुरुषकर उभयकर भाव - नपुर्सक

गर्भ नेत्रवर्णात्पत्ती परीणाम -

1) तत्र दृष्टिभागं अप्रतिपन्नं तेजो - जात्यन्धं करोति

2) रक्तानुगं - रक्ताक्षं करोति

3) पित्तानुगं - पिंगाक्षं

4) इलेष्मानुगतं - शुक्रलाक्ष

5) वातानुगतं - विकृताक्ष

गर्भ मासानुमासिक विकास -

प्रथम मास	1. स सर्वगुणान् गर्भत्वमापनः प्रथमे मासि संमृच्छिंतः सर्वधातुकलृषीकृतः खेटभूतो (इलेष्मसदृश) भवत्यव्यक्तविग्रहः सदसद् भूतांगावयवः । च. शा. 4/9 2. तत्र प्रथमे मासि कललं जायते । सु. शा. 3/18 3. तत्र प्रथमे मासि कललङ् जायते । अ. स. शा. 2/13 4. अव्यक्तः प्रथमे मासि सज्जाहात् कलली भवेत् । अ. हु. शा. 1/37 5. हारीत - प्रथम दिन - कलल दशम अह - बुद्वुदाकार, पंचदश दिन - घन, द्वादश दिन - मांसपिण्ड, पंचविंश दिन - पंचमताभूतान्मक, एक मास - पंचतत्वयुक्त पिंड
द्वितीय मास	1. द्वितीये मासि घनः संपटयते पिण्डः पेश्यर्बुदं वा तत्र घनः पुरुषः पेशी स्त्री, अर्बुदं नपुसकम् - च 2. द्वितीये शीतोष्मानिलैरभिप्रपञ्चमानानां महाभूतानां संघानां घनः संजायते, यदि पिण्ड पुमान, स्त्री चेत् पेशी, नपुसकं चेदर्बुदमिति । स. शा. 3/18 3. द्वितीये घनः पेश्यर्बुदं वा तेभ्यः क्रमात्युस्त्रीनपुंसकाने । अ. स. शा. 2/13 4. द्वितीये मासि कललाद्वयः पेश्यथवार्बुदम् । अ. हु. शा. 2/13 5. हारीत - 50 वे दिन मे गर्भाकुर उत्पन्नी
तृतीय मास	1. तृतीये मासि सर्वेन्द्रियाणि सर्वांगवयवाश्च योगपद्येऽनाभिनिर्वर्तन्ते । च. शा. 4/11 2. तृतीये हस्तपादशिरसां पञ्च पिंडिका निर्वर्तन्ते अंगप्रत्यंगविभागश्च सूक्ष्मो भवति । सु. शा. 3/18 3. तृतीये पंचधा प्ररोहन्ति; तदवयथा सक्रियनि बाहु शिरक्षा सक्षयादिप्रसोहै क्रकालमेव च सर्वांगवयव इंद्रियाणि युगपत्यांभवन्ति । अ. स. शा. 2/13 4. व्यक्ती भवति मासेऽस्य तृतीये ग्रात्रपचकम् । मृधां द्वे सक्रियनि बाहु सर्वसूक्ष्मांगजन्म च । सर्वमेव हि मूर्धादयैर्जन्मन्त्वां च सुःखदःख्याः ॥ अ. हु. शा. 1/54 5. मासत्रये तु संप्राप्नो हस्तपादाद् प्रवर्धन्ते । हा. षष्ठस्थान 6. तृतीये मासि दुग्धपञ्चिर्वर्तन्ते यथाक्रमम् । प्रस्पन्दने चेतयति वेदनावाश्च अवबुद्धन्ते ॥ सूक्ष्मपञ्चकरणस्तनीये तु मनोऽधिकः ॥ का. शा. 2/4
चतुर्थ मास	1. चतुर्थे मासि स्थिरत्वमापदयते गर्भः । च. शा. 4/20 2. चतुर्थे सर्वांगप्रत्यगविभागः प्रव्यतीते भवति, मर्मेहुद्युप्रव्यक्तिभावाच्चेतनाधातुरभिव्यक्तो भवति केस्मात् ? नत्यथानत्वात् । सु. शा. 3/18 3. चतुर्थे अंगप्रन्यंगविभागः प्रव्यक्तो गर्भश्च स्थिरो भवते । अ. स. शा. 2/22 4. चतुर्थे व्यक्ततात्गानां । अ. हु. शा. 1/57 5. सार्धमासत्रये(साडेतीन) प्राप्ते शिरक्षा सारवद्वयेद् । चतुर्थके च लोमानां सम्भवशत्र दृश्यते -हा. 6. चतुर्थे स्थिरतां याति गर्भः कुक्षो निरामयः । का. शा. 2/5
पंचम मास	1. पंचमे मासि गर्भस्य मांसशोणितोपचययो भवत्यधिकमन्येभ्यो मासेभ्यः । च. शा. 4/21 2. पंचमे मनः प्रतिबुद्धतरं भवति । सु. शा. 3/30 3. पंचमे मनः प्रतिबुद्धतरं भवति मांसशोणितोपचयश्च । अ. शा. 2/33 4. चेतनयाश्च पंचमे । अ. हु. शा. 1/57 5. पंचमे स सुजीवः स्यात् । हारीत षष्ठस्थान 6. मांसशोणितवृद्धिदस्तु पंचमे मासि जीवक । का. शा. 2/6
षष्ठ मास	1. षष्ठे मासि गर्भस्य बलवर्णोपचययो भवत्यधिकमन्येभ्यो मासेभ्यः । च. शा. 4/22 2. षष्ठे बुधिः । सु. शा. 3/30 3. षष्ठे केशसेमनरास्थि स्नाय्यादिनी अभिव्यक्तानि बलवर्णोपचयश्च । अ. स. शा. 2/24 4. षष्ठे स्नायुसिसरोमबलवर्णनखत्वचाम । अ. हु. शा. 1/57 5. षष्ठे प्रस्फुरणं भवेत् । हारीत षष्ठ स्थान 6. बलवर्ण ओजसां वृष्टिः षष्ठे । का. शा. 2/7

सप्तम मास	1. सप्तमे मासि गर्भः सर्वैर्भवैरुत्प्रायायते । च. शा. 4/23 2. सप्तमे सर्वांगप्रत्यंगविभागः प्रव्यक्ततरः । सु. शा. 3/30 3. सप्तमे सर्वांगसम्पूर्णता । अ. स. शा. 2/25 4. सर्वैः सर्वांगसम्पूर्णो भावैः पुष्टिः सप्तमे । अ.हु. शा. 1/58 5. सर्वधात्वंगसम्पूर्णो वानपित्तकफान्तिः सप्तमे मासि का. शा. 2/8
अष्टम मास	1. अष्टमे मासि गर्भश्च मातृतो गर्भतश्च माता रसहारिणीभिः संवाहिनीभिः मुहुर्मुहुरोजः परस्परत आददाते गर्भस्यासंपूर्णत्वात् । तत्स्मात्तदा गर्भिणी मुहुर्मुहुर्मुद्युयुक्ता भवति मुहुर्मुहुर्मलाना, तथा गर्भः, तस्मात्तदा गर्भस्य जन्म व्यापत्तिमद्वत्योजसो अनवस्थितत्वात् । तं चैवार्थमभिसमीक्ष्याष्टमं मासम् अग्न्यं इति आचक्षते कुशलाः ॥ च. शा. 4/24 2. अष्टमे अस्थिरीभवति ओजः, तत्र जातश्चेन्न जीवेन्निरोजस्त्वात् न्नैत्रतभागन्वात् च । सु. शा. 3/30 3. अष्टांगसंग्रह - चरकसमान 4. ओजोऽष्टमे संचरति मातापुत्रो मुहुः क्रमात् । तेन तौ म्लानमृदिताँ तत्र जातो न जीवति । शिशुरोनोज्जवस्थानान्नारी मंशविता भवेत् ॥ अ. हु. शा. 1/62 5. अष्टमे मासि जाने च धग्नियोगः प्रवर्तते । (पाचकाग्नि संयोग) - हारीत 6. अष्टमे गर्भिणीगर्भावाददाते परस्परम् । ओजो रसवहायुक्तः पूर्णत्वाच्छलयंत्यपि । तस्मात्त्र मुहुर्गलाना मुहुरुष्टा च गर्भिणी । अन्यं चाज्ञने तस्मान् मासो गण्यते षष्ठमः ॥ का.

अष्टम मास में प्रसव प्रतिष्ठेधार्थ चिकित्सा -

सुश्रुत - ततो बलिं मासौदनम्ममे द्रापयेत् । सु. शा. 3/30

अष्टांगसंग्रह - देवताराधना, मांस औदन बलि दान

गर्भ लिंग कारण -

चरक - रक्तेन कल्यामधिकेत्रं पुरुङ्ग शुक्रेण

सुश्रुत - तत्र शुक्रसंहृत्यात् पुनान् अर्द्धवाहुत्यात् स्त्री, साम्यात् भयोर्नपुसकमिति ।

बहु अपत्पत्ता कारण -

चरक - अनप्रवृत्त वात द्वारा शुक्रार्तव का विभाजन कर बहु अपत्पत्ता

यह कार्य पूर्वजन्म के कर्मानुसार होता है

सुश्रुत - यम गर्भ उत्पत्ती - गर्भशयान्तर्गत वायु द्वारा बीज भिन्न (दो भागों में) विभक्त होता है ।

उसे धर्मेतर पुरस्पर अर्थात् धर्मधर्मजन्य यम कहते हैं ।

गर्भांग विकृती कारण -

चरक - 1) बीजदोष 2) आत्मकर्म (पूर्वजन्मकर्त कर्म) 3) आशय (गर्भशय) दोष

4) माता आहार विहार दोष

यस्य यस्य हि अंगावयवस्य बीजे बीजभागः उपतप्तो भवति तस्य तस्यांगवयवस्य विकृतिः उपजायते ।

न उपजायते च अनुपत्तापात्

सुश्रुत - A) वातप्रकोप वा दौड़ुद अवगानना से

कुञ्ज, कुणि, पंगु, मूक, मिन्निन बालक उत्पत्ती

ब) अक्रोल प्रवाहण से -

बधिग, मृक, कुञ्ज, विकट बालक उत्पत्ती

सुश्रुतानुसार गर्भ विकृती कारण - 1) माता पिता नास्तिक्य 2) पुराकृत अशुभ कर्म

3) वातादी प्रकोप

- 1) अंगपत्न्यंग निर्वृती – स्वभावादेव जायते
- 2) अंगपत्न्यंग निर्वृती गुणागुण – धर्म अधर्मनिमित्तज

मातदोषप्रकोपक आहार विकृती – (अष्टांग संग्रह व छुट्य)

- 1) वातप्रकोपक आहार – जड, बधिर, मूळ, मिन्मिन, गटगद, खंज, कुञ्ज, वामन, हीनांग, अधिकांग, अन्य वातविकार, (संग्रह), अंध (हुट्य).
- 2) पित्तप्रकोपक आहार – खलित, पलित, शमश्रुहीनता, नखके शर्पैगल्य,
- 3) कफप्रकोपक आहार – कुष्ठ, किलास, सदंत बालक, शित्र, पांडु.

अस्थीविरहीत गर्भ – सुश्रुत

दो वृष्णस्यन्ति स्त्रीयो के भैथुन द्वारा उत्पन्न।

उपरोक्त गर्भ पितृगुणविरहीत होता है।

गर्भस्थ शिशु अरोदन कारण –

जरायुणा मुखेच्छन्ने कण्ठे च कफवेष्टिते।

वायोर्मार्गनिरोधाच्च न गर्भस्थः प्रगेदिती ॥ सु. शा. 2/54

गर्भ म मल आदी अभाव का कारण – (सु. शा. 2/53)

- 1) अल अल्पत्वान्

- 2) पक्ववाशयस्थ वायु अयोग

गर्भाशयन्त्रर गर्भ स्थिती –

- 1) चरका –

गर्भस्तु खलु मातुः पृष्ठाभिमुखः उर्वशिरः संकु-यांगानि अस्ते अन्तःकुश्मी। च. शा. 6/22

- 2) सुश्रुत –

आमुग्नोऽभिमुखः शोते यमैः गर्भाशये स्त्रियः । सु. शा. 5/45

- 3) अष्टांगसम्प्रदाय –

गर्भस्तु मातुः पृष्ठाभिमुखो ललाटे कृतान्तिः संकुचिताद्वौ गर्भकोष्ठे दक्षिणपाश्चमाश्रित्य

अवतिष्ठते पुमान् वामं स्त्री मध्यं नपुर्संकम् । अ. स. शा. 2/31

पुसंवन कर्म –

स्थिथी – 1) चरक – आपन्न गर्भा स्त्री में प्राप्त्यक्तीभावाद्गर्भस्य

- 2) सुश्रुत – लब्धगर्भा स्त्री में

- 3) अष्टांगसंग्रह – लब्धगर्भा स्त्री में प्राप्त्यक्तीभावाद्गर्भस्य

चक्रपाणी – व्यक्ती भाव (लिंगव्यक्ती) काल = द्वितीय मास – उसके गूर्व

विधी – काल – पुष्य नक्षत्र पर

योग – 1) गो विश्राम स्थान पर उत्पन्न वट के पूर्व या उत्तर दिशा की शाखाओं के अनुपहत शुंग

दो त्रिही माष, सुवर्ण माष या पीत सर्षप व दधी सह पुष्य नक्षत्र पर पान

2) गोष्ठोत्पन्न जीवक, ऋषभक, अपामार्ग, सहचर डुनका कल्क अथवा अलग अलग द्रव्यो का कल्क दुग्ध सह पान

3) कुडयकीटक या मत्स्य को एक अंजली जल में डालकर पान

4) सुवर्ण रजत या लोह का अणुप्रमाण पुरुषाकृती प्रतिमा को अग्नितप्त कर दधि वा उदकसह

5) पुष्य नक्षत्र पर शालीपिष्ठ की उष्मा का आप्नाण

सुश्रुतोक्त योग -

लक्षणा , बट्टुंग, सहदेवा, विश्वदेवा, आदी औषधी को क्षीरसह पिष्टकर नासापृट मे डाले

पुनप्राप्त्यर्थ - दृष्टिण नासापृट मे पुत्रीप्राप्त्यर्थ - वाम नासा पृट मे

मात्रा - तीन या चार बिंदु

अष्टांगसंयह व हृदय - उपरोक्त योग + श्रेत्र वृहती मूल कल्क स्वरम नस्य या उत्पन्न, कुमुद पत्र, लक्षणा

मूल , ४ बट्टुंगों का नस्य

श्रेत्र कंटकारी मूल दुग्ध पिष्ट कर नस्य

गर्भिणी लक्षण -

अ) सदयोग्यता गर्भ लक्षण -

चरकोक्त लक्षण	सुश्रुतोक्त लक्षण
निष्ठिविका	-
गौव (अंगगौव)	श्रम
अंगसाद	सत्तियसदन
तन्दा	लानि
प्रहृष्ट	शुक्रशोणितयोः अवबन्ध
हृदये व्यथा	-
तप्ती	पिपासा
योनी द्वारा चीजग्रहण	योनीम्फरण

ब) व्यक्त गभा लक्षण - (चक्रपाणी नुसार व्यक्तगर्भा स्थिती - तीनील मास से)

चरकोक्त लक्षण	सुश्रुतोक्त लक्षण :
आतंब अदर्जन	-
आस्थ्यसंस्त्रवण, अनन्ताभिनाशा, छर्दि, अग्नेयक,	अकामसंजडिति, यथ गंध उद्देजन, पसेक
अस्त्रकामता, उच्चावचेष भावेषु अव्याप्तयावन	
गुरुगात्रत्व, चक्षुषा लानि, घादश्वयथु	सदन, आक्षयश्वर्णाणि सम्मान्यन्ते विशेषतः
स्तनयोः स्तनन्यमोष्टयोः स्तनमण्डलयोश्च कार्या	स्तनयोः कृञ्जनुखता, रोमराज्य उदगम,
योन्याश्वाटलत्व (योनी विवृतत्व), रोमराज्य उदगम	

गर्भिणी मासानुमासिक लक्षण -

1) चतुर्थ मास -

तस्मातदा गर्भिणी गुरुगात्रत्वग्निकमापद्यते विशेषेण । च. शा. 4/20

गुरुगात्रत्वग्निकं गर्भिण्यास्तन्त्र जायते । का. शा. 2/6

2) पंचम मास -

तस्मातदा गर्भिणी काश्यमापद्यते विशेषेण । च. शा. 4/21

गर्भिणी पंचमे मासि तस्मात काश्येन युज्वते । का. शा. 2/7

3) षष्ठ मास -

तस्मातदा गर्भिणी बलवर्णहानीमापद्यते विशेषेण । च. शा. 4/22

..... यज्ञे सतुः श्रमोद्धिकः । का. शा. 2/7

4) सप्तम मास -

तस्मात्तदा गर्भिणी सर्वाकारं क्लान्तमा भवति । च. शा. 4/23

सप्तमेमासि तस्माच्य नित्यक्लान्तात्र गर्भिणी । का. शा. 2/8

गर्भलिंग द्योतक गर्भिणी लक्षण -

- चरक - 1) सव्यांगचेष्टा (सर्व चेष्टा वाम भाग से करना)
- 2) पुरुषार्थिनी (पुरुष मैथुनाकांक्षा)
- 3) स्वन मे स्त्रीलिंगी पदार्थ दर्शन
- 4) शील व चेष्टी स्त्रीसमान
- 5) सव्यात्तगर्भा (गर्भ वाम पार्श्व स्थित)
- 6) न च वृत्तगर्भा (गर्भ गोलाकार न हो)
- 7) सव्यप्रदुर्घाडा (वाम स्तन्य मे पर्धम स्तन्योत्पत्ती)

कन्या प्रसुति का अनुमान
इसके विपरीत लक्षण होनेपर
पुत्र प्रसुति अनुमान

सुश्रुत -

- 1) दक्षिण स्तने प्राक पयोदर्शन
- 2) दक्षिणकुक्षिमहत्व
- 3) पूर्व च दक्षिण सक्षित उल्लंघ
- 4) पुलिंगी दूर्व्य दोहुद
- 5) स्वज्ञ मे पद्म उत्पल कुमुद आसातक आदी दर्शन
- 6) प्रसन्नमुख्यवर्ण
- 7) पार्श्वद्वयम् अवनर्न पुरस्तान्निर्गतिम् उदरे
व उपरोक्त उभय प्रकार के लक्षण होनेपर

पुत्र प्राप्ति अनुमान
इसके विपरीत लक्षण होनेपर
पुत्रीप्राप्ति का अनुमान

युग्म गर्भ प्रसुति लक्षण - मध्ये निम्न दोषीभूत उदर (सुश्रुत)

पार्श्वद्वय उदर कुक्षि, दोषीसदृश मध्य मे निम्न - यमगर्भ - वार्षिट

दौहुद काल -

- 1) चरक व अष्टांगस्म्याह, हारीत - तृतीय मास
- 2) अष्टांगहृदय - द्वितीय मास
- 3) सुश्रुत, भावप्रकाश - चतुर्थ मास

दौहुद उत्पत्ती कारण -

- 1) चरक - जिस काल मे इंद्रिया स्थित या अभिव्यक्त होती है उस समय गर्भ मे स्पंदन होता है, वह पूर्वजन्मानुभूत विषयो की आकांक्षा करता है। मातृ हृदय रसवाहिनी नाड़ी द्वारा गर्भ से संबंधीत होता है; उन रसवाहीनीयो द्वारा अपरी इच्छा अभिव्यक्ति
- 2) सुश्रुत - गर्भहृदयप्रव्यक्तीभावात् चेतनाधातुः अभिव्यक्तो भवति। कस्मात् ? तत्स्थानत्वात् । तस्मात् गर्भः चतुर्थे मास्यभिप्रायम् इन्द्रियार्थेषु करोति । द्विहुदयां च नारी दौहुदीनीमाचक्षते ।

दौहुद अवमानना परीणाम =

- 1) चरक - गर्भ विकृती या गर्भ विनाश
- 2) सुश्रुत - कुञ्ज, कुणि, खंज, जड (मन्द बुध्दी), वामन, विकताक्ष, अनक्ष

गर्भिणी परिचर्या -

शारंगधर - लाक्षादी तैल अम्यंग
काश्यप - त्रैवृत मणि धारण

गर्भिणी मासानुमासिक परिचया - पाठांतर

अष्टम मास मतमतांतर-

चरक - अष्टम मास मे सर्पिशुक्त क्षीरयवागु पान

भद्रकाष्य - उपरोक्त यवागु निषेध - इससे बालक मे पैंगल्य उत्पत्ति

आत्रेय - पुनः उपरोक्त मत खंडन - उपरोक्त यवागु गर्भ आगेंग बल वर्ण स्वर संहनार्थ श्रेष्ठ

गर्भिणी वर्ज्य आहार विहार / गर्भोपधातकर भाव -

1) चरक - गर्भिणी तीक्ष्णौषधव्यवायव्यायामवर्जनीयाणाम् च. सू. 25

1) सर्वगुरुतीक्ष्ण उष्ण औषध

2) दारूण चेष्टा 3) रक्तवस्त्र धारण 4) मटकर द्रव्य 5) मद्य 6) यानाधिरोहण 7) मांससेवन

2) मुश्रुत - व्यवाय, व्यायाम, अतिर्तर्पण, अतिकर्शन, दिवास्वाप, रसीजागरण, शोक, यानरोहण, भय,

उत्कटुकासन, स्नेहादिक्रिया, शोणितगोक्षण, वेगविधारण

गर्भस्थापक औषधी -

एन्द्री ब्राह्मी शःवीर्या सहस्रवीर्या (द्रुवांड्य), अमोघा (पाटला), अव्यथा (गुडूचि), शिवा,

अरिष्टा (कटुरोहिणी), यात्यपुष्टी (पीतबला). विश्वकर्मेनकन्ता

प्रजास्थापन गण - (च. सू. 4) एन्द्री ब्राह्मी शतवीर्या सहस्रवीर्या अमोघा अव्यथा शिवा अरिष्टा वात्यपुष्टी
विश्वकर्मेनकन्ता इति द्वांमानि प्रजास्थापनानि भवन्ति ।

गर्भिणी व्याधी सामान्य चिकित्सा सूत्र -

1) मृदुमधुरशिरसुकुमागप्रायेः औषध आहरिः उपाचरेत् ।

2) न चास्या वमन विरेच्च शिरेविरेचनानि प्रयोजयेत् ।

3) न रुग्म अत्येचयेत् ।

4) सर्वकालं च व अरधाम अनुवासनं कृपान् अनुब्र आन्तरिके लाघे

5) अष्टम मास मे वमनदो मध्य हो तो मन वमनादो वा तदशेकासि उपाय कर सकते हैं

उपमा - पृणमिव तैलपात्रमसंक्षोभमयतयाऽल्लवं भवन्ति उपचर्या । च. शा. 8/22

गर्भिणी किकीस -

हेतु - गर्भोत्पीडन (गर्भ के द्वाग वातादी दोष उत्पीडन)

संपादी - गर्भोत्पीडनात् वातपितृश्नेभ्याण उरु प्राप्त

लक्षण - विदाह, कण्डू

काल - सप्तम मास

चिकित्सा - 1) मधुर गण औषध सिंह नवनीत पाणितल मात्रा मे पान

2) बदरी क्वाथ सिद्ध नवनीत पान

3) स्तन उदर स्थाने चंद्रन मृणाल एवम चंदन उशीर लौपन

4) शिरीष धातकी सर्षप मधुयष्टी चूर्ण लेपन

5) करवीर एवं करंज पत्र सिद्ध तैल अभ्यंग

गर्भिणी ज्वर - काश्यपोक्त (खिलस्थान - 10)

गर्भिणीनां ज्वरः कष्टः सर्वव्याधिषु परिष्विः ।

हेतु - क्षुधा, श्रम, अभ्यंजन, उष्णता, पवव मल धारण, स्नेह स्वेद औषधी व तेज (अग्नि) विभ्रम, मनसंताप

पर्वतारोहण, तृणपुष्य गंध

चतुर्थमास पूर्व के ज्वर की चिकित्सा -

एक दिन उपवास पश्चात स्नेह ग्हीन पेया । नीक्षणाल्पान स्वेद आयास त्याग ।

- 1) यवागु पान से दोषों का हास होने पर यूष सह अन्नपान
- 2) यूष प्रयोग से दोषों का हास होने पर मांसगस व क्षीर प्रयोग करे ।
- 3) औषधी प्रयोग निषेध

चतुर्थमास के पश्चात ज्वर आने पर चिकित्सा -

दोषानुबन्ध नुसार चिकित्सा करे । वात या पित या कफ ज्वर का ज्ञान करके मध्यम क्रिया (न अधिक मन्द न अधिक तीक्ष्ण) करे । उपद्रव बल, सत्व व गर्भावस्था नुसार लेखनी क्रिया करे ।

गर्भिणी मे पंचकर्मोक्त विविध उपचार वरने पर उपद्रव - (काश्यपोक्त)

- 1) तरुण ज्वर मे अभ्यंग - गर्भाधात
- 2) नस्य - हीनांग युक्त गर्भ, गर्भिणी मे अरोचक व उसका प्राणक्षय होता है ।
- 3) धूमपान - कुणि, अन्ध, दुर्वलेद्रिय, विवर्ण, गर्भपान
- 4) शिरोविरेचन - काण, कुणि, पक्षहत, पीठसर्पि, गर्भस्तंभ (चरकोक्त)
गर्भाधात, वातगोगी गर्भ (काश्यप)
- 5) स्वेदन - पित्र प्रकोप से गर्भच्यावन (पहन), गर्भ स्थिरत्व पश्चात स्वेदन से गर्भ विवर्णता
- 6) वमन - गर्भव्यापद, आणगर्भज्ञान (चरक), काश्यप - गर्भाधात
- 7) विरेचन - गर्भाधात
- 8) आस्थापन अनुवासन - हीनांग गर्भ या गर्भस्त्राव

गर्भिणी उदावर्त -

गर्भिणी को आठवे मास मे उदावर्त के कारण विवर्ध हो तो उसे अनुवासन साथ न समझाकर वातघन द्वय स्थित आअस्थापन दे (वाग्मट)

गर्भिणी को आस्थापन व अनुवासन वस्ती दानार्थ स्थिती - न्युजन

गर्भिणी को आक्रान्त करनेवाली जातहारिणी या रेवती -

तस्माज्जातहारिणी पुष्ट हन्ति, वपुष्ट हन्ति, गर्भश्च हन्ति, जाताश्च हन्ति, जायमानांश्च जनिष्वमानांश्च हन्ति ।

जातहारिणी -

- 1) पुष्ट (आर्तव) 2) वपु (शरीर) 3) गर्भ 4) उत्पन्न, उत्पव्यमान प्राणीमत्र का नाश करती है ।

जातहारिणी भेद -

- अ) साध्यासाध्यता द्विती से - 3
 - 1) साध्य -10 2) याप्य 3) असाध्य
- ब) लोकभेद से - 3
 - 1) दैवी 2) मानुषी 3) तिरशीन
- 1) मानुषी भेद - 4 1) वर्णा 2) वर्णन्तरा 3) लिंगिनी 4) कारुकी
- 2) तिरशीन भेद - 5 1) शकुनी 2) चतुष्पदी 3) सर्पा 4) मत्सी 5) वनस्पती

1) शुष्क रेवती	आषोडवर्षा स्त्री पूजा न पश्यति, प्रम्लानबाहुरकुचा (न्लान बाहु व मितंब)
2) कटसभग	विना पूज्यं तु या नारी यथाकालं प्रणश्यति । कृश, हीनवला
3) पुष्पध्नी	वृथा पूष्पं तु या नारी यथाकालं प्रपश्यति ।(व्यर्थ/निनाफल पूष्प) स्थूल लोमशगण्डा
4) विकुटा	काल व प्रमाण मे विषम पूष्प, अनिमित्त वल की गलानी
5) परिस्त्रृता	कृश स्त्री द्वारा अभोद्धण स्त्राव,
6) अण्डधनी	डंडी का आलक्ष्य (दिर्खाड देने वाला), आलग्न (सलग्न) अण्ड (स्त्रीवीज) पतन होता है
7) दुर्धग	नितिनिवृत्त देहांग यस्या गर्भो विनश्यति । जिस गर्भ का देहांग बन गया है पर स्पष्ट नहीं है गिर जाता है
8) कालगत्री	सम्पूर्णीग यदा गर्भं हरते जातहारिणी
9) मोहिनी	यथा विषज्जते गर्भः प्रतीनो वाऽथ मृचते । जिसका संसक्त होकर या संसक्त न होकर गिर जाता है । स्त्रीविनाशाय प्रोक्ता मोहिनी जातहारिणी
10) स्नमधनी	यस्या न स्पन्दते गर्भः स्नमधनी नाम सा स्मृता
11) क्रोशना	उदगम्यो यथा क्रोशेत क्रोशना नाम सा स्मृता । क्रोश – उपद्रव करना है

याप्य जातहारिणी –

1) नाकिनी – जिसकी संतान मृत उत्पन्न होती है ।

2) पिशाचि – जातं अपत्यं तु भृद्यो विनश्यति , मांसभृदी

अन्य याप्य जातहारिणी – दिवसानुसार मारकता / घातकता

3) यक्षी – दिने दिन घातक

4) आसुरी – जिसके दिन घातक

5) इन्द्रि – चतुर्वा दिन घातक

6) वारुणी – पंचव दिन घातक

7) पष्ठी – षष्ठी दिन घातकता

8) भीरुका – सातवे दिन घातकता

9) याम्या – अष्टम दिन घातक

10) मानगा – नवम दिन घातक

11) यदकाली – दशम दिन घातक

12) गौड़ी – एकादश दिने घातक

13) वधिका – ब्राह्म दिने घातक

14) काष्ठिका – त्र्योदशे घातक

15) कपानमालिनी – चतुर्दशे घातक

16) पिंगलपिच्छिका – पंचमश दिने घातक

क) असाध्य जातहारिणी –

1) वश्या – नर्भं पंचमं पट्ट या सप्तम नाम से मृत हो जाता है ।

2) कुलक्षयकरी – मियन्ते दारका यस्या; कन्या जीवन्ति यन्तः । पृत्र मृष्ट होते हैं; कन्या यन्त से जिवीत रहती है

3) पुण्यजननी – जातं जातं अपत्यं तु यस्याश्च मियते स्त्रीयः ।

4) पौरुषादिनी – जिस स्त्री के सन्नान 16 वर्ष अवस्था प्राप्त करने पूर्व मर जाती है

5) कर्कोटिकी – यमज गर्भ मे एक मृत हो और दुसरा ग्रह मे पिढीत हो

6) इन्द्रूबडवा – यमज मियते वस्या एक वा उभयम् वा । यमज मे एक या उभय या उभय मर जाते हैं

7) वडवामुखी – एषाभीप्रभवयोरेकैश्चोन्नियते । एक नाभी प्रभावा मे एक प्रथ मृत होकर पश्चात दुसरा मृत हो

गर्भ व्यापद –

शारंगधरानुसार गर्भव्यापा – 8

उपविष्टक

गृदगर्भ

नामोदर

जरायु दोष

मक्कल

गर्भपात

मूढगर्भ

विष्कम्भ

गर्भपात व गर्भस्त्राव -

आचतुर्थात् ततो मासात् प्रस्त्रवेद् गर्भविच्युतिः ।

ततः स्थिरशरीरस्य पातः पंचम षष्ठयोः ॥

1) गर्भस्त्राव – चार मास तक गर्भपतन

2) गर्भपात – पंचम व षष्ठ मास मे गर्भपतन

गर्भस्त्राव वा पात हेतु -

चरक – क्रोध, शोक, भय, व्यवाय, व्यायाम, संक्षोभ, उपवास, वेगसंधारण, विषमाशन, शयनप्रस्थानक्षुत्पिपासातियोग

सुश्रुत – ग्राम्यधर्म, यानवाहन अध्वगमन, प्रस्खलन, प्रपतन प्रपीडन, अभिधात, कटुतिक भोजन,

सुश्रुतानुसार गर्भविच्युति कारण –

कमिवान अभिधातैस्तु तदेवोपदृतं फलम् ।

पतति अकालेषि तथा स्याद् गर्भविच्युतिः ॥

गर्भ मे आमान्वय होने पर चिकित्सा विरुद्धोपक्रमत्व –

यस्या: पुनरगमान्वयात् पृष्ठदर्शनं स्यात्, प्रायः तस्या तद् गभोपघातकरं भवति, विरुद्धोपक्रमत्वात् । च. शा. 8

(तृतीय मास) मे आमान्वय के कारण पृष्ठदर्शन होता है तो विरुद्धोपक्रम होने के कारण गर्भघातक होना है

गर्भस्त्राव के उपद्रवों की चिकित्सा –

1) गर्भस्फुरण – उत्तालादी गण सिद्ध शीरावन

2) मूत्रसंग – दर्भादी (दर्भ कुश काश) सिद्ध शक्तरायुक्त शीर

3) आनाह – हिंगु, सौवर्चल वचा सिद्ध शीर

4) ज्वर – संशमन व पाचन चिकित्सा

गर्भचालन चिकित्सा – प्रथम ते भवम मास – वर्षन हारीत व योगलाकर

गर्भपात प्रतिषेधार्थ वरण बंध –

काश्यप संहिता – रेवती कल्पाध्याय उद्देश – गर्भपातनिवारण

मंत्र चिकित्सा स्वरूप

काल – बन्धो हि गर्भेण्या : क्षयति प्रागष्टमानामासात्, अतः उर्ध्वं प्रतिषेधस्तस्यान्यत्र ।

गर्भशोष – (चरक)

आहारमाप्नोति यदा न गर्भः शोषं समाप्नोति परिस्तुतिं वा ।

तं स्त्री प्रसुते सुचिरेण गर्भः पृष्ठो यदा वर्षगणैरपि स्यात् ॥ च. शा. 2/15

वाताभिपन्न गर्भ – (सुश्रुत)

वाताभिपन्न एव शुष्पति गर्भः । स मातुः कुक्षि न पूरयति मन्दं स्पन्दते च । सु. शा. 10/57

लीन गर्भ –

1) चरक – यस्या: पुनर्गर्भः प्रसुप्तो न स्पन्दते च. शा. 8/28

2) सुश्रुत – वातोपद्रवगृहीतत्वात् स्त्रोतसाम लीयते गर्भः, सो अतिकालमविष्टमानो व्यापदयते । सु. शा. 10

बात उपद्रव के कारण स्त्रोतस मे लीन होता है, अतिकाल अविष्टीत रहने से व्यापदित होता है

3) अष्टांगसंग्रह – यस्या: पुनः वातोपसुष्ट स्त्रोतसि संलीनो गर्भः प्रसुप्तो न स्पादते तं लीनमित्याहुः ।

4) अष्टांगहुदय – लिनाख्ये निःस्फुरे । अ.हु. शा. 2/18

	उपविष्टक	नागोदर (उपशुष्कक)
हेतु	गर्भिणी द्वारा उष्ण नीक्षण द्रव्योपयोग	उपवास व्रतकर्म परायण, स्नेहदेशी गर्भिणी
संप्राप्ति	गर्भो वृद्धीं न प्राप्नोति निःस्त्रुतव्यात्	गर्भो वृद्धीं न प्राप्नोति परिशुष्कत्वात्
लक्षण	पृथगदर्शन, योनिस्त्राव, स काले अवनिष्ठते आनेमानं	अस्यन्दनश्च भवति, स काले अवनिष्ठते अनिमानं
अष्टांगसंग्रह	अपरिहीयमान एव स्फुरति न च कुक्षिर्वर्वर्धते	परिहीयमाणो गर्भध्वरात् किंचित् स्पन्दते कुक्षिश्च वृद्धोऽपि परिहीयते नदुपशुष्ककं ।
अष्टांगहुदय	सण्जातसारे महनि गर्भे योनिपरिस्त्रवात् । वृद्धिभपाप्नुवन् गर्भः कोष्ठे तिष्ठति सस्फुरा । उपविष्टकमाहुस्तं वर्धते तेन न उदरम् ॥	शोकोपवासस्त्रक्षादयैरथवा योनि अतिस्त्रवात् । वाने कुरुद्वे कङ्कः कष्टेदगर्भो नागोदरं तु तम् ॥ उदरं वृद्धमप्यन्न हीयते स्फुरणं चिरात् ॥

उपविष्टक व नागोदर चिकित्सा –

- 1) भौतिक अधिकागेत (वचारी/महापैशाचिक) यत्
- 2) जीवनीय मधुर औषधीसिद्ध घृत
- 3) आमगर्भ उपयोग
- 4) सुश्रुत – लीन गर्भ समान चिकित्सा
- 5) भावप्रकाश – धात्यकुटन
- 6) अरुणडन – हर्षण चिकित्सा

गर्भक्षय –

गर्भक्षये गर्भं अस्यादन अनुन्तत्वकुक्षिता । सु. सु 15/12

चिकित्सा – तत्र प्राप्त बस्तीकालावा: क्षीरवस्तीप्रयोगो गैद्यानोपयोगशेति ।

प्राप्त बस्ती काल – आठदम

गर्भवृद्धी –

गर्भो जठराभिवृद्धिं स्वेद च । मु. सु 15/16

भूतहुत या नैगमेपहुत गर्भे –

चरक – वान द्वारा निरुद्ध आर्तव अज्ञ व्यक्ति उसे गर्भ समझ लेते हैं । वह अवस्थ्य आर्तव गर्भसमान लक्षण निर्माण करता है । वह रुद्ध आर्तव सूर्य अनि श्रम शोक आदि से प्रवृत होता है ; उसे भूतहुत कहते सुश्रुत – शुक्रशोणित वायुनाभिप्रपन्नं अवक्रान्तजीवम् आधापवर्णि उदरम् ।

तत्र कदाचित् यदुच्छयौपशान्तं नैगमेषापहुतमिती भाषते ।

वायु द्वारा पिंडीत शुक्र शोणित जीवात्मा की अवक्रान्ति पश्चात उदर आध्मान कर देते हैं, वह कदाचित्

स्वयमेव शान्त हो जाता है उसे नैगमेषापहुत कहते हैं ।

काशय – रक्तगुल्म के भेदन के बाद की अवस्था को भूतहुत गर्भ मानते हैं ।

जरायुदोष –

विकृतजरायुणां छादनं जरायुदोष । शारंधर

रक्तगुल्म –

डब्बीयो मैं होने का कारण –

चरक – शोणितगुल्मस्तु स्त्रीयो एव भवति न पुरुषस्य – गर्भकोष्ठार्तवागमनवैशेष्यात् । च. ति 3/13

अष्टांगसंग्रह – रक्तगुल्मस्तु गर्भकोष्ठार्तवगमनवैशेष्यात् पास्तन्याद् अतैशारद्याद् अपचारानुरोधाच्च स्त्रीय एव भवति

रक्तगुल्म कारण व संप्राप्ति -

- 1) पारतन्त्र्याद्
- 2) अवैशारद्यात्
- 3) सततमुपचारानुरोधात्
- 4) वेगानुदीर्णानुरोधाद्
- 5) आमगर्भपतनात्
- 6) वातप्रकोपक आहार सेवन

वातप्रकोप - योनीमुखप्रवेश - आर्तवरोध - कुक्षि अवरोध (च.नि.)

च. चि. 5/18- ऋतावनाहारतया भयेन विरुद्धाणैर्वेगविनिग्रहैश्च ।

स्तंभनोल्लेखनयोनिदोषे: गुल्मः स्त्रियं रक्तभवोऽभ्युपैति ॥

काश्यपोक्त रक्तगुल्म हेतु

दुष्प्रजाता, आमगर्भा, गर्भस्त्रावा, बहुमैथुना, अन्तक्षरगर्भकामा (गर्भ की बहुत ज्यादा डच्छा करनेवाला), बहुशीतार्तवा, उदावर्तनशीला, वातलन्त्र निषेविणी, - दातप्रकोप - योनी स्थाने गमन- आर्तव अवरोध - रक्तगुल्म लक्षण -चरकोक्त-

तस्याः शूल कास अतिसार छर्दि अतिसार अरोचक अविषाक अंगमर्द निदा आलस्य स्तैमित्य कफासेक समुपजायते, स्तनयोश्च रतन्यम् ओष्ठयोः स्तनमेंडलयोश्च कार्षणम्, अत्यर्थ रलानि: चक्षुषो, मृच्छा, हुल्लास, दौहुद, श्वयथुश्च पादयोः, इषच्च उद्गारे रोपणात्या:, योन्याशार्दलन्त्रम्, अपि च योन्या दौर्गन्ध्यमास्त्रानश्चोपजायते केवलशास्या गुल्मः पिण्डित एव स्पन्दते, तामागर्भा गर्भिणीमित्याहुर्मृदा: । च. नि. 3/14

चिकित्सास्थानोक्त -

- 1) यः स्पन्दते चिकित्सा सशूलः
- 2) पिण्डित एव
- 3) न अंगैः
- 4) समगर्भलिंग

सुश्रूत -

दाह , पिण्डा, पित्तज गुल्म समान लिंग (स्वेद, ज्वर, इ.), न स्पन्दते, न उदरमेति वृद्धिं,

काश्यप -

कासते शूल्यते चैव ज्वर्यते अथ अतिसार्यते । मन्यते सर्वगान्नाणि मूर्च्छितानि गुरुणि च ॥
तमोऽस्या जायतेऽभीक्षणं काश्यं च एव नियच्छति । वमत्यभीक्षणो भुक्तमन्तं चास्ये न रोचते ॥
जायन्ते चोदरे गण्डा नीलं नास्या: पटूशते । स्तनान्तरं च नाभिक्षु लोमगनी च मूर्च्छिता ॥
ओष्ठो च कृष्णौ भवतस्तथैव स्तनचुचुकौ । पयोधरौ प्रसिद्धेते दौहुदं च निगच्छति ॥
नानारसान प्रार्थयते निष्ठिविति मुहुमुहुः । शुभादुद्विजते गन्धाद्वर्णश्चास्या: प्रसीदति ॥
गर्भिण्या यानि रूपाणि तानि संदृश्य तत्त्वतः । वर्षाणि हरति व्याधीं गर्भोऽयमिती दुःखिता ॥

रक्तगुल्म में पाण्डुता का कारण -

रक्तगुल्म रसवाही नाडी का पीडन करता है, - उससे रस का सम्यक प्रकार से बहन न होकर -पाण्डुता

रक्तगुल्म उपद्रव -

ज्वर अकृचि कास श्वास शोष काश्य अरति व्यथा शोफ

रक्तगुल्म व गर्भ भेद

गर्भ	रक्तगुल्म
अंगप्रत्यंगवान् गर्भः तैः एव च विचेष्टते	रक्तगुल्मस्तु वृत्तः स्यान् लोक्यतत च विचेष्टते
स्थानात् स्थानं ब्रजन् गर्भो व्याकिञ्चं परिवर्तते (वधनरही)	नामः अधस्नाद् गुल्मो अथम् अव्याविधिं विवरते
आनुपूर्वेण गर्भश्च अहनि अहनि वर्धते	विपरीतस्तु हि गुल्मस्तु मन्दं मन्दं विवर्धते
तां तामवस्थां गर्भस्तु मासि गागि प्रपद्यते	— — —
गर्भिणी न अनिमित्तं च ज्वर्यते दद्यने अपि वा	गुल्मिनी हि अनिमित्तं तु ज्वर्यते दद्यने अपि वा

रक्तगुल्म चिकित्सा-

मासे व्यायामे दशमे विकित्य । चरक,

गर्भकालातिगमे चिकित्य - सुश्रूत

केचिद् इच्छन्ति गुल्मस्य मासाद् आदशमात् परम् ।

चिकित्सा सिद्धान्त -

सर्वेष्वपि खलु एतेषु गुल्मेषु न कष्टित वाताद्वाते सम्भवति गुल्म । च. नि 3/16

अतः वातघ्न चिकित्सा

रक्तगुल्म चिकित्सा सूत्र -

चरक - रौथेन्द्रय तु गुल्मस्य नर्मकालविकारो । स्तिर्घस्तिर्घ शारारायै दद्यात् स्तेनविचयनम् ॥ च.चि. 5/172

सुश्रूत - अप्तगुल्मावत चिकित्सा , रक्तभेदन

काशयण - रक्तगुल्मे प्रथमतो वृक्त्या ल्नेहोपादादनम् । शस्तरं वाहूस्मिरायाश्च वैपने पाकवारणम् ॥

तथा संशोधनीयं च ठोऽठोशाववर्धणम् ॥ १ ॥

अौषधी चिकित्सा -

१) गुल्म शिथीलीकरणात् - पित्ताशे दायुसध्व तेल वा घृतादान

२) रक्तपित्ताद्वारा (नीलोत्तला धारो) मधु व धूत , लघून व मधु पान

३) गुल्म भेदनार्थं तोक्षणा औषधी प्रयोग

काशयपानुसार गुल्म शिथीलीकरणार्थ - कल्याणक, पंचगव्य, षटपल, तिकसर्पि पान

४) चरक - योनीविशोवक चर्चा

५) दुग्ध, गोमूत्र क्षार वृक्त दशमूल व्याथ वस्ती (उत्तरवस्ती), पिपलल्पादी घृत उत्तरवस्ती

गुल्मभेदन पश्चात् चरकानुसार चिकित्सा -

१) अडश्वमाने रुधिरे - दद्याद् गुल्मापभेदनम् (चरक)

२) अवर्तमाने रुधिरे हितं गुल्म प्रभेदनम् (वारभट)

३) प्रवर्तमाने रुधिरे दद्याद् मासरसौदनम्

४) घृत तैलेन च अध्यंगं पानार्थं तस्मीं सुगम्

रक्तान्तिप्रवृत्ती चिकित्सा -

रुधिरे अतिप्रवृत्ते तु रक्तपित्तहरी क्रिया: । कार्या वातरुगार्त्तायाः सर्वा वातहरी पुनः ॥ च. चि.

योनीव्यापद

वर्णन = चरक चि. 30 सुश्रुत उ. 38 अ.सं उ. 38 अ.हु.उ. 33 का.सू 27
यद् अपत्यानां मूलं नार्याः । च.चि. 30

योनीव्यापद हेतु -

मिथ्याचारेण ताः स्त्रीणां प्रदेष्टेनार्तवेन च ।
जायन्ते बीजदोषाच्च दैवाच्च श्रुणु ताः पृथक ॥ च.चि

- 1) मिथ्या आहार आचार
- 2) दुष्ट आर्तव
- 3) बीजदोष
- 4) दैव

अष्टांगसंग्रहोक्त हेतु -

- | | | |
|--------------------|-----------------|--------------|
| 1) दुष्टभोजन | 2) विषम अंग शयन | 3) भृश मैथुन |
| 4) दुष्टार्तव | 5) बीज दोष | 6) दैव |
| 7) अपद्रव्य प्रयोग | | |

1) वातज योनीव्यापद -

हेतु - वातल आहार, वातल चेष्टा
लक्षण - योनेस्तोदं सावेदनम्, स्तंभ, पिपिलिकासृप्तिमिव, कर्कशता सुंप्ति, आयास
स्त्राव स्वरूप - सशब्द, फेन रूक, तनु रूक्ष आर्तवा
वाग्भट - स्वनं (योनीद्वारे शब्द/ ध्वनी)
भृशं वंक्षण पार्श्वादौ व्यथां गुल्मं क्रमेण च ।

2) पित्तज योनीव्यापद -

हेतु - कटु अम्ल लवण क्षारादी सेवन
लक्षण - दाह पाक ज्वर
स्त्राव / आर्तव स्वरूप - नील पीत असित (कृष्ण) आर्तव
भृश उष्ण कुणपस्त्राव
वाग्भट .. पूतीगंध व ज्वारान्वित

3) कफज योनीव्यापद -

हेतु - कफकर व अभिष्यंदी आहार
लक्षण - कण्डु अल्पवेदना, योनीपिच्छिलता, शीतता, पाण्डुवर्ण
स्त्राव / आर्तव स्वरूप - पांडु पिच्छिलार्तव वाहिनी

4) सान्त्रिपातज योनीव्यापद -

लक्षण - दाह, शूलात्म
आर्तव / स्त्राव स्वरूप - श्वेत पिच्छिलवाहिनी

5) असृजा योनीव्यापद -

रक्तपित्तकर्नर्नार्या रक्तं पित्तेन दूषितं । अतिप्रवर्तते योन्यां लब्धे गर्भेऽपि असृजा ॥

हेतु - रक्तपित्तकर आहार

संप्राप्ती – रक्तं पित्तेन दूषितं ।

लक्षण – अतप्रवर्तते योन्यां लब्धे गर्भेऽपि ।

लब्धगर्भ = गर्भप्राप्तीपश्चात् भी अति रक्त प्रवर्तन ।

अष्टांगसंग्रह –

रक्तयोनी – रक्तयोन्या ख्यात् सृगति असृगेन ।

सुश्रुत –

लोहितक्षरा – सदाहं प्रक्षरति अस्त्रं यस्यां सा लोहितक्षरा ।

दाह सह रक्तक्षरण

6) अरजस्का –

संप्राप्ती – योनीगर्भाशयस्थं चेत् पितं संदूषयेत् असृक् ।

लक्षण – सा अरजस्का मता काश्यं वैवर्ण्यं जननी भृशम् ।

अरजस्का – रसक्षय = काश्यं वैवर्ण्यं

चक्रपाणी – अरजस्का इति अनार्तवा ।

अष्टांगसंग्रह –

लोहितक्षया – वातपित्ताभ्यां क्षीयते रजाः ।

सदाह काश्यं वैवर्ण्यं यस्याम् सा लोहितक्षया ।

अ+ रज = रज क्षय रसक्षय – रजक्षय = काश्यं वैवर्ण्यं

7) अचरणा – (अचरण – अधावन)

योन्याम् अधावनात् कण्डूं जाताः कुर्वन्ति जन्तवः ।

सा स्यादचरणा कण्डवा तथा अतिनरकांक्षिणी ॥

हेतु –

योन्यां अधावनात्

सप्राप्ती –

कण्डुः जाताः कुर्वन्ति जन्तवः ।

लक्षण –

अतिनरकांक्षिणी

सुश्रुत – मैथुने अचरणां पूर्वम् पुरुषात् अतिरिच्यते । (मैथुन समये पुरुष के पूर्व स्खलन होता है)

अष्टांगसंग्रह – विष्लुताख्या तु अधावनात् । संजातजन्तुः कण्डुला कण्डवः च अतिरिप्रिया ॥

8) अतिचरणा – (अतिचरण – अतिव्यवाय)

पवनो अतिव्यवायेन शोफसुप्तिरूजः स्त्रीयाः । करोति कुपितौ योनौ स अतिचरणा मता ॥

अतिव्यवाय

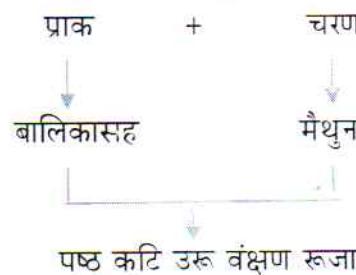
कुपित वात योनी स्थाने गमन

योनीस्थाने शोफ सुप्ति रूजा

अतिचरणा

सुश्रुत – बहुश च अतिचरणाद् अन्या बीजं न विन्दन्ति । (अन्य बीज प्राप्ती नहीं होती = बीजधारन नहीं)

9) प्राकचरणा (प्राक – बाला चरण – मैथुन) मैथुनाद् अतिबालायाः पृष्ठकटि उरुवंक्षणम् । रूजन् दूषयते योनिं वायुः प्राकचरणा हि सा ॥



वागभट – पृष्ठ जंघा उरु वंक्षण रूजा

10) उपप्लुता – (उप – वात प्लुत – कफ)

हेतु – गर्भिणीद्वारा – 1) इलेघ्मलाभ्यास

2) छर्दि निश्चास निग्रह

संप्राप्ती – क्रुध्द वायुद्वारा योनीस्थित कफदुष्टी

लक्षण – पांडुं सतोदं आस्त्रावं ध्वेतं स्त्रवति वा कफम् ।

कफवात आमयव्याप्ता सा स्याद् योनिः उपप्लुता ॥ (सान्निपातज मे स्त्राव सम)

11) परिप्लुता –

हेतु – नृसंवास समये (मैथुन समये) पित्त प्रकृती स्त्री द्वारा क्षवथु उक्तार धारण

संप्राप्ती – पित्त संमूच्छितः वायुः योनी दूषयति स्त्रियः । (पित्त संमूच्छित वायुद्वारा योनी दुष्टी)

लक्षण – शूना स्पर्शाक्षमा सार्ति नीलपीतंमसृकस्त्रवेत् ।

श्रोणीवंक्षणपृष्ठार्ती ज्वरार्तयाः परिप्लुता ॥

दोषाधिक्य –

वात – श्रोणी वंक्षण पृष्ठार्ती

पित्त – शून स्पर्श अक्षम , नील पीत असृक स्त्राव ज्वर

सुश्रुत – परिप्लुतायां भवन्ति ग्राम्यधर्मे रूजा भृशम् । (ग्राम्यधर्म – मैथुन)

संग्रह / हुदय – बस्तिकुक्षिगुरूत्वं अतिसार अरोचक कारिणी । श्रोणीवंक्षण रूक्तोद ज्वरकृत सा परिप्लुता ।

12) उदावर्तिनी –

हेतु – वेग उदावर्तन

संप्राप्ती – योनी उदावर्तयते अनिलः । (वायुद्वारे योनी का उदावर्तन)

लक्षण – सा रूगार्ता रजः कृच्छ्रेण उदावर्त विमुण्चति । (रज का कृच्छ्रता से विमुचन)

आर्तवे सा विमुक्ते तु तत् क्षणं लभते सुखं ॥

रजसो गमनाद् उर्ध्वं ज्ञेयो उदावर्तिनी बुधैः ।

सुश्रुत – चरकोक्त + स फेनिलं उदावर्ता रजः कृच्छ्रेण मुंचति ।

13) कर्णिनी –

अकाले वाहमानाया गर्भेण पिहितोऽनिलः ।

कर्णिकां जनयेद् योनौ इलेघ्मरक्तेन मूच्छितः ॥

रक्तमार्गवरोधिन्या सा तया कर्णिनी मता ।

हेतु - गर्भिणीद्वारा अकाल प्रवाहण
संप्राप्ति - कुपित वात श्लेष्म रक्तासह मूर्च्छित होकर योनीस्थाने कर्णिका (ग्रंथी) उत्पत्ति
 ↓
 रक्तमार्गावरोधिन्या (आर्तव मार्गावरोध)

संग्रह - कर्णिकां जनयेद् योनौ रजोमार्गनिरोधिनीम् ।

14) पुत्रजी -

रौक्ष्याद् वायुर्यदा गर्भं जातं जातं विनाशयेत् । दुष्टशोणितजं नार्याः पुत्रज्ञी नाम सा मता ॥
 रुक्ष गुण से वातप्रकोप दुष्टशोणित

गर्भं जातं जातं विनाशयेत् = पुत्रज्ञी

सुश्रुत - स्थितं स्थितं हन्ति गर्भम् पुत्रज्ञी रक्त संस्त्रवात् ।

संग्रह / हृदय = जातज्ञी

जातज्ञी तु यदा अनिलः

जातं जातं सुतं हन्ति रौक्ष्याद् दुष्टार्तवात् ।

15) अंतर्मुखी -

अतितृप्ताया (पूर्ण भोजन करने पर) स्त्री द्वारा मिथ्यास्थित अंग (विषम अंग)
 स्थिती मे मैथुन

अन्नद्वारा योनीस्थित वात के उत्पीडन

:

अस्थीमांसयुक्त (श्रोणीगुहा) मे वायुअ का गमन

वक्रयते आनन (योनी मुख वक्रता)

भृशार्ति मैथुन अशक्ता योनीः अंतर्मुखी मता । (मैथुन अशक्तता)

16) सूचीमुखी -

गर्भस्थाया: स्त्रिया रौक्ष्याद् वायुर्योनि प्रदूषयन् ।

मातृदोषात् अणुद्वारं कुर्यात् सूचीमुखी तु सा ॥

गर्भावस्था मे वातकर आहार विहार

रुक्ष गुण द्वारा वातप्रकोप

योनीं प्रदूषयेत्

गर्भशयस्थित स्त्री (पुत्री) गर्भ के योनीमुख का सूचीयुक्त होना

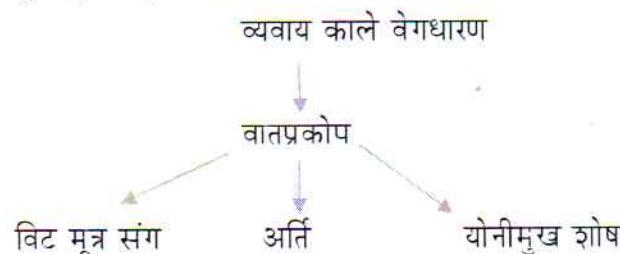
सुश्रुत - सूचीवक्त्रा अतिसंवृता

संग्रह / हृदय - स्त्रिया योनीं अणुद्वारं कुर्यात् सूचीमुखी इति स्यात् ।

अतिसंवृत = सूचीमुख = अणुद्वार

17) शुष्का योनी –

व्यवायकाले रून्धन्त्या वेगान् प्रकुपितो अनिलः ।
कुर्यात् विष्मूत्र संगार्ति शोषं योनीमुखस्य च ॥



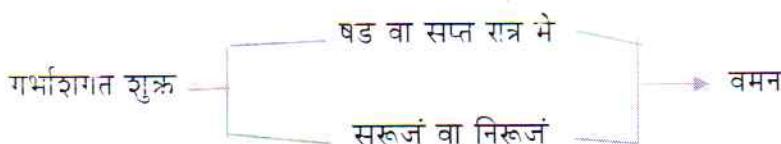
संग्रह / हुदय –

वेगरोधात् रूतौ वायुः दुष्टौ विष्मूत्र संग्रहम् ।
करोति योनीशोषं च शुष्काख्या स अतिवेदना ॥

18) वामिनी –

(वामिनी = वमन – शुक्र वमन)

षडहात् सप्त रात्रात् वा शुक्रं गर्भाशयगतं ।
सरूजं नीरूजं वा अपि या स्त्रिवेत् सा तु वामिनी ॥



सुश्रुत –

सवातं उद्दीरेत् बीजं वामिनी रजसा युतम् ।
रजयुक्त बीज का वातसह उद्दीरण

19) षंडी –

हेतु – बीजदोषात्

संप्राप्ति – गर्भस्थ मारुत्य हताशया

वातद्वारा व बीजदोषद्वारा गर्भाशयगत गर्भ (पुत्रीगर्भ) के आशय (गर्भाशय) का हनन

लक्षण – नद्वेषिणी अस्तनी

साध्यासाध्यता – अनुपक्रम्य (असाध्य)

सुश्रुत – अनार्तवा अस्तनी षंडी खरस्पर्शा च मैथुने ।

20) महायोनी – (महा = विष्टम्भ / विस्तार)

हेतु – विषमं दुःखशाय्यायां मैथुनात् कुपितो अनिलः । (विषम व दुःखकर शाय्या पर मैथुन)

संप्राप्ति – गर्भाशयस्थ योन्याश्र मुखं विष्टमभयेत् स्रीया: ।

(गर्भाशय व योनीमुख विस्तार)

लक्षण – असंवृतमुखी स अरति रूक्षफेनास्त्रवाहिनी ।

(असंवृतमुखी – मुख विवृतत्व)

मांसोत्सना महायोनीः पर्व वंक्षणशूलीनी ।

संग्रह / हुदय –

दुष्टौ विष्टभ्य योनिं आस्य गर्भ कोष्ठ च मारूतः ।

कुरुते विवृताम् स्त्रंसताम् वातिकीम् इव दुःखिताम् ॥

उत्सन्न मांसा ताम् आहु योनीं महारूजाम् ॥

योनीव्यापद स्थितीनुसार वर्गीकरण –

अ) मैथुनकालीन =

- 1) परिप्लुता – व्यवायकाले क्षवथु उद्धार धारण
- 2) अंतर्मुखी – अंततप्त भोजनपश्चात मिथ्यास्थित अंग मे व्यवाय
- 3) शुष्का – व्यवाय काले वेगधारण
- 4) महायोनी – विषम व दुःखकारक शाय्या पर मैथुन

ब) प्रसवकालीन योनीव्यापद –

- 1) कर्णिनी – अपाले प्रवाहण

क) गर्भवस्थाकालीन योनीव्यापद –

- 1) असृजा – रक्तपित्तकर आहार
- 2) उपप्लुता – इलेषालाभ्यासा छर्दि निश्चास निग्रहात् ।
- 3) सूचीमुखी – गर्भवस्था काले वातकर आहार विहार

सुश्रुतोल्ल अतिरीक योनीव्यापद – :

- 1) वंध्या – वंध्या नष्टार्तवा विद्यात् ।

दोष – वात

नष्टार्तवा – अरजस्का

अनार्तवा – वंध्या

- 2) विप्लुता – विप्लुता नित्य वेदना ।

दोष – वात

- 3) प्रस्त्रंसिनी –

प्रसंस्त्रिनी स्यंदते क्षोभिता दुःप्रसूश्र या ।

दोष – पित्त (प्र – पित्त स्त्रंसिनी – स्यंदन)

- 4) अत्यानन्दा –

अत्यानन्दा न संतोषं ग्राम्यधर्मेण गच्छति ।

न संतोषं – तृप्ती न होना ग्राम्यधर्म – मैथुन

- 5) फलिनी –

अतिकायगृहीस्तायां तरूण्याः फलिनी भवेत् ।

बृहत लिंगयुक्त पुरुष के साथ मैथुन से स्त्री मे फलिनी योनी उत्पत्ति
माधव / भा. प्र. / यो.र. = अण्डिनी (फलिनी का नामकरण)

शारंगधर – खंडिता

योनीव्यापद उपद्रव –

- 1) न शुक्रं धारयेत्

- 2) गर्भ न गृह्णाती

3) गुल्म अर्श प्रदरादी व वातादी रोग उत्पत्ती

योनीव्यापद दोषाधिक्य

कफज = 1	पित्तज = 3	वातज = 11
कफज योनीव्यापद	1) असृजा 2) अरजस्का 3) पित्तज योनीव्यापद	1) उदावर्तिनी 2) पुत्रघ्नी 3) अचरणा 4) अतिचरना 5) प्राकचरणा 6) सूचीमुखी 7) अंतमुखी 8) शुष्का 9) षट्ठी 10) महायोनी 11) वातजा
वात पित्तज = 2	वात कफज = 2	सान्निपातज = 1
1) परिप्लुता 2) वामिनी	1) कर्णिनी 2) उपप्लुता	सान्निपातज

योनीव्यापद चिकित्सा –

1) वातज योनीव्यापद –

स्नेहन व स्वेदन – लवणतैलयुक्त पिंड स्वेद / नाडीस्वेद / कुंभीस्वेद / ग्रस्तर / संकर स्वेद
पिचू धारण, बस्ती चरकानुसात गुडूच्यादी तैल बस्ती

2) पित्तज योनीव्यापद –

रक्तपित्तधन क्रिया, शीत क्रिया
सेक अभ्यंग पिचू आदी
जीवनीय द्रव्य सिध्द घृतपान

3) कफज योनीव्यापद –

रुक्ष उष्ण चिकित्सा
कटु रसात्मक व गोमूत्र युक्त बस्ती
श्यामा त्रिवृत कल्क धारण

3) सान्निपातज योनीव्यापद –

विमिस्त्र क्रिया
वारभट – साधारण कर्म
दशांग्नी व श्रीमदा क्वाथ पिचू धारण

विकृत योनी चिकित्सा –

स्निग्धस्विन्नां तथा योनिं दुःस्थितां स्थापयेत् पुनः ।

- 1) दुःस्थितां – स्थापयेत् पुनः ।
- 2) जिन्हां (वक्र) – पाणिनां नामयेत्
- 3) संवृतां – वर्धयेत् पुनः

- 4) निसृतां – प्रवेशयेत्
- 5) विवृतां – परिवर्तयेत्
- 6) योनीं स्थानापवृत्ता हि शल्यभूता मता स्त्रिया ।

सर्व योनीव्यापद मे वातप्राधान्य –

न हि वातादृते योनीः नारीणां सम्प्रदूष्यति ।
शमयित्वा तमन्यस्य कुर्यात् दोषस्य भेषजम्॥

चिकित्सासूत्र –

वातव्याधीहरं कर्म वातार्तानां सदा हितम् ।

वातज योनीरोग चिकित्सा – बलादी यमक स्नेह
काशमर्यादी घृत
गुडूच्यादी तैल पिचू धारणार्थ मे

पित्तज योनीरोग चिकित्सा –

बृहत शतावरी घृत

कफज योनीरोग –

योन्याः इलेष्मप्रदुष्याणां वर्तिः संशोधनी हिता ।
वर्ती – वराह पित भावीन , अर्कादी तर्ती, पिष्पल्यादी जर्ती

उदुम्बरादी तैल –

पिच्छिला विवृता वातदुष्या दारूणा योनी मे लाभकर

धातक्याती तैल – पिच्छिला स्त्राविनी योनीर्विप्लुता उपप्लुता तथा ।
उत्ताना चोन्नता शूना सिध्देत् सस्फोटशूलिनी ॥

रक्तयोनी – रक्तस्थापन चिकित्सा

पुष्पानुग चूर्ण – पित्तज प्रदर अंतर्गत वर्नन

घटक द्रव्य – पाठा जम्बु आम्रबीज इ.

पाठा व अम्बष्टा दोने का उल्लेख = द्विगुण मात्रा मे ग्रहण

संग्रहण – पुष्प नक्षत्र पर

सेवन – तानि क्षोद्रेण संयुज्य पिकेतण्डुलवारिणा

अनुपान – तंडुलोदक

अरजस्का चिकित्सा – मृग अजा आवि वाराह इ का असृक दधि या अम्लसह या घृतसह पान

प्राकचरणा व अतिचरणा चिकित्सा

वातधन द्रव्य सिध्द शतपाकी तैल का आस्थापन व अनुवासन

शताव्हादी संयाव धारण

वामिनी व उपप्लुता चिकित्सा –

स्नेहन स्वेदन ततपस्त्वात् स्नेह पिचू धारण

कर्णिनी योनी – कुष्ठ पिष्पली अर्क सैंधव इ द्रव्ययुक्त वर्ती धारन

उदावर्ता / वातज/ स्त्रस्ता योनी चिकित्सा –

त्रिवृत् स्नेहद्वारा स्नेहन व पश्चात् स्वेदन, त्रैवृत् स्नेह का अनुवासन उत्तरबस्ती

दशमूल सिध्द पय का बस्ती / पान

उपरोक्त चिकित्सा महायोनी व स्त्रस्ता योनी मे भी उपयुक्त

महायोने चिकित्सा - ऋक्ष वराह वसा + मधुर द्रव्य कषाय सिद्ध घृत पूरण पश्चात क्षोम वस्त्र बंधन

प्रसस्ता योनी चिकित्सा = सर्पिद्वारा अभ्यंग पश्चात योनी अंतःप्रवेशन

वेशवार पिंड धारण

रोहितक मूल कल्क - पांडुरे असृकदरे पिबेत्

पिच्छिला योनी - पलाशादी कल्क धारण

स्तब्ध कर्कशा योनी - वेशवार पायस कृशग्राम धारण

अष्टौ रेतो दोष - (शुक्र दोष - 8)

- | | |
|-------------------|------------|
| 1) फेनिल | 4) विवर्ण |
| 2) तनु | 5) पूती |
| 3) रुक्ष | 6) पिच्छिल |
| 7) अन्यथातुपसृष्ट | |
| 8) अवसादी | |

फलघृत /फलसर्पि -

वर्णन - अष्टांग संग्रह / अष्टांगहुदय - गुह्यरोगप्रतिषेध अध्याय

भावप्रकाश, शारंगधर, योगरत्नाकर

घटक - मंजिष्ठा हरिद्रा त्रिफला वचा कदर शर्करा द्विनिशा (हरिद्रा दारूहरिद्रा) मेदा पयस्या, कटुअकरोहिणे
काकोली वाजीरंधा, शतावरी इनका कल्क = 1 कर्ष

घृत - 1 प्रस्थ चतुर्गुण क्षीर = घृतसिद्धी

फलश्रुती - एतत् फलघृतं नाम योनीदोषहरं परम् ।

पुसंवनं परं ।

बालानां देह वर्धनं परम् ।

प्रजावर्धन, आयुष्य, सर्वग्रहनिवारण

(अनुक्रम लक्ष्मणामूलं क्षिपेत् तत्र चिकित्सकाः)

फलघृत निर्देश - अश्विनीकुमारद्वारा

लघुफलघृत - शारंगधर द्वारा वर्णित

बहुत फलघृत - भैषज्यरत्नावली

महारासनादी क्वाथ - शुक्रामय मेद्रोग वंध्यारोग योनीरोग नाशन, गर्भकारक

न्यग्रोधादी क्वाथ - योनीदोषहर

योनीव्यापद चिकित्सा मे वर्णित बस्ती -

- 1) पलाशादी निरुह बस्ती
- 2) शतावर्यादी रासायनिक बस्ती
- 3) गुडूच्यादी रासायनिक बस्ती
- 4) बलादी यमक अनुवासन

शुष्का योनी चिकित्सा - जीवनीय द्रव्यसिद्ध तैल का उत्तरबस्ती

Gynecology and Obstetrics

Fallopian tube - synonym – uterine tube.

Length – 10cm / 4 inch

From median to lateral – 1) Intramural or interstitial - 1.25 cm

2) Isthmus – 2.5 cm

3) Ampula – 5 cm

4) Infundibulum – 1.25 cm

Ovary - 1 X 2 X 3 cm shape – oval

Uterus –

Shape – pyriform

Dimensions – 7.5 x 5 x 2.5

Weight – 5 to 80 gm.

Cervix – 2.5 cm

The endometrium is changed to decidua during pregnancy.

Normal position – anteversion anteflexion.

Anteversion – relates to long axis of the vagina is about 90 degree

Anteflexion – relates to the long axis of cervix is about 120 degree

Retroverted uterus – when the long axis of the corpus and cervix are in line and the whole organ turns backwards.

Umbilical cord – having 2 umbilical arteries and 1 vein.

Length - 50 cm

Implantation – occurs on anterior or posterior wall of the body near the fundus on 6th day.

Fertilization occurs in ampula.

Placenta – functional unit of placenta is – stem villi. Wt. 500gm.

Fully mature ovum is the largest cell in the body.

Types of pelvis – 4

1) Gynacoid – round shaped = 50%

2) Anthropoid – Anteroposterior oval = 25%

3) Android – Triangular = 20%

4) Pletypeloid – Transversely oval = 5%

Normal diameter of pelvis

	Inlet	Cavity	Outlet
Antero-posterior	11	12	13
Oblique	12	12	
Transverse	13	12	11

Terminologies –

1) **Nullipara** – one who have never completed a pregnancy to a stage of viability.

2) **Nulligravida** – one who not now and never has been pregnant.

3) **Primipara** – Who has one viable child.

4) **Primigravida** - Pregnant for the first time.

EDD –

By Negele's formula – by adding 9 calendar months and 7 days to the first day of the last menstrual period.

By USG – biparietal diameter (BPD) and femur length + or – 10 days, or measurement of crown rump length (CRL) (CRL in cm + 6.5)

Vaccination in pregnancy –

Indicated – Rabies, Hepatitis A and B , Tetanus

Tetanus 1st dose – 16 to 24 weeks.

Second dose – last trimester.

Fern test is done for detection of ovulation.

Diagnosis of pregnancy –

First trimester – (1-12 weeks)

1) **Morning sickness** – lasts up to 3 months

2) **Jacquemier's sign or Chadwick's sign** – is dusky hue of the vestibule and anterior Vaginal wall at 8th week of pregnancy.

3) **Goodelle's sign** –hypertrophy, hyperplasia, hypervascularity, bluish colouration. cervix becomes soft as early as 6th week.

4) **Hegar's sign** – upper part of body of uterus enlarged. Lower is empty. (6-10 weeks)

5) **Palmer's sign** – Regular and rhythmic uterine contraction. (4-8 weeks)

Second trimester – (13-28 weeks)

1) **Quickining** – (feeling of life) – perception of fetal movement by women. (18th week)

2) **Chloasma** – pigmentation over forehead and check. (24th week)

3) **Linea nigra** – linear pigmented zone from symphysis pubis. (28th week)

4) **striae**

Height of uterus (Fundal height) -

1) 16th week – midway between symphysis pubis and umbilicus

2) 24th week – at the level of umbilicus.

3) 28th week – junction of lower third and upper third of umbilicus and ensiform Cartilage.

5) **Braxton Hicks contractions** – irregular, infrequent, spasmodic and painless Contractions, without dilation of cervix = 18 weeks

6) **External ballottement** – Elicited in 20th week; best elicited in breech presentation.

7) **Internal ballottement** – can be elicited between 16-28 weeks.

8) **F.H.S.** – can be detected between 18-20 weeks.

Third Trimester –

1) Enlargement of abdomen

2) Lightning – about 38 th week.

For foetal well being –

1) Oxytocin challenge test – Alteration in FHR during contraction is noted.

2) Oxytocin sensitivity test – to assess the irritability of uterus following the Administration of oxytocin.

Lie –

Relationship of long axis of foetus to long axis of centralized uterus or maternal Pelvis.

Commonest lie – longitudinal (99.50%)

Presentation –

Part of the foetus which occupies the lower pole of uterus.

1) Cephalic – 96.5 %

- 2) Breech – 3 % (podaic)
- 3) Shoulder -0.5 %

Attitude – relationship of different parts of foetus to one another.

Universal attitude is that of 'Flexion'

Position – is the relation of denominator to different quadrants of pelvis.

Presetting part – vertex

Left occipito anterior (LOA) is common.

Version –

Is manipulative procedure designed to change the Lie or to bring comparatively
Favorable pole to the lower pole.

Types – 4 1) External 2) Internal 3) Bipolar 4) Spontaneous

Stages of Labour –

1) First stage or cervical stage –

Starts from onset of true labour pain and ends with full dilation of the cervix.

Time - In primigravida – 12 hours
In multipara – 6 hours

2) Second stage –

It starts from full dilation of cervix and ends with expulsion of foetus.

Time – In primigravida – 2 hours.
In multipara – 30 minutes

3) Third stage –

It starts after expulsion of foetus and ends with expulsion of placenta.
• Time – 15 minutes for both primi and multigravida.

Puerperium –

From expulsion of placenta to 6 weeks.

Lochia –

Is the vaginal discharge for the first fortnight during puerperium.

- 1) Lochia rubra (red) – 1 to 4 days
- 2) Lochia serosa – (yellowish pink) – 5-9 days.
- 3) Lochia alba – (pale white) – 10 – 15 days.

Amniotic fluid –

Alkaline in nature.

12 weeks – 50 ml
20 weeks – 400 ml
36-38 weeks – 1000 ml
At term - 600 – 800 ml

- 1) In early pregnancy – colourless
- 2) Near term – pale, straw coloured
- 3) Foetal distress – meconium stained (green)
- 4) Rh incompatibility – golden colour
- 5) Post maturity – greenish yellow (saffron)
- 6) accidental hemorrhage – dark coloured
- 7) IUD – dark brown.

Cord prolapse – 3

- 1) Occult prolapse 2) Cord presentation 3) Cord prolapse

Placenta previa –

When the placenta is implanted partially or completely over the lower uterine Segment

Types – 4 1) lateral 2) Marginal 3) Incomplete 4) Central

Placenta abruptio – (Accidental hemorrhage)

Premature separation of placenta.

Abortion – is the expulsion or extraction of an embryo or foetus weighing 500gm or less when it is not capable of independent survival.

Miscarriage – is a word synonymous with spontaneous abortion.

Missed abortion – silent miscarriage or early foetal demise. When foetus is dead and retained inside the uterus for a viable period.

Still birth –

Is the birth of new born after 28th completed week when the baby does not breath Or show any sign of life after delivery.

Intra uterine death (IUD) –

Antepartum death occurring beyond 28 weeks is termed as IUD.

Ante partum hemorrhage (APH) –

Is hemorrhage from genital tract after 28 weeks completed of pregnancy.

Post-partum hemorrhage - (8 to 14 day)

Related to the amount of blood loss in excess of 500 ml following birth of baby.

1) Primary – occurs within 24 hours.

2) Secondary – beyond 24 hours and within puerperium (6 weeks)

Episiotomy –

A surgical planned incision on the perineum and the posterior vaginal wall during the Second stage of labour. Also called as Perineotomy.

Types – 4

1) Mediolateral

2) Median

3) Lateral

4) J shaped.

Forcep delivery –

Forcep operation – 3

1) High mid

2) Low mid

3) Low – widely employed now a days.

Force exerted by traction – in primi = 18 kg in multipara – 13 kg

Pre-eclampsia –

It is a multisystem disorder of unknown etiology characterized by development of Hypertension to the extent of 140-190 mm of Hg or more with proteinuria after the 20th week in a previously normotensive and non-proteinuric patient.

Eclampsia –

When pre-eclampsia is complicated with convulsion or coma is called eclampsia.

PIH (Pregnancy induced hypertension) –

Hypertension that develops as a direct result of the gravid state. It includes –

a) gestational hypertension b) pre-eclampsia c) Eclampsia.

Metrorrhagia –

Irregular acyclic bleeding from uterus.

Menorrhagia – cyclic bleeding at normal interval, the bleeding is either excessive in amount or duration or both.

Secondary amenorrhoea –

When there is absence of period for 6 months or more following menstruation.

DUB – dysfunctional uterine bleeding –

A state of abnormal uterine bleeding without any clinically detectable organic pathology.

PCOD – important cause of secondary amenorrhea in young women.

Symptoms – secondary amenorrhea, infertility, obesity, hirsutism and acne.

Prolapse of Uterus –

1st degree – uterus descends down but external os remains inside the vagina.

2nd degree – external os protrudes outside the vaginal introitus but the uterine body still remains inside the vagina.

3rd degree – (procidentia / complete prolapse) –

The uterine body descends to lie outside the introitus.

Hydatidiform mole –

Cystic degeneration of chorionic villi.

Contraceptives –

IUD should be inserted after 6 to 8 weeks following child birth.

Pop – progestogen only pills. Contains only progesterone.

Also referred to as 'minipill' or 'micropill'

Medicated CuT – CuT -200

Non Medicated – lippes loop

Chemical – Progesterone T

Open devices – Lippes loop, CuT, Multiload, Progestasert.

Closed devices – Grafenberg Ring, Bingberg bow.

Natural contraception – Rhythm method

It can be identified by –

- 1) Records of previous M.C. (calendar Rhythm)
- 2) Basal body temperature chart (Temperature Rhythm)
- 3) Noting excessive mucoid vaginal discharge (mucus Rhythm)

Drugs and their side effects –

1) Antimalarial – IUD

2) Streptomycin

3) Kanamycin

deafness

4) Gentamycin

5) Chloramphenicol – Gray baby syndrome

6) Tetracyclin – Dental discolouration

7) Corticosteroids – Cleft lip, cleft palate.

8) anticonvulsant – congenital heart diseases

9) Vitamin K – hypwerbilirubinemia

10) Anesthetics – convulsion, bradycardia, acidosis.

Megaloblastic anemia – due to folic acid deficiency in pregnancy.

Deficiency of B12 – defective synthesis of both RNA and DNA

Deficiency of folic acid – defective synthesis of DNA only.

Operations –

- 1) Fothergill's operation – for uterine prolapse.
- 2) Manchester operation – for uterine prolapse.
- 3) Haulton's Dobbins operation – for everted uterus.

MTP act – passed in 1971

Opinion of one registered medical practitioner for MTP up to 12 weeks.

Opinion of two registered medical practitioners for MTP up to 20 weeks (2nd trimester)

Mislenous –

- Polyhydromnia is more common in multipara.
- 2) Fallopian tube, uterus, vagina develop from mullarian duct.
- 3) Commonest site of ectopic pregnancy ampulla, fallopian tube.
- 4) Foetal heart sound can be heard = from 20th week.
- 5) Foetus can be seen in ultrasound = from 6th week
- 6) Foetus can be seen by X ray = 16-18 weeks.
- 7) Maximum amniotic fluid at 35th week.
- 8) Commonest carcinoma of cervix – squamous cell carcinoma.
- 9) commonest carcinoma of endometrium – Adeno carcinoma.
- 10) best diagnostic method for neural tube defect is – USG
- 11) fetal weight can be assessed by – crown rump length.
- 12) Cervical biopsy is the best method for confirmation of Ca cervix.
- 13) Most potent naturally occurring estrogen – Estradiol.
- 14) Shirodekar's operation is circlage operation for cervical incompetence.
- 15) Common complication of pregnancy in India – Anemia.
- 16) Common complication of Forceps delivery – 7th nerve palsy (Bell's palsy)
- 17) Type of CA pelvis – squamous cell
- 18) Type of CA endometrium – Adenocarcinoma.
- 19) commonly used episiotomy – mediolateral.
- 20) Site of pap smear taken from – posterior fornix of vagina.

Investigation –

- 1) USG – for hydrocephalus, Hydatiform mole, neural tube defect
- 2) Amniocentesis – foetal lung maturity, and sex determination.
- 3) Coombs test – for Rh antibody and Haemolytic anemia detection.

स्वस्थवृत्त

स्वस्थ परीभाषा – समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।

प्रसन्नात्मेन्द्रिय स्वस्थ इत्याभिधीयते ॥ सु.सू 15/48

स्वस्थ पुरुष लक्षण = 14 = भावप्रकाश + काशयप

अन्नभिलाषो शुक्तस्यपरिपाकः सुखेन च । सृष्टविष्मूत्रं शरीरस्य तु लाघवम् ॥

सुखप्रसन्नेन्द्रियत्वं च सुखस्वस्थप्रबोधकम् ॥ काशयप खिलस्थान

Defination of Health by WHO –

Health is a state of complete physical, mental, spiritual and social wellbeing and not Merely the absence of disease or mortality.

आयुलक्षण व पर्याय – शरीरेन्द्रियसत्वात्म संयोगे धारि जीवितम् । नित्यगश्च अनुबन्धश्च पर्यायैः आयुः उच्यते ॥ च.

आयु पर्याय –

- 1) धारि – धारयति शरीरं पूर्तितां गन्तुं गन्तुं न ददाति इति धारि ।
- 2) जीवितम् – जीवयति प्राणान् धारयति इति जीवितम् ।
- 3) नित्यग – नित्यं शरीरस्य क्षणिकत्वेन गच्छतीति नित्यगः।
- 4) अनुबन्ध – अनुबन्धाति आयुः परापरशरीरादीसंयोगरूपतयेति अनुबन्धः।

दिनचर्या –

ब्राह्म मुहुर्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुष्यः । अ.ह.सू 2

ब्राह्म मुहुर्त – रात्रेस्तु पश्चिमो यामः मुहुर्तो ब्राह्म उच्यते ।

भावप्रकाशानुसार सूर्योदयपूर्व 8 अंजली जलपान व 3 अंजली नासाहारे जलपान करे ।

दंतधावन –

चरक – द्वौ कालौ

चक्रपाणी – द्वौ कालौ = प्रातकाल व सायंकाल

वाग्भट – प्रातःकाल व भोजनोत्तर

दंतधावन काष्ठ लांबी – सुश्रुत -12 अंगुल वाग्भट -10 अंगुल जाडी – कनिष्ठिका सम

दंतधावनार्थ उत्तम वृक्ष – वट विजयसार अर्क करंज निंब अर्जुन खदिर करवीर असन अपामार्ग

दंतधावनार्थ अयोग्य वृक्ष – इलेष्मातक अरिष्ट, बिभितक, धव, बिल्व, निर्गुण्डी, शिषु, तिल्वक, तिन्दुक ,
कोविदार, शामी, पीलु, पिप्पल, गुगुल, पारिभद्र, शाल्मली

दंतधावनार्थ योग्य रस –

- 1) चरक – कटू तिक्त कषाय
- 2) सुश्रुत – तिक्त – निंब, कटू – करंज, कषाय – खदिर, मधुर – मधुक (यष्टी)

अष्टांगसंग्रहानुसार – पलाश का आसन दंतधावन व पादुका निर्माणार्थ निषेध

दंतधावनार्थ अयोग्य व्यक्ती – गल तालु ओष्ठ जिव्हा विकार श्वास कास हिकका मुखपाक छर्दि अजीर्ण शिरःशूल
मूर्छा, मद अर्दित कर्णशूल दन्तरोग मद्यपिण्डीत

सुश्रुतानुसार दंतधावनकाष्ठाभावे मधु व्योष त्रिफला त्रिमद तैल सैंथव तेजोवती चूर्ण से दंतधावन करे

जिव्हानिर्लेखन –

शालाका – सुवर्ण रौप्य अथवा ताम्र की मृदू व श्लक्षण प्रमाण – 10 अंगुल

उपयोग – मुखवैरस्य दौर्गथ्यं शोफजाङ्घहरं सुखम् । सु.चि. 24/14

नस्य –

- 1) चरक – 5 नावन अवपीड धापन धूम प्रतिमर्श
- 2) सुश्रुत – द्विविध व पंचविध शिरोविरेचन व स्नेहन, पंचविध – नस्य शिरोविरेचन प्रतिमर्श अवपीड प्रधमन
- 3) वाग्भट – 3 विरेचन बुहण शमन

चरकानुसार प्रतिदिन प्रातःकाल व सायंकाल प्रतिमर्श नस्य करे।

नस्यार्थ चरक व वाग्भटानुसार अणुतैल श्रेष्ठ

नस्यकाल – प्रतिमर्श काल – सुश्रुत – 14 वाग्भट – 15

ऋतुनुसार नस्यकाल –

- 1) वसंत शरद – प्रातःकाल
- 2) हेमंत शिशिर – मध्याह्नकाल
- 3) ग्रीष्म – सायंकाल

दोषानुसार नस्यकाल –

- 1) कफज रोग – प्रातःकाल
- 2) पित्तज रोग – मध्याह्न काल
- 3) वातजरोग – सायंकाल

क्षोरकर्म – पौष्ट्रिक वृष्यं आयुष्यं शुचि रूप विराजनम् । केशमश्रुनखादीनां कल्पनं सम्प्रसाधनम् ॥ च.सू 5/99

गण्डूष व कवल –

असंचारी मुखे पूर्णे गण्डूषः कवलश्वरः । तत्र द्रवेण गण्डूषः कल्केन कवल स्मृतः ॥ शा.पू.

कवल – 5 वर्ष उपरान्तः = शारंगधरानुसार

प्रकार – 4 1) स्नेहन 2) शमन 3) शोधन 4) रोपण

अंजन –

सुश्रुतानुसार सिंधु देशोत्तन्त्र श्रोतोंजन श्रेष्ठ

अंजन का काल –

- 1) चरकानुसार – नित्य प्रयोगार्थ – सौवीरांजन
पंच रात्रे वा अष्टरात्रे – स्त्रोतोंजन = स्त्रावणार्थ
- 2) वाग्भट – रसांजन प्रयोग – सप्ताह मे एक बार

चरकानुसार दृष्टी प्रसादनार्थ अंजन –

चक्षुः तेजोमयं तस्य विशेषात् इलेष्मतो भयम् । ततः इलेष्महरं कर्म हितं दृष्टेः प्रसादनम् ॥ च.सू 5/16

चरकानुसार तीक्ष्णांजन प्रयोग दिन मे वर्ज्य उसका प्रयोग केवल रात्री मे

सुश्रुतानुसार अंजन प्रयोग शुद्ध काय शरीर मे, दोष केवल नेत्र स्थित होनेपर, पक्व अवस्था मे करे।

अंजन प्रकार –

- 1) चरक – 3 1) लेखन 2) रोपण 3) प्रसादन
- 2) सुश्रुत – 3 1) लेखन 2) रोपण 3) प्रसादन
- 3) रसरलसमुच्यानुसार – 5 1) सौवीरांजन 2) स्त्रोतोंजन 3) रसांजन 4) पुष्पांजन 5) नीलांजन
- 4) राजनिधंटु नुसार – 3 1) कालांजन 2) पुष्पांजन 3) रसांजन

रसांजन निर्माती – दर्वीक्वाथं + अजाक्षीर / गोक्षीर इनके साथ घन कर

- 1) लेखन अंजनार्थ मधुर रस छोडकर शेष पाच रसों से निर्माण (सुश्रुत)

2) रोपण अंजन – कषाय तिक्त व अल्प स्नेहयुक्त

3) प्रसादन अंजन – मधुर रस व स्नेहयुक्त

अंजन काल –

1) लेखनांजन – पूर्वान्हि

2) रोपण अंजना – सायंकाल

3) प्रसादन – रात्री मे

स्वरूपानुसार अंजन प्रकार – (सुश्रुत/ वाग्भट)

1) गुटिका – उत्तम बल

2) रसक्रिया – मध्यम बल

3) चूर्ण – हीनबल

अंजन वर्ती प्रमाण –

1) लेखन अंजन – हरेणुमात्रा

2) प्रसादन अंजन – अध्यर्ध हरेणु मात्रा (डेढ़)

3) रोपण अंजन – द्विगुण (दो हरेणु मात्रा)

अंजन प्रकारानुसार धारणार्थ पात्र –

1) मधुर अंजन – सुवर्ण पात्र

2) अम्ल अंजन – रजत पात्र

3) लवण अंजन – मेषशंग पात्र

4) कटू अंजन – वैदूर्य पात्र

5) तिक्त अंजन – कास्य पात्र

6) कषाय अंजन – ताम्र / लोह

:

अंजन शलाका –

स्वरूप – वक्र – मुकुलाकार, कलायपरिमंडल , मध्यस्थाने तनु

लांबी – 8 अंगुल

कार्यानुसार अंजन शलाका –

1) प्रसादनार्थ – सुवर्ण / रोप्य

2) रोपणार्थ – लोह

3) लेखनार्थ – ताम्र

मृदूत्वात अंगुली श्रेष्ठ

अंजन दोष – 9

कर्णपूरण –

गुण – न कर्णरोगा वातोत्था न मन्याहनुसंग्रहः । नोच्चैः श्रुतिर्बाधीर्य स्यानित्यं कर्णतर्पणात् ॥ च.सू. 5/84

धारण काल – 500 किंवा 1000 मात्रा

धूमपान –

प्रयोजन – जन्मुर्ध वातकफज विकार नाशनार्थ

प्रायोगिक धूमवर्ती लम्बाइ –

1) चरकानुसार – 8 अंगुल

2) विदेहानुसार – 6 अंगुल

3) वाग्भटानुसार – 12 अंगुल (इसमे 8 अंगुल लेप)

धूमवर्ती स्थूलता – अगुष्टसम

प्रायोगिक धूमपान काल –

- 1) चरकानुसार – 8 1) स्नानपश्चात् 2) भोजनपश्चात् 3) उल्लेखन पश्चात् 4) क्षवथुपश्चात्
 5) दंतधावनपश्चात् 6) नावनान्ते 7) अंजनान्ते 8) निदान्ते
 उपरोक्त 8 कालों में वातकफ का प्रकोप होता है।

2) सुश्रुतानुसार – 12

धूमपान वयोमर्यादा –

- 1) वाग्भटानुसार – 18 वर्षपश्चात्
 2) शारंगधरानुसार – 12 ते 80 वर्ष

धूमनेत्र परिमाण –

- 1) चरकानुसार – 1) प्रायोगिक – 36 अंगुल
 2) स्नैहिक – 32 अंगुल
 3) वैरेचनिक – 24 अंगुल
 2) वाग्भटानुसार – 1) स्निग्ध – 32 अंगुल
 2) मध्यम – 40 अंगुल
 3) तीक्ष्ण – 24 अंगुल

धूमपान प्रकार –

चरक	3	1) प्रायोगिक 2) स्नैहिक 3) वैरेचनिक
सुश्रुत	5	1) प्रायोगिक 2) स्नैहिक 3) वैरेचनिक 4) कासघ 5) वामनीय
वाग्भट	3	1) स्निग्ध – वानघ्न 2) मध्यम – वातकफघ्न 3) तीक्ष्ण – कफघ्न
शारंगधर	6	1) शमन 2) बृहण 3) रेचन 4) कासहा 5) वामन 6) व्रणधूपन

धूमपान विधि – (चरक)

- 1) प्रायोगिक – केवल दो बार
 2) स्नैहिक – केवल एक बार
 3) वैरेचनिक – तीन या चार बार पीना चाहिए

दोष स्थानानुसार धूमपान – (चरक)

- 1) शिर ध्वाण व अक्षिसंश्रित दोष – नासिका द्वारा धूमपान
 2) कण्ठगत दोष – मुख द्वारा धूमपान
 नासिका से धूम पान करने पर मुख से ही निकालना चाहिए; नासा से उद्धमन करने पर चक्षुहानी

सुश्रुतानुसार –

- 1) प्रायोगिक – विशेषतः ध्वाणद्वारा
 2) स्नैहिक – नासा व मुखद्वारा
 3) वैरेचनिक – नासाद्वारा
 4) कासघ व वामनीय – मुखद्वारा

सम्यक धूमपान लक्षण – 1) हुत्कण्ठेन्द्रियसंशुद्धिर्घुत्वं शिरसः शमः।

यथेरितानां दोषाणां सम्यक् पीतस्य लक्षणम् ॥ च.सू. 5/37

2) यदा चोरश्च कण्ठश्च शिरश्च लघुतां व्रजेत् ।
कफश्च तनुतां प्राप्तः सुपीतं धूममादिशेत् ॥ च.सू. 5/52

सुश्रुत - करो धूमोपयोगश्च प्रसन्नेन्द्रियवाग्मनः ।
दृढकेशद्विजश्मश्रु सिगाधिविशादाननः ॥ सु.चि. 40/25

अकाल / अतिधूमपान उपद्रव -

बाधीर्य आन्ध्यं मूकत्वं रक्पित्तं शिरोभ्रमम् ।
अकाले चातिपीतश्च धूमः कुर्यादुपद्रवान् ॥ च.सू. 2/38

अकाल / अतिपीत धूमपान उपद्रव चिकित्सा -

सर्पिषान, नावन, अंजन, तर्पण
यदि पित्त का अनुबन्ध हो तो स्निग्ध द्रव्य सिद्ध घृतपान
यदि रक्पित्त का अनुबन्ध हो तो शीत द्रव्य सिद्ध घृतपान
यदि कफपित्त का अनुबन्ध हो तो रूक्ष द्रव्य सिद्ध घृतपान, नस्य, अंजन

धूमपान अयोग -

अविशुद्धः स्वरो यश्च कण्ठश्च सकफो भवेत् ।
स्तिमितो मस्तकश्वैवम् अपीतं धूममादिशेत् ॥ च.सू. 5/53

धूमपान अतियोग -

तालु मूर्धा च कण्ठश्च शुष्टते परितप्यते ।
तृष्टते मुहूते जन्तु रक्तं च स्त्रवते अधिकम् ॥
शिरश्च भ्रमते अृत्यर्थं मूर्छा च अस्योपजायते ।
इन्द्रियाणि उपतप्यन्ते धूमेऽत्यर्थं निषेविते ॥ च. सू. 5/54,55

अभ्यंग -

अभ्यंगं आचरेत् नित्यं स जराश्रमवातहा ।
दृष्टिग्रसादपृष्ठ्यायुः स्वप्नसुत्वकदार्द्यकृत ॥ अ.हु.सू. 2/8
शिरःश्रवण पादेषु तं विशेषेण शीलयेत् । अ.हु.सू.2

शिरोभ्यंग लाभ - नित्यं स्नेहार्द्दशिरसः शिरःशूलं न जायते ।

न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च ॥

कर्णाभ्यंग लाभ - वातज कर्णरोग, मन्यास्तंभ, हनुस्तंभ नहीं होता ।

उच्च श्रुती व बाधीर्य रोग नहीं होता ।

पादाभ्यंग लाभ - 1) पाद खरत्व, रौक्ष्य, श्रम, सुप्तता, सद्द्य उपशमन

- 2) पाद सौकुमार्य, बल व स्थैर्य प्राप्ति
- 3) दृष्टि प्रसाद व मारुत उपशमन
- 4) गृध्रसीवात, पादस्फुटन, सिरास्नायुसम्कोच नहीं होता ।

तैलाभ्यंग निषेध - 1) कफग्रस्त 2) कृतसंशोधन 3) अजीर्णी

अभ्यंग अयोग्य - (सुश्रुत) 1) नवज्वर 2) अजीर्ण 3) वमनोत्तर 4) विरेचनोत्तर 5) निरुहपश्चात 6) संतर्पणज रोग

शरीर परिमार्जन क्रियाएः -

- 1) उद्वर्तन - स्नेह कल्क के साथ अंगों का उदर्घर्षण

प्रकार – (चरक) 1) रूक्ष – स्थौल्य चिकित्सा मे 2) स्निग्ध – कृश चिकित्सा मे
उद्वर्तन लाभ – उद्वर्तनं कफहरं मेदसः प्रविलापनम् । स्थिरीकरणं अंगानां त्वकप्रसादकरं परम् ॥

- 2) उत्सादन – स्नेहयुक्त उबटन
- 3) उदधर्षण – अस्नेह औषधीचूर्णाभिः धर्षणम् । कण्डू व कोठ नाशक (सुश्रुत)
- 4) फेनक – (रीठा आदी से) – जंघाओं मे स्थिरता, मलनाशक

शारीर मार्जन लाभ –

दौर्गैर्ध्यं गौरवं तन्द्रां कण्डूमलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सां हन्ति शारीरपरिमार्जनम् ॥ च.सू. 5/93

व्यायाम – 1) शारीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी ।

देह व्यायाम संख्याता मात्रयां तां समाचरेत् ॥ च.सू. 7/31

2) शारीरायासजनकं कर्म व्यायाम संज्ञितम् । सु.चि. 24

व्यायाम प्रमाण – अर्धशक्त्या निषेव्यस्तु वलिभिः स्निग्धभोजिभिः । अ.हु.सू. 2

अर्धशक्ती व्यायाम लक्षण – हुदि स्थित वायु मुखद्वारा प्राप्त होना । सुश्रुत

व्यायाम लाभ – लाघवं कर्मसामर्थ्यं दीप्तोग्निर्मेदसः क्षयः ।

विभक्तघन गाव्रत्वं व्यायामादुपजायते ॥ अ.हु. सू. 2

व्यायाम अयोग्य – वातपित्तामयी, दाल, वृद्ध, अजीर्णा (वागभट), रक्तपित्त, कृश, शोष, श्वास, कास, उरक्षत, भोजन व स्त्रीसेवन बाद, तृष्णा, भ्रम

ऋतुनुसार व्यायाम – शीतकाल व वसंत मे बलार्थं व इतर ऋतुओं मे उससे मन्द

अतिव्यामजन्य दोष – क्षय, तृष्णा, अरूचि, वमन, भ्रम, क्लम, ज्वर

व्यायाम पश्चात कर्म – अनुसुख देह मर्दन

ताम्बुल –

घटक – जातीफल, कर्पुर, लवंग, लताकस्तुरी, कंकोल, पूग

गुणधर्म – ताम्बुलं कटुतिकं उष्णं मधुरं क्षारं क्षायाच्चितं ।

वातधनं कफनाशनं कृमीहरं दुर्गान्धेनिर्णाशनम् ॥

वक्त्रस्याभरणं विशुद्धिकरणं कामाग्निसद्विपनं, ताम्बुलस्य सखे । ध.नि.

सेवनकाल – भोजनोत्तर, प्रातः उत्थान पश्चात, वमन पश्चात.

ताम्बुल निषेध – रक्तपित्त, रूक्षोत्कुपितचक्षु, विष, मूर्च्छा, मदार्त, शोष

स्नान –

वागभट – दीपनं वृद्धं आयुष्यं स्नानमूर्जविलप्रदम् ।

कण्डूमलश्रमस्वेदं तंद्रा तृट् दाहपाप्मजित् ॥ अ.ह.सू. 2

चरक – पवित्रं वृद्धं आयुष्यं श्रमस्वेदमलापहम् ।

शारीरबलसंधानं स्नानमोजस्करं परम् ॥ च.सू. 5/94

सुश्रुत – हुदय, पुस्त्ववर्धक, रक्तप्रसादन, अग्निदीपन

वागभट – उष्ण जल से शिर छोड़कर शारीर स्नान बलदायक

उष्ण जल से शिरस्नान केश व चक्षु के लिए बलहारक

स्नान निषेध – अतिसार, कर्नशूल, ज्वर, वातरोग, आध्मान, अरूचि, अजीर्ण, भोजनोत्तर, अर्दित, नेत्ररोग, पीनस
मुखरोग, अतीशीतजलसे या अतिउष्ण जल से

अनुलेपन – सुश्रुतानुसार – सौभाग्यं वर्णकरं प्रीति ओजबलवर्धनम् ।

स्वेददौर्गम्यं वैवर्ण्यं श्रमघ्नम् अनुलेपनम् ॥

स्नान निषेध मे अनुलेपन भी निषिद्ध है ।

पादत्राण धारण – चक्षषं स्पर्शनहितं पादयोः व्यसनापहम् ।

बल्यं पराक्रमं सुखं वृष्टं पादत्राणधारणम् ॥ च.सू. 5/100

छत्रधारण – इतेः प्रशमनं बल्यं गुप्त्यावरणशंकरम् । इते – भावी रोग, गुप्ति – प्रेत पिशाचादी से रक्षा घर्मरजो अनिलघ्नं छत्रधारणमुच्यते ॥ आवरण – आवरक, शंकर – कल्याणकारक

दण्डधारण – स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणां च निषूदनम् । स्खलतः – गिरने से बचाना अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥ च.सू. 5/102

संवाहन – मांसरक त्वकप्रसादकरं, कफवात श्रमहर

आहार –

प्रशस्ती – प्राणाः प्राणभृतानां अन्नं लोकोऽभिधवति ।

वर्णः प्रसादं सौस्वर्यं जीवितं प्रतिभा सुखम् ॥

तुष्टिः पुष्टिर्बलं मेधा सर्वमन्ते प्रतिष्ठितम् ॥ च.सू. 27/349

आहारभेद – (चरक)

1) योनी (उत्पत्ती) भेदानुसार – अ) स्थावर ब) जांगम

2) प्रभावभेद – अ) हितकर ब) अहितकर

3) उपयोग भेद –

1) चरक = 4 1) पान 2) अशन 3) भक्ष्य 4) लेह्य

2) सुश्रुत = 4 1) पान 2) भोज्य 3) भक्ष्य 4) लेह्य

3) भावप्रकाश = 6 1) पेय 2) भोज्य 3) भक्ष्य 4) लेह्य 5) चूष्य 6) चर्व

4) शारंगधर = 6 1) पेय 2) भोज्य 3) भक्ष्य 4) लेह्य 5) चौष्य 6) चर्व

4) रसभेद से = 6 मधुर अम्ल लवण कटू तिक कषाय

5) गुणभेदसे = 20

6) असंख्यभेद – अपरिसंख्येयविकल्पः द्रव्यसंयोगकरणबाहुल्यात् । च.सू. 25/36

हितकर व अहितकर आहार –

1) हिताहारोपयोग एक एव पुरुषवृद्धीकरो भवति ।

2) अहिताहारोपयोगः पुनः व्याधीवृद्धीकरो भवति । च.सू. 25/31

आहारमात्रा – मात्राशी स्यात् । आहारमात्रा पुनः अग्निबलापेक्षिणी । च.सू. 5/3

कुक्षिभाग –

1) चरक – 3 1) मूर्त्तिहार के लिए 2) द्रव के लिए 3) वात पित्त इलेष्मा के लिए

2) वागभट व काश्यप – 4 भाग 1) 2 भाग अन्न के लिए 2) 1 भाग द्रव 3) 1 भाग वायु के लिए

भोजन उपयोग नियम (उपयोग संस्था) (च.वि 1)

1) उष्णमश्नीयात् 2) स्निग्धमश्नीयात् 3) मात्रावदश्नीयात् 4) जीर्णश्नीयात् 5) वीर्यविरूद्धमश्नीयात्

6) इष्टदेशोअश्नीयात् 7) इष्टैः सर्वोपरणैः अश्नीयात् 8) नातीद्रुतमश्नीयात् 9) नातिविलम्बीतमश्नीयात्

10) अजल्प (मौन) अहसन् तन्मना भुंजीत् 11) आत्मानमभीसमीक्ष्य भुंजीत्

द्वादश अशन विचार – (सुश्रुत उ. 64/56)

- 1) शीत 2) उष्ण 3) स्निग्ध 4) रुक्ष 5) द्रव 6) शुष्क
- 7) एककालीक 8) द्विकालीक 9) औषधीयुक्त 10) मात्राहीन 11) प्रशमनकारक 12) वृत्त्यर्थ

जीर्णाहार लक्षण –

उदगारशुद्धिः उत्साहो वेगोत्सर्गो यथोचितः ।
लघुता क्षुत्पिपासा च जीर्णाहारस्य लक्षणम् ॥ अ.स.सू. 11/50

भोजनसमये जलपान नियम –

भुक्तस्यादौ जलं पीतं अग्निसादं कृशांगताम् ।
अंते करोति स्थूलत्वं उर्ध्वं चामाशयात्कफम् ॥
मध्ये मध्यांगतां साम्यं धातूनां जरणं सुखम् ॥ अ.स.सू. 6/39

- 1) भोजनपूर्व जलपान – अग्निसाद व काश्य
- 2) भोजनमध्य काले जलपान – मध्यांगता, धातुसाम्य, सुखपूर्वक अन्न जरण
- 3) भोजनान्ते जलपान – उर्ध्वं आमाशय मे कफ उत्पत्ती, स्थूलत्व
अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि जलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि रात्रौ वारि विषप्रदम् ॥ शलीग्राम निधंटु

भोजन मे रस ऋग्म –

- 1) भोजन पूर्वभाग मे – मधुर रस
- 2) मध्यभाग मे – अम्ल लवण रस
- 3) पश्चात भाग मे – कटू तिक्त कषाय रस

विषम भोजन –

- 1) अध्यशन – भुक्तरयोपरि भोजनम् ।
भुक्तं पूर्वान्हशेषे तु पुनः अध्यशनम् मतम् ।
- 2) विषमाशन – अपाले बहु च अल्पत्वं भुक्तं तु विषमाशनम् ।
- 3) समशन – मिश्रं पथ्यम् अपथ्यम् च भुक्तं समशनं मतम् ।
- 4) विरुद्धाशन – देश काल मात्रा आदी नुसार भोजन न करना ।
- 5) प्रमिताशन – अल्प / स्तोक भोजन
- 6) अनशन – भोजन न करना

आहारद्रव्य परीक्षा – चरक सू. 27 सुश्रुत सूत्र – 46/138

- 1) चर (देश) 2) शरीरावयव 3) स्वभाव 4) धातु 5) क्रिया 6) लिंग 7) प्रमाण 8) संस्कार 9) मात्रा

चरकोक्त आहार वर्ग – 12

- | | | |
|---------------|--------------|-------------------|
| 1) शूक्रधान्य | 5) फलवर्ग | 9) गोरसवर्ग |
| 2) शमीधान्य | 6) हरितवर्ग | 10) इक्षुवर्ग |
| 3) मांसवर्ग | 7) मधवर्ग | 11) कृतान्नवर्ग |
| 4) शाकवर्ग | 8) अम्बुवर्ग | 12) आहारयोगी वर्ग |

1) शूक्रधान्य वर्ग –

इसमे रक्तशाली महाशाली इनका समावेश होता है
स्वादुपाकरसाः स्निग्धाः वृष्यः बद्धाल्पवर्चसः ।

कषायानुरसाः पथ्या लघवो मूत्रला हिमाः ॥ अ.स.

ब्रिही मे षष्ठिक प्रकार श्रेष्ठ माना गया है ।

गोधूम – सन्धानकृत, वातहर, स्वादु शीत जीवन बृहण, वृद्धि निर्गुण स्थैर्यकर

यव – रूक्ष शीत गुरु स्वादु बहुवातकर शकृदर्वर्धक स्थैर्यकृत बल्य कषाय इलेष्विकारनुत

2) शामीधान्य (शिंबी धान्य) –

कषाय स्वादु लघु विवंध आध्मानकारक रूक्ष बध्दमलकर कटू शीतवीर्य सूपलेपादी मे योजना

मुदग – रूक्ष कषाय मधुर कटूपाकी विशद इलेष्वित्तिधन सूप्योत्तमा

माष – स्निग्ध उष्ण गुरु वातहर बल्य बहुमलकर वृद्धि पुस्त्वकर

कुलत्थ – कषायरस अम्लविपाकी उष्णवीर्य कफवातधन शुक्रधन ग्राही कास श्वास हिकका अर्श मे हितकर

3) मांसवर्ग –

चरकानुसार – 8 वर्ग – प्रसह प्रतुद भूशय आनूप जलचर जलज जांगल विष्किर

सुश्रुतानुसार – 6 वर्ग

मांसवर्ग मे नर जाती मांस का पूर्वभाग तथा मादी जाती का अधोभाग गुरु होता है

धातुओ मे रस रक्त मास उत्तरोत्तर धातुए गुरु होती है

न हि मांससमं किञ्चित् अन्य देहबृहत्तकृत् । शरीरबृहणे नान्यत् खाद्यं मांसात् विशिष्यते ॥ च.सू. 27/87

अजामांस – नातिशीत गुरुस्निग्धं मांसमाजमदोषलम् ।

शरीरधातुसामान्याद् अनभिष्यदि बृहणम् ॥ च.सू. 27/61

चटकमांस – मधुर स्निग्ध बलशुक्रविवर्धन

गव्यमांस – केवलवातविकार, पीनस, विषमज्वर, शुष्ककासा, अत्यग्नि, मांसक्षय मे हितकर

मयूरमांस – दृष्टिहितकर, मेधा व कर्ण हितकर

4) शाकवर्ग –

चांगोरी – ग्रहणी व अर्श मे हितकर दीपन उष्णवीर्य ग्राही कफवातधन

सर्षप – त्रिदोषवर्धक, बध्दमलकर

तंदुलीयक – हिम रूक्ष स्वादुपाकरस लघु मद पित्त विषनाशक

वास्तुक – ग्रहणी कुष्ठ अर्श त्रिदोषधन

5) फलवर्ग –

पारावत – ओरुची व अत्यग्निनाशन

आमकपित्थ – कंठधन, विषधन, वातल, ग्राही

बालबिल्व – स्निग्ध उष्ण तीक्ष्ण दीपन कफवातजित

पक्वबिल्व – दुर्जर दोषल पूतीमारुतकृत

पटोल – हुद्य, कृमीधन, स्वादुपाकी रूचीप्रद

त्रपूस – अतिमूत्रल

सूरण – दीपन, रूचीकर, कफधन, विशद, लघु विशेषाद अर्शसां पथ्य

फलवर्ग मे सुश्रुतानुसार आमलकी श्रेष्ठ, वाग्भटानुसार मृद्विका श्रेष्ठ

6) हरितवर्ग –

बालमूलक – त्रिदोषहर वृद्धि मूलक – त्रिदोषकर शुष्कमूलक – वातकफधन

पलान्डु – इलेष्वल मारुतधन न च पित्तनुत आहारयोगी बल्य गुरु वृद्धि रोचन

लशुन – क्रिमीकुष्ठ किलासधो वातज्ञो गुल्मनाशन स्निग्ध वृष्टि गुरु अस्थीसंधानकर
काकमाची – रसायन त्रिदोषधन
गुरुता ऋम – पुष्टं पत्रं फलं नालं कन्दाश्च गुरवः ऋमात् (सुश्रुत)

7) गोरस वर्ग –

गोदुग्ध – रसायन स्वादु शीत मृदू स्निग्ध बहल इलक्षण पिच्छिलम् गुरु प्रसन्न मन्द गव्य दशगुणं पय
माहिजी दुग्ध – गव्य से गुरुतर व शीततर परंतु स्नेह मे अन्युन, अनिद्रा व अत्यग्नि मे हितकर
उष्ट्र दुग्ध – रूक्ष उष्ण इष्टतलवण वातकफानाह क्रिमीशोफ उदर अर्शसाम हितकर
एकशफ प्राणी (अश्वादी) – बल्य स्थैर्यकर उष्ण अम्ल सलवण रूक्ष शाखावातहर लघु
छागदुग्ध – कषाय मधुर शीत ग्राही लघु रक्पित्तिसारधन क्षयकासञ्चरापहम
आविक दुग्धद – हिककाश्वासकर उष्ण पित्तश्लेष्मकर
स्त्रीदुग्ध – जीवन बृहण सात्म्य स्नेहन नावन रक्पित्ति तर्पण मे उपयोगी
धारोष्ण दुग्धद – गुणवान अतिशृत दुग्ध – शीत गुरु बृहण

8) मधुवर्ग –

रस – मधुर	अनुरस – कषाय	वाजीकर भग्नसंधानकर त्रिदोषशामक ,चक्षुष्य लेखन व्रणशोधक
भेद – चरक – 4	1) माक्षिक 2) भ्रामर 3) क्षोट्र 4) पौत्रिक	माक्षिक – श्रेष्ठ
सुश्रुत – 8	1) पौत्रिक 2) भ्रामर 3) क्षोट्र 4) माक्षिक	
	5) छात्र 6) आर्ध्य 7) औद्यालक 8) दाल	

1) भ्रामर मधु	गुरु पिच्छिल
2) माक्षिक मधु	सर्वश्रेष्ठ
3) आर्ध्य मधु	नेत्र हितकर
4) औद्यालक मधु	कुष्ठ तथा विषनाशक
5) दाल मधु	वमन व प्रमेह नाशक
6) नविन मधु	बृहण
7) पुराण मधु	मेदस्थौल्य नाशन ग्राही अतिलेखन
8) पक्वमधु	त्रिदोषनाशन
9) आम मधु	अम्ल त्रिदोषकर

मधु उष्ण द्रव्य तथा अंतरिक्ष जल के साथ विरुद्ध है।

नवनीत – संग्राही दीपन हुद्य ग्रहणी अर्शविकाशन अर्दित अरुचीनाशन

घृत – स्मृती बुधी अग्नि शुक्र ओज कफमेद विवर्धनम्, विष उन्माद शोष अलक्ष्मीज्वरापहम,

सर्वस्नेह उत्तम , सहस्रवीर्य विधिभिः घृतं कर्मसहस्रकृत

हैयंगवीन – पूर्व दिन के दुग्ध से तैयार किया हुआ घृत – ज्वरधन

पुराणघृत – भावमिस्त्रनुसार – 1 वर्ष हेमाद्री – 10 वर्ष अरुणदत्त – 15 वर्ष

चक्रपाणीनुसार – 10 वर्ष पुराण = कौंभ घृत धन्वन्तरीनुसार – 111 वर्ष पुराण कौंभ घृत

निदा –

यद तु मनसि क्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्विता ।

विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा स्वपिति मानवः ॥ च.सू. 21/35

सुश्रुतानुसार देह मे तम आवरण से निद्रा उत्पत्ती

ऋतुमती स्त्री लक्षण – पीन प्रसन्न वदनां प्रकलीनात्ममुखद्विजाम् ।
 नरकामां प्रयकथां स्त्रस्तकुक्ष्याक्षिमूर्धजाम् ॥
 स्फुरदभुजकुच श्रोणी नाभी उरु घनस्फिचम् ।
 हर्षोत्सुक्यपराण्चापि विद्याद् ऋतुमतीम् ॥ सु. स्था. 3/7

मैथुन योग्य स्त्री – अतुल्य गोत्रां वृष्टां च प्रहृष्टां निरूपद्रवाम् ।
 शुद्ध स्नातां व्रजेन्नारीम् अपत्यार्थी निरामयः ॥ च.चि. 2/1/15

मैथुन योग्य काल –

- 1) सुश्रुत – ग्रीष्म व्यतीरीक्त इतर ऋतु में 3-3 दिन के अंतर से व ग्रीष्म में 15 दिन में
- 2) वार्षिक – वसंत व शरद – 3 दिन के अंतर से वर्षा व ग्रीष्म में 15 दिन के अंतर से हेमंत व शिशिर में यथेच्छ मैथुन करे ।

सुश्रुतानुसार संध्याकाल व पर्वकाल में मैथुन निषेध (सु.चि.24/116)
 मैथुन योग्य आयु – 16 से 80 वर्ष (चरक)

उपवास –

यत्किंचीत लाघवकरं देहे तत् लंघनं स्मृतम् ॥ च.सू. 22/9

प्रकार – 10 चतुष्प्रकारा संशुद्धि पिपासा मारुत आतपः ।
 पाचनानि उपवासश्च व्यायामश्चेति लंघनम् ॥ च.सू.

चतुष्प्रकारा संशुद्धि – अनुतामन वर्जीत शोधन (वमन, रेचन, निरूह, शिरोविरेचन) चक्र
 लंघन प्रकार – शोधनं शमनं चेति द्विधा तत्रापि लंघनम् । (वार्षिक)

- 1) शोधन – 5 1) वमन 2) दिरेचन 3) शिरोविरेचन 4) निरूह 5) रक्तमोक्षण
- 2) शमन – 7 1) पाचन 2) दीपन 3) क्षुधा 4) तृष्णा 5) व्यायाम 6) आतप 7) मारुतसेवन

धारणीय वेग –

इमास्तु धारयेद् वेगान् हितार्थी प्रेत्य चेह च । साहसानाम् अशस्तानां मनोवाक् कायकर्मणाम् ॥ च.सू. 7/26

- 1) धारणीय साहसीक वेग
- 2) धारणीय कायिक वेग – 3 परपीडया देहप्रवृत्ती, स्त्रीभोग, हिंसा
- 3) धारणीय वाचिक वेग – 5 अतिमात्रस्य, परूष, सूचकस्य, अनृत, अकालयुक्त वाक्य = बोलना
- 4) धारणीय मानसिक वेग – 9 लोभ, शोक, भय, क्रोध, मान, निर्लज्जता, इर्षा, अतिराग, अभिधा

अधारणीय वेग –

चरकानुसार – 13

वेग नाम	लक्षण	चिकित्सा
1) मूत्रवेग	बस्तीमेहन शूल, मूत्रकृच्छ्र, शिरोरुजा, विनाम, वंक्षणानाह, अंगभंग अश्मरी,	स्वेद, अभ्यंग, अवगाह, अवपीड सर्पि, त्रिविध बस्तीकर्म
2) पुरीषवेग	पक्वाशयशिरःशूल, वातवर्च अप्रवर्तन, पिण्डिकोद्देष्टन आध्मान, प्रतिश्याय, हृदयस्योपरोधनम्	स्वेद अभ्यंग अवगाह, वर्ती बस्तीकर्म, प्रमाथी अन्नपान
3) शुक्रवेग	मेढ्र वृषणशूल, अंगमर्द, हुदि व्यथा, मूत्रविबंध गुह्यवेदना, श्वयथु, ज्वर, अंगभंग, वृद्धी, अश्मरी षट्ठता	अभ्यंग, अवगाह, मद्य, चरणायुधा (कुकुट्मांस)शाली पय निरूह, बस्ती शुद्धीकर पय, सुरा,
4) अपानवात् अधोवात् (वा)	विटवात्मूत्रसंग, आध्मान, वेदना, क्लम, वातज रोग गुल्म, उदावर्त, दृष्टि व अग्निवध,	स्नेह स्वेद, वर्ती, वातानुलोमक अन्न वातानुलोमक बस्ती

5) वमनवेग	कण्डू, कोठ, कुष्ठ, वीसर्प, व्यंग शोथ पांडु ज्वर, हुल्लास अरूची,	भुक्त्वा प्रच्छर्दन, धूमपान, लंघन रक्तमोक्षण, रुक्षान्नपान, व्यायाम रक्तमोक्षण, विरेचन, सक्षारतैल लवण अभ्यंग
6) क्षवथु	मन्यास्तंभ, अर्दित, अर्धावभेदक, शिरःशूल, इन्द्रियाणां च दौर्बल्य	उर्ध्वजनुगत अभ्यंग, स्वेद, धूम नावन, औनरभक्तिक घृत अंजन आध्राण, अर्कविलोकन
7) उदगार	हिकका, श्वास, कास अरूचि, कम्प, हुटा उरविवंध,	हिकका समान चिकित्सा
8) जृम्भा	विनाम, आक्षेपक, संकोच, कम्प, सुनिः, प्रवेपन	वातघ्न औषध
9) क्षुधा	काश्य, दैर्बल्य, वैवर्ण्य, अगमर्द, अरूचि, भ्रम	स्निग्ध उष्ण लघु भोजन
10) पिपासा	कण्ठास्यशोष, श्रम साद, बाधीर्य, हुटि व्यथा,	शीत तर्पण
11) बाष्प (अश्रु)	प्रतिश्याय, अक्षिरोग, हुद्रोग, अरूचि, भ्रम, मन्यास्तंभ	स्वप्न, मद्य, प्रिय कथा
12) निद्रावेग	जृम्भा, अगमर्द, तन्द्रा, शिरोरोग, अक्षिगौरव,	स्वप्न, संवाहन
13) श्रमज श्वास	गुल्म, हुद्रोग, संमोह,	विश्राम, वातघ्न क्रिया
14) कास (वा.)	कासवृद्धी, श्वास, अरूचि, हुदामय, शोष	कास व्याधी समान चिकित्सा

अवपीडक स्नेह – प्राग्भक्त काले स्नेह व जीर्णान्तिक काले उत्तम मात्रा मे स्नेह

ऋतुचर्या – कालविभाग

सुश्रुतानुसार 11 विभाग	
1) लघु अक्षर उच्चारनमात्र काल	1 अक्षिनिमेष
2) 15 अक्षिनिमेष	1 काष्टा
3) 30 काष्ठा	1 कला
4) 20 कला	1 मुहुर्त
5) 30 मुहुर्त	1 अहोरात्र
6) 15 अहोरात्र	1 पक्ष
7) 2 पक्ष	1 मास
8) 2 मास	1 ऋतु
9) 3 ऋतु	1 अयन
10) 2 अयन	1 संवत्सर (1 वर्ष)
11) 5 संवत्सर	1 युग

अयन – 2

1) उत्तरायन (आदान काल) = अग्निगुणप्रधान

उत्तरोत्तर प्राणी बल क्षपण

शिशिर वसंत ग्रीष्म

ऋग्रं से तिक्त कषाय कटू रस बलवान

2) दक्षिणायन (विसर्ग काल) = सोमगुणप्रधान

उत्तरोत्तर प्राणी बल वर्धन

वर्षा शरद हेमंत

ऋग से अम्ल लवण मधुर रस बलवान

कालचक्र – निमेष से युग पर्यन्त परिवर्तमान कालचक्र उच्चते ।

ऋतुगणना – 1) चरक संहिता – हेमंत से प्रारंभ

2) सुश्रुत संहिता – शिंसिर से प्रारंभ

सामान्य ऋतुविभाजन

दिन व ऋतु संबंध (सुश्रुतानुसार)

1) शिंसिर	माघ व फाल्गुन	1) पूर्वान्हि	वसंत ऋतु
2) वसंत	चैत्र व वैशाख	2) मध्याह्नि	ग्रीष्म ऋतु
3) ग्रीष्म	ज्येष्ठ व आषाढ	3) अपराह्नि	प्रावृट ऋतु
4) वर्षा	श्रावण व भाद्रपद	4) सायंकाल (प्रदोष)	वर्षा ऋतु
5) शरद	आश्विन व कार्तिक	5) अर्धरात्रि	शरद ऋतु
6) हेमंत	मार्गशीर्ष व पौष	6) उषःकाल	हेमंत ऋतु

ऋतुनुसार सेवनीय जल (सुश्रुत चि. 24)

- 1) वर्षा ऋतु – अंतरिक्ष / औद्धिद
- 2) शरद – सर्व जल
- 3) हेमंत – सारस / ताडाग जल
- 4) ग्रीष्म – कूप / सारस जल
- 5) वसंत – कूप / सारस जल
- 6) प्रावृट – चौटय

ऋतु हरीतकी सेवन (भावप्रकाश)

सिंधुथ शर्करा शुंठी कणा मधु गुड़ैः ऋमात् । वर्षादिषु अभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥

ऋतु नाम	-	अनुपान	ऋतु नाम	-	अनुपान
वर्षा	-	सैंधव	शिंसिर	-	कणा (पिपली)
शरद	-	शर्करा	वसंत	-	मधु
हेमंत	-	शुंठी	ग्रीष्म	-	गुड

ऋतुचर्या –

- 1) वातपितजन्य व्याधी – ग्रीष्म ऋतुचर्या
- 2) वातकफजन्य व्याधी – वसंत ऋतुचर्या
- 3) कफपितजन्य व्याधी – शरद ऋतुचर्या

ऋतुनुसार बल स्थिती –

आदावन्ते च दौर्बल्यं विसर्गादानयोर्नृणाम् । मध्ये मध्यबलं त्वन्ते श्रेष्ठमग्रे च निर्दिशेत् ॥ च.सू. 6/8

- 1) विसर्गकाल का आदि (वर्षा)
- 2) आदानकाल का अन्त (ग्रीष्म)

} दुर्बलता

- 3) विसर्गकाल का मध्य (शरद) |
 4) आदानकाल का मध्य (वसंत) |
 5) विसर्गकाल का अन्त (हेमंत) |
 6) आदानकाल का आदि (शिशिर) |

मध्यम बल

उत्तम बल

ऋतुचर्या -

1) हेमंत ऋतुचर्या -

अ) स्थिती - शीते शीतानिलस्पर्शसंरूप्यो बलिनां बली । पक्षा भवति हेमन्ते मात्राद्व्यगुरुक्षमः । च.सू. 6/9
 शीत वात स्पर्श से आभ्यन्तर अग्नि प्रबल होती है अतः गुरुद्व्य पचन में सक्षम
 वायुः शीतः शाते कुप्यति । वायु का शीत गुण से प्रकोप संभव

ब) योग्य आहार -

- 1) स्निग्ध अम्ल लवण रस (वाग्भट- स्वादु अम्ल लवण)
- 2) मांस - औदक आनूप मांस मेद्य आहार उपयोजना. बिलेशय प्रसह मांस
- 3) अनुपानार्थ - मदिग, शीधु, मधु, उष्ण जल गौड अच्छ सुरा (वाग्भट)
- 4) गोरस, इक्षुविकृती, वसा, तैल, नव ओदन, नव अन्त

क) योग्य विहार -

- 1) अभ्यंग, उत्सादन, मूर्धन्य तैल, जेन्ताकस्वेद,
- 2) निवासार्थ - भूमिगृह, उष्ण गर्भगृह,
- 3) यान, शयन, आसन संवृत (ढक्कर) रखना व उनपर प्रावार (रूड से बने), अजिन (सुखकर रोम युक्त चर्म), प्रवेणी (जूट या पटटे से बने वस्त्र), कौषेय (शामी), विछाकर बैठना ।
- 4) अगरू आदि का शरीर पर लेप करना ।
- 5) यथेच्छ मैथुन करना ।
- 6) नियुधं कुशलैः सार्धं पादावातं च युक्तिः (वाग्भट)

ड) वर्जनीय आहार विहार -

वर्जयेद् अन्नपानानि वातलानि लघुनि च । प्रवातं प्रमिताहारं उदमन्थं हिमागमे ॥

उदमन्थ = जल में मंथ विधी से तैयार किया हुआ सातु

2) शिशिर ऋतुचर्या -

हेमंत समान चर्या पालन. विशेष रूप से निवात व उष्ण गृह में आश्रय करना चाहिए ।

वर्ज्य आहार -

कटुतिक्कषयाणि वातलानि लघुनि च । वर्जयेद् अन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च ॥

3) वसंत ऋतुचर्या -

अ) स्थिती -

हेमंत में निचीत इलेमा सूर्यसंताप से अग्नि को मन्द कर देता है अतः अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति

ब) योग्य आहार -

- 1) यव गोधूम भोजन. शारभ, शश, एण्य, लाव कपिंजल मांस सेवन. वाग्भट - क्षोद्र व जांगल मांस
- 2) निर्गद (दोषरहीत) सीधु, माध्विक (मधुनिर्मित) मदय पान.
- 3) शृंगबेराम्बु, साराम्बु, मध्वम्बु, जलदाम्बु सेवन (वाग्भट)

क) योग्य विहार –

- 1) वमन, व्यायाम, उद्वर्तन, कवलग्रह, अंजन, चंदन अगरु आदी का शरीर पर लेप
- 2) स्त्री, उपवन, योवन का अनुभव.

ड) अयोग्य आहार विहार –

गुरु अम्ल स्निग्ध मधुर आहार व दिवास्वाप

४) ग्रीष्म ऋतुचर्या –

अ) स्थिती –

रवि के प्राबल्य से स्नेह का शोषण; अतः रुक्ष व उष्ण गुण प्रबलता

ब) योग्य आहार –

- 1) स्वादु, शीत, द्रव, स्निग्ध अन्नपान. जांगल मृगपक्षी मांसरस,
- 2) शीत सशर्करायुक्त मंथ, घृत, पय, शालीअन्न।
- 3) नातिधन रसाला, रागखाण्डव, पानक, पंचसार, पाटलावासीत व सकर्पूर जल (वाग्भट)
- 4) चन्द्रनक्षत्रशीत ससित माहिष क्षीर (वाग्भट)

क) योग्य विहार –

- 1) दिन मे शीतगृह मे निवास व रात्रि मे चन्द्रांशु युक्त शीतल संपर्क युक्त जगह निवास. धारागृह
- 2) चन्दनादी का लेप, मुक्ता मणि आदी का विभूषण।
- 3) कानन (शीतल उद्यान) शीतजल, शीत कुसुम सेवन

ड) वर्ज्य आहार व विहार –

- 1) मदयं न वा पेयं अधदा सुबहु उदकम्।
- 2) लवण, अम्ल, कटु, उष्ण, वर्ज्य
- 3) पैथुन व व्यायाम

५) वर्षा ऋतुचर्या –

अ) स्थिती –

आदान दुर्बले देहे पक्ता भवति दुर्बलाः। शरीर व जाठराग्नि उभय दुर्बलता
जल अम्लविपाकी
वर्षासु अग्निबले क्षीणे कुप्यति पवनादयः। तस्मात् साधारणः सर्वे विधिर्वर्षासु शस्यते ॥

ब) योग्य आहार –

- 1) पानभोजनसंस्कारान् प्रायः क्षोद्रान्वितं भजेत् ।
- 2) अल्प अम्ल लवण स्नेहयुक्त द्रव्यो की आहार मे प्रधानता ।
- 3) अनिसंरक्षणवता रहकर यव गोधूम शाली पुराण जांगल मांस संस्कृत यूष सेवन
- 4) पानार्थ – क्षोद्रयुक्त अल्प माध्यिक अरिष्ट वा अम्बु सेवन
माहेन्द्र जल, तप्तशीतजल, सारस वा कौप जल
- 5) जांगल पिशीत यूष मध्वारिष्ट, पंचकोलावचूर्णीत मस्तु, दिव्य जल (वाग्भट)

क) योग्य विहार –

- 1) प्रधर्षन, उद्वर्तन, स्नान गन्धमाल्यपरे भवेत् ।
- 2) लघुशुद्धाम्बर (हलके व पवित्र वस्त्र धारण), अक्लेदी (क्लेदरहीत स्थान पर निवास)
- 3) अपादचारी सुरभिः सततं धुपिताम्बरः (वाग्भट)

ड) वर्ज्य आहार विहार

उदमंथ, दिवास्वाप, अवश्याय, नदीजल, व्यायाम, आतप, व्यवाय ।

६) शारद ऋतुचय्या – (घनात्यय = घन + अत्यय = मेघ नाश = शारद ऋतु)

अ) स्थिती –

वर्षा ऋतु में संचित हुआ पित्त सूर्य की प्रखर किरणों से प्रकुपीत होता है ।

ब) योग्य आहार –

1) मधुर, शीत लघु तिकरसयुक्त अन्नपान

2) लाव कपिंजल एण उरभ शरभ शश मांस सेवन

3) शाली गोधूम यव सेवन, तिक्क सर्पि पान सिता धात्री पटोल मधुअ जांगल (वाग्भट)

4) हंसोदक वर्णन – दिवा सूर्याशुसंतप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम् । कालेन पक्वं निर्दोषं अगस्त्येन निर्विधीकृतम् ।
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं शुचि । स्नानपानावगाहेषु शास्यते तद्यथाऽमृतम् ॥ च.
नाभिष्ठान्दि न वा रूक्षं पानादिष्वमृतोपमम् । (वाग्भट)

क) योग्य विहार –

1) पुष्पमाला विमल शुची वस्त्र धारण घृतपान विरेचन रक्तमोक्षण (वाग्भट)

2) शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे च इन्दुरश्मयः।

ड) वर्ज्य आहार विहार –

1) आतप सेवन, तैल, वसा, अवश्याय, आनूप औदक मांस, क्षार, दधि, दिवास्वाप, प्राग्वात

:

ऋतुसंधि –

वर्णन – अष्टांग संग्रह, शारंगधर

अष्टांगसंग्रह – आदी के ऋतु के अन्त के 7 दिन व अगले ऋतु के आरंभ के 7 दिन = 14 दिन

सेवन – तत्र पूर्वो विधिः त्याज्यः सेवनीयो अपरः ऋमात् ॥

पूर्व ऋतु की विधि ऋमशः त्यागकर अपर ऋतु की विधि का ऋमशः सेवन ।

एसा न करने पर – असात्म्यज रोग उत्पत्ति

शारंगधरोक्त ऋतुसंधि –

कार्तिक के अन्त के 8 दिन व अगहण (मार्गशीर्ष) के प्रथम 8 दिन = 16 दिन

यमदंष्ट्रा नामकरण

स्वल्पभुको ही जीवति ।

दोषनिर्हरण काल –

माधवप्रथमे मासि नभस्य प्रथमे पुनः । सहस्य प्रथमे चैद हारयेद्दोषसंचयम् ॥ च.सू. 8/46

1) माधव (वैशाख) के प्रथमे मासे – चैत्र मे कफ का निर्हरण

2) नभस्य (भाद्रपद) के प्रथम मास मे – श्रावण मे वात का

3) सहस्य (पौष) के प्रथम मास मे – अगहण (मार्गशीर्ष) मे पित्त का निर्हरण करना चाहिए ।

जल =

अन्तरिक्ष जल रस – अव्यक्त रस

अन्तरिक्ष जल गुण – 6 (च.सू. 27/197)

1) शीत 2) शुचि 3) शिव 4) मुष्ट (स्वादु) 5) विमल 6) लघु

ऋतुनुसार जल गुणधर्म – (च.सू. 27/203)

- 1) वर्षा – नविन जल मधुर, गुरु, अभिष्यंदी
- 2) शरद – लघु अनभिष्यंदी, सुकुमार व स्निग्धभूयिष्ठ भोजी में उपयोगी
- 3) हेमंत – स्निग्ध, वृष्य, बलहित, गुरु
- 4) शिशिर – हेमंत अपेक्षा लघुतर, कफवातजित,
- 5) वसंत – कषाय, मधुर, रुक्ष
- 6) ग्रीष्म – अनभिष्यंदी

भूमीनुसार जल गुणधर्म

चरकानुसार (च.सू. 27/199)	सुश्रुतानुसार (सुश्रुत सू. 45/6)
1) श्वेत भूमी – कषाय	1) पृथ्वीगुणभूमीगुणवहुल – अम्ल लवण
2) पाण्डुर भूमी – तिक्त	2) अम्बुगुणभूयिष्ठ – मधुर रस
3) कपिल भूमी – क्षार	3) तेजोगुणभूयिष्ठ – कटू तिक्त
4) उषर भूमी – लवण	4) वायुगुणभूयिष्ठ – कषाय
5) पर्वतपर – कटू	5) आकाशगुणभूयिष्ठ – अव्यक्तरस – श्रेष्ठ जल
6) कृष्णमृतिका – मधुर	

सामुद्रजल – विस्त्र, त्रिटोषकर. लवणरसयुक्त। इस जल को आश्विन मास के बिना नहीं पीना चाहिए।

गांग / सामुद्र जल परीक्षा (वाग्भट) – रजत पात्र में शाली पिंड उक्त जल सह एक मुहूर्त रखने पर वह

अविवर्ण रह जाय – गांग जल अन्यथा – सामुद्र जल

अंतरिक्ष जल प्रकार – 4

- 1) धार – वर्षा ऋतु में प्राप्त। लघुत्वात प्रधान। दो प्रकार – 1) गांग 2) सामुद्र
- 2) कार – कार (गारा) / ओले से प्राप्त जल
- 3) तौषार – दवबिंदु से प्राप्त जल
- 4) हैम – पर्वतीय बर्फ से प्राप्त जल

भोम जल प्रकार – वाग्भट – 8 सुश्रुत – 7

- | | | | |
|---------------|-----------|----------|-----------------------------------|
| 1) कौप | 2) सारस | 3) ताडाग | 4) चौण्ड्य |
| 5) प्रस्त्रवण | 6) औद्धिद | 7) नादेय | 8) वापी वापी सुश्रुत ने नहीं माना |

ऋतुनुसार जल सेवन (सुश्रुत)

- 1) वर्षा – अन्तरिक्ष जल = महागुणत्वात
- 2) शरद – सर्व जल = प्रसन्नत्वात
- 3) हेमंत – सारस / ताडाग
- 4) वसंत – कौप / प्रस्त्रवण
- 5) ग्रीष्म – कौप / प्रस्त्रवण
- 6) प्रावृट – चौण्ड्य

नदीयों के जल गुणधर्म

नदी	चरकानुसार गुण	सुश्रुतानुसार गुण
1) हिमवत्प्रभवा	पथ्यकारक	हुद्रोग, श्वयथु, शिरोरोग, इलीपद, गलगंड
2) मलयप्रभवा (मलयपर्वतोत्पन्न)	विमलोदक, अमृतसमान	कृमी उत्पत्ति
3) पश्चिमाभिमुखी	निर्मलोदक, पथ्यकर	लघुउदक कारण पथ्यकर
4) पूर्वाभिमुखी	गुरुलगुणयुक्त	गुरु उदक के कारण न प्रशस्त
5) पारीयात्र, विन्ध्य, सह्यप्रभवा	शिरोरोग, हुद्रोग, कुष्ठ, इलीपद	सह्य- कुष्ठ, विन्ध्य - कुष्ठ व पांडु
6) दक्षिणाभिमुखी	-----	साधारणत्वात् नातिदोषल
7) माहेन्द्रप्रभवा	-----	इलीपद, उदर
8) प्राच्यावन्त्या अपरावन्त्या	-----	अर्श उत्पत्ति
9) पारीयात्रप्रभवा	-----	पथ्य, बल आरोग्यकर

जलदोष - 6 (सु.सू. 45/11)

- 1) स्पर्शदोष 2) रूपदोष 3) रसदोष 4) गन्धदोष 5) वीर्यदोष 6) विपाकदोष

दूषित जल शोधन उपाय - (सु.सू. 45/12)

- 1) अग्निक्वथनं 2) सूर्यातिपपतापनं 3) तप्तायः पिण्डसिकतालोष्ट्राणां वा निर्वापणं
4) नाग चंपक उत्पल पाटला पुष्प अदिवासनम्

कलुषित जल प्रसादन उपाय - 7 (सप्त कलुषस्य प्रसादनानि भवन्ति) सु.सू. 45/17

कतक, गोमेद, मुक्ता, बिसग्रन्थि, शैवालमूल, मुक्ता, मणि इनका प्रक्षेप

जल पात्र रखने के साधन - 5 (पञ्च निक्षेपणानि भवन्ति) सु.सू. 45/18

- 1) फकं (फलक) 2) न्यष्ट (त्रिपादिका) 3) मुण्जवलय
4) उदकमण्चिका 5) शिक्य

जल शितीकरण उपाय - 7 (सप्त शितीकरणानि भवन्ति) सु.सू. 45/19

- 1) प्रवातस्थापनं 2) उदकक्षेपण 3) यष्टिकाभ्रमणं
4) व्यंजनं (हवा देना) 5) वस्त्रोधरणं 6) वालुकाप्रक्षेपणं 7) शिक्यावलम्बनं

गगनाम्बु - त्रिदोषधन, बल्य, रसायन, मेध्य

सामुद्रजल - विस, लवण, त्रिदोषकर

शीत जल प्रशस्ती	शीत जल निषेध
मूर्छा, पित्तरोग, उष्णकाल, दाह, विष, रक्तविकार, भ्रम क्लम, मदात्यय, तमकश्वास, वमथु, उर्ध्वग रक्तपित्त	पार्श्वशूल, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, नवज्वर स्तिमीत कोष्ठ, सद्यशुद्धी, हिक्का, स्नेहपान पश्चिमात

योग -

परिभाषा -

- 1) योगः चित्तवृत्ति निरोधः । पातंजल योगदर्शन
2) योगः कर्मसु कौशलम् । भगवत् गीता

योग अंग -

- 1) पातंजल योगसूत्रानुसार - 8
- | | | | |
|---------------|----------|----------|--------------|
| 1) यम | 2) नियम | 3) आसन | 4) प्राणायाम |
| 5) प्रत्याहार | 6) धारणा | 7) ध्यान | 8) समाधि |

2) घेरंड संहितानुसार - 7

- 1) घटक्रिया - देहशुद्धी के लिए
- 2) आसन - शरीर दृढ़ता के लिए
- 3) मुद्रा - स्थैर्यार्थ
- 4) प्रत्याहार - धैर्य प्राप्त्यर्थ
- 5) प्राणायाम - लाघव प्राप्त्यर्थ
- 6) ध्यान - प्रत्यक्षात्मन प्राप्त्यर्थ
- 7) समाधि - निर्लिप्तता के लिए

आचार्य पतंजली नुसार

1) बहिरंग योग - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार

2) अंतरंग योग - धारणा, ध्यान, समाधि

संयम - धारणा, ध्यान, समाधि

कर्मयोग प्रकार - 9

- | | | | |
|-------------|-------------|-------------|------------|
| 1) राजयोग | 2) हठयोग | 3) भक्तियोग | 4) कर्मयोग |
| 5) ज्ञानयोग | 6) मंत्रयोग | 7) लययोग | 8) नादयोग |
| 9) जपयोग | | | |

1) राजयोग -

रज व रेतस के संयोग को राजयोग कहते हैं।

रज गुण पर नियंत्रण कर उसपर सत्त्व गुण का संस्कार करना।

2) हठयोग -

कायासाधन योग पद्धति है; इसमें सौष्ठव प्राप्त किया जाता है।

राजयोग सिद्धयर्थ हठयोग यह पूर्वाभ्यास माना जाता है।

हठयोग व राजयोग संबंध

हठयोग	राजयोग
तमोगुणी व्यक्ति के लिए उपयुक्त	रजोगुणी व्यक्ति के लिए उपयुक्त
शरीरसाधना प्रधान योग	चित्तसाधना प्रधान योग
राजयोग प्राप्त्यर्थ पूर्वाभ्यास माना जाता है	ज्ञानयोग की पूर्वावस्था माना जाता है

3) ज्ञानयोग -

विवेक, वैराग्य, घटसंपत्ति (शम, दम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधन) इनकी वृद्धी कर ज्ञानयोग प्राप्ति की जाती है। सत्त्व गुण वर्धन किया जाता है।

4) कर्मयोग -

प्रत्येक कर्म को कर्मफल की इच्छा न रखकर अहंकार रहीत उसका इश्वरार्पण किया जाता है।

कार्यकौशल्यता बढ़कर नया सत कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

5) भक्तियोग –

नवविधा भक्ति का अवलंब कर आत्मा का परमात्मा सह एक्य किया जाता है ।

6) लययोग –

षटचक्र पर ध्यान कर कुंडलिनी शक्ती जागृत करना ।

7) मंत्रयोग –

मंत्रजप द्वारा मन की चंचलता दूर कर मंत्रयोग कहा जाता है ।

8) नादयोग –

संगीत प्रधान, भक्तीपूर्वक शाब्दिक आराधना द्वारा इश्वर चिंतन करना ।

चरकानुसार योगीयों का अष्टविध ऐश्वर्य –

- | | | | |
|-----------------|-----------------|------------------|----------------------|
| 1) आवेश | 2) चेतसो ज्ञानं | 3) छन्दतः क्रिया | 4) दिव्यदृष्टी |
| 5) दिव्यश्रोत्र | 6) दिव्यस्मृती | 7) दिव्यकांती | 8) इच्छित दृष्यानुभव |

यौगिक ग्रंथो नुसार सिद्धी संख्या = 23

इनमें से 8 महत्वपूर्ण –

- | | | | |
|-------------|--------------|-----------|-----------|
| 1) अणिमा | 2) महिमा | 3) गरिमा | 4) लोधेमा |
| 5) प्राप्ती | 6) प्राकाम्य | 7) इशित्र | 8) वशित्र |

नैषिकी चिकित्सा –

हन्तियुक्त चिकित्सा तु नैषिकी या विनोपधाम् । च.शा. 1/94

उपधाविरहीत चिकित्सा को नैषिकी चिकित्सा कहा जाता है ।

सत्याबुध्दी –

शुद्ध सत्त्व से जो बुध्दी प्रवर्तीत होती है, उसे सत्याबुध्दी कहते हैं । चरक शा. 1

मोक्ष – चरकानुसार

मोक्षो रजस्तमोऽभावात् बलवत्कर्मसंक्षयाद् ।

वियोगः सर्वसंयोगैरपुनर्भव उच्यते ॥ च.शा. 1/142

- 1) रज व तम का अभाव
- 2) बलवान कर्म का क्षय
- 3) सर्व संयोग से वियोग होना

योगसिद्धीकर भाव – 6

- | | | | | | |
|-----------|---------|----------|----------------|-----------|-------------------|
| 1) उत्साह | 2) साहस | 3) धैर्य | 4) तत्त्वज्ञान | 5) निश्चय | 6) जनसंग परित्याग |
|-----------|---------|----------|----------------|-----------|-------------------|

हठयोग प्रदिपीकानुसार योगाभ्यास के लिए आवश्यक –

ब्रह्मचारी मिताहारी त्यागी योगपरायणः ।

मिताहारी – उदर का 1/4 भाग रिक्त रखकर लिया गया सुस्निग्ध मधुर आहार ।

अष्टांग योग –

- | | | | | | | | |
|------------|---------|--------|--------------|---------------|----------|----------|----------|
| ऋग – 1) यम | 2) नियम | 3) आसन | 4) प्राणायाम | 5) प्रत्याहार | 6) धारणा | 7) ध्यान | 8) समाधि |
|------------|---------|--------|--------------|---------------|----------|----------|----------|

1) यम –

देहेन्द्रियेषु वैराग्यं यम इत्युच्यते बुधैः । त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद्

तत्र अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहा यमाः । पा.यो.द.

अस्तेय – स्तेय याने चोरी करना; अस्तेय चोरी न करना ।

अपरिग्रह – किसी भी वस्तु का संचय न करना ।

2) नियम –

अनुरक्ति: परे तत्वे सततं नियमः स्मृतः । त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद्

परमात्मतत्त्व मे सतत अनुरक्ती रखना नियम है ।

शौच संतोष तपः स्वाध्याय इश्वर प्रणिधानानि नियमाः । पा.यो.द.

स्वाध्याय –

प्रणवादि पवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा । पा.यो.द.

पाप नाशन करनेवाले ओम, गायत्री आदी मंत्रों का जाप करना; मोक्षदायी शास्त्र का अध्ययन करना ।

इश्वरप्रणिधान – किसी कर्म के फल की इच्छा न कर वह इश्वर को अर्पण करना ।

क्रियायोग – तप, स्वाध्याय, इश्वरप्रणिधान इनको क्रियायोग कहा है ।

3) आसन –

स्थिर सुखमासनम् । पा.यो.द.

आसन स्थान – ध्यानबिंदु उपनिषद् व हठयोगप्रदिपीका = प्रथम स्थान

पातंजल योगसूत्र व शाण्डील्योपनिषद् = तृतीय स्थान

तेजोबिंदुपनिषद् = सप्तम स्थान

आसन वर्गीकरण –

1) ध्यानात्मक – पद्मासन, सिध्दासन, भद्रासन, वज्रासन, स्वस्तिकासन

2) शरीर संवर्धनात्मक – गोमुखासन, मत्स्यासन, मत्स्येन्द्रासन, पश्चिमोत्तसन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन

3) तिश्रान्तीकर आसन – शवासन

एकुण आसन संख्या = 84

आसनजय पश्चात प्राणायाम करने का निर्देश

1) पद्मासन – सर्व व्याधीनाशन

2) भद्रासन – सर्व व्याधीनाशन

3) मत्स्येन्द्रासन – इसके प्रदीर्घ अभ्यास से प्राणायाम के सिवाय कुंडलिनी शक्ति जागृत होती है ।
प्रचंडरूपमंडलखंडनास्त्रम् – प्रचंड व्याधी के समूह को नष्ट करनेवाला ।

4) मयुरासन – जाठरागनीवर्धक है एवं इसके अभ्यास से विष भी पचन होता है ।

4) प्राणायाम –

ध्यानबिंदु उपनिषद् मे षडंग योग के अंतर्गत प्राणायाम प्रथम अंग वर्णन ।

मैत्रेय उपनिषदानुसार प्राणायाम द्वितीय अंग वर्णन

पतंजलीनुसार केवल पाच सूत्रों मे प्राणायाम का वर्णन है ।

प्राणायामो वायोः निरोधः । डल्हण (सु.उ. 50/16)

योगशास्त्रानुसार प्राण प्रकार – 10

1) नाग – मुख (उद्धार) 2) कूर्म – नेत्र (निमेषोन्मेष) 3) कृकल – नासिका (क्षवथु)

4) देवदत्त – जूँभा 5) धनंजय – सर्वशरीर (शोथ)

प्राणायाम विधी –

- 1) पूरक – बाह्य अंबरपीयुष का आभ्यंतरतः पूरण करना ।
- 2) रेचक – पूरक मे आभ्यंतरतः लिया गया अंबरपीयुष उच्छवास क्रिया द्वारा बाहर निकालना ।
- 3) कुंभक – पूरक व रेचक दरम्यान अंबरपीयुष को प्राणवह स्त्रोतस मे धारण करना ।

कुंभक – 2

- 1) अंतःकुंभक – पूरक क्रिया मे आभ्यंतरतः अंबरपीयुष लेने के बाद अल्प समय के लिए रोक कर रखना
- 2) बहिःकुंभक – रेचक उपरांत अल्प समय श्वास न लेकर उसके बाद पूरण करना ।

कुंभक भेद – 2 (हठयोगप्रदिपीकानुसार)

- 1) सहित कुंभक – पूरक व रेचक सहित किया जानेवाला कुंभक
- 2) केवल कुंभक – पूरक व रेचक विरहीत किया जानेवाला कुंभक

नाडीशुध्दी –

प्राणायाम फल प्राप्त्यर्थ प्राणायाम पूर्व शारीरिक शुध्दी आवश्यक है

1) शारीरिक शुध्दी – षटक्रियाद्वारा = निर्मण

2) मानसिक शुध्दी – समानु

नाडीशुध्दी प्राणायाम विधी – दक्षिण हस्त द्वारा वाम नासापुट बंद कर दक्षिण नासा से पूर्ण उच्छवास छोड़ना
ततपश्चात् दक्षिण नासापुट बंद कर 1:4:2 इस मात्रा मे पूरक कुंभक व रेचक क्रिया करना ।

पूरक = 16 मात्रा

कुंभक = 64 मात्रा

रेचक = 32 मात्रा

नाडीशुध्दी लक्षण –

- 1) कायस्य कृशता
- 2) कांति
- 3) वायोः अनलस्य प्रदीपनम्
- 4) नादभिव्यक्ति (कर्ण मे नाद का स्पष्ट सुनना)
- 5) आरोग्यं जायते

प्राणायामार्थ स्थिति –

पद्मासन, सिद्धासन वा स्वस्तिकासन

मूलबंध

प्राणायाम मात्रा –

1:4:2 = पूरक :कुंभक:रेचक – त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद्, याज्ञवल्कनुसार

6:8:5 = पूरक:कुंभक:रेचक – गोरक्ष संहितानुसार

1) प्रवर प्राणायाम – 20:80:40

2) मध्यम प्राणायाम – 16:64:32

3) अवर प्राणायाम – 12:48:21

विष्णुपुराणानुसार प्राणायाम प्रकार – 2

1) सबीज प्राणायाम – ओमकार आदी जप के साथ किया हुआ प्राणायाम

2) निर्बीज प्राणायाम – ओमकार आदी जप विरहीत किया हुआ प्राणायाम

कुंभक भेद (घेरंड संहिता व गोरक्षसंहिआतानुसार) - 8

- 1) सहित 2) सूर्यभेदी 3) उज्जायी 4) शीतली
 5) भस्त्रिका 6) भ्रामरी 7) मूर्च्छा 8) केवली

हठयोगप्रदीपिकनुसार - संहित व केवली के बदले सित्कारी व प्लविनी का उल्लेख

कुंभक भेद	विधि	लाभ
1) सूर्यभेदी	पद्मासन या सिद्धासन मे बैठकर पूरक- जालंधर बंध कर कुंभक व पश्चात रेचक क्रिया करे	कपालशोधन कफविकार स्थौल्य खालीत्य पालीत्य नाशन
2) उज्जायी	पद्मासन मे उभय नासाद्वारा पूरण, जालंधर बंध कर कुंभक व तत्पश्चात वाम नासाद्वारा रेचन	लावण्य वर्धन उदर अजीर्ण कास ज्वर प्लीहरोगनाशन
3) सीत्कारी	पद्मासन मे जिह्वा आभ्यंतरतः वक्र कर जिह्वाग्र दंतमूल मे लगाकर पूरक उसके 4 पट कुंभक व दुगुना रेचक	क्षुधा तृष्णा नियंत्रण आलस्य नाश शीतदायी वीर्यदोष व त्वकविकारधन
4) शीतली	पद्मासन मे ओष्ठ को बाहर निकालकर जिह्वा की नलिकाकार रचना कर पूरक कुंभक व रेचन करना	रक्तविकार यकृत प्लीहा गुल्मनाशन ज्वर अजीर्ण कफज व्याधी नाशन
5) भस्त्रिका	पद्मासन मे मुख बंद कर वाम नासा द्वारा लोहार के भस्त्र समान पूरक व रेचक जलद गती से करे	त्रिदोषधन मधुमेहधन मेदोनाशन अग्निवर्धक
6) भ्रामरी	पद्मासन मे मुख बंद कर उभय नासारंध द्वारा यथाशक्ती पूरक कर मात्रावत कुंभक, भुंग आवाजसम रेचक	त्रिदोषधन तंद्रा निद्रा नाशक वीर्यदोष व दौर्बल्य नाशन
7) मूर्च्छा	पद्मासन मे वाम नासा द्वारा पूरक; जालंधर बंध कर कुंभक; जालंधर बंध निकालकर रेचक इसका अभ्यास	चित्त एकाग्रता, चंचलता नाशन सत्त्व गुण वृद्धी
8) प्लाविनी	मत्स्यासन मे उभय नासारंधद्वारा पूरक इतना करे की उदर भर जाय तत्पश्चात मात्रावत कुंभक व रेचक करे	जल पर तैरने की शक्ती प्राप्ति अग्नि दीप्ती शगीर लाघवता

संहित प्राणायाम - पूरक रेचक व कुंभक इन तीनो अंगो सह किया जानेवाला प्राणायाम

केवली प्राणायाम - पूरक व रेचक के सिवाय प्राणायाम किया जाता है वह केवली प्राणायाम कहलाता है

घेरंड संहितानुसार संहित प्राणायाम भेद - 2

- 1) सगर्भ प्राणायाम - मन्त्रोच्चारसह किया जानेवाला प्राणायाम
 2) निर्गर्भ प्राणायाम - मन्त्रोच्चार सिवा किया जानेवाला प्राणायाम

पातंजल योगदर्शनानुसार देश काल संख्या आधार पर प्राणायाम भेद - 4

- 1) बाह्यवृत्ती प्राणायाम
- 2) आभ्यंतरवृत्ती प्राणायाम
- 3) स्तंभवृत्ती (संहित)
- 4) स्तंभवृत्ती (केवल)

प्राणायाम लाभ -

- 1) बुद्धी वर्धन 2) मन चंचलता नाशन 3) अग्निवर्धन

योगिक शुद्धीक्रिया - षटकर्म

मेदःश्लेष्माधिकः पूर्व षटकर्मणि समाचरेत् ।

अन्यस्तु नाचरेतानी दोषाणा समभावतः ॥ ह.प्र.

मेद कफाधिक व्यक्ती प्राणायाम के पूर्व षटकर्म करे; इतर व्यक्ती इनका आचरण न करे ।

षटक्रिया

धौति	बस्ती	नेति	नौलि	त्राटक	कपालभाति
	पवन	जल	सूत्र जल	वाम	दक्षिण मध्य
अंतर्धौति	पंचधौति	हुदधौति	मूलशोधन		
1. वानसार	1. दंतमूल	1. दंडधौति	(गुदधौति)		
2. वारिसार	2. जिह्वामूल	2. जलधौति			
3. वन्हिसार	3. कर्णमूल	3. वस्त्रधौति			
4. बहिष्कृत	4. नासिका				
	5. भाल				

अंतर्धौति -

1) कुंजल (गजकरणी)	हनी की सूंड की तरह जल आभ्यंतरतः लेकर वमनद्वारा उसका बाहर निकालना	आमाशयस्थ विकृत पित्त, कफ आहार निर्गमन, त्वकरोगनाशन
2) वातसार धौति	रिक्त कोष्ठ अवस्थामें काकचंचुवत ओष्ठ कर वायु उदर में भरकर पश्चात गुदमार्ग से निकाला जाता है	जाठराग्निवर्धक आमाशय विकार प्रतिबंधक
3) वारिसार धौति (शंखप्रक्षालन)	लवणमिश्रीत कोष्ठ जल आकंठपान कर विविध आसन कर गुदद्वारा बाहर निकाला जाता है	महास्त्रोतस शुद्धी लाघवता
4) वन्हिसार (अग्निसार)	उदरगत स्नायु चालन कर अंतस्थ अग्नि प्रदीप्त किया जाता है; पूरक व रेचक पुनःपुनः किया जाता है	मलनिर्हरण में मदद, अग्निमादय में लाभकर
5) बहिष्कृत धौति	ओष्ठ की काकमुद्रा कर वायु अंदर लेकर तीर्यक ताडासन कटिचक्रासन भुजंगासन कर गुदमार्ग द्वारा वायु निर्गमन	अन्नवह स्त्रोतस के उत्तर मार्ग की शुद्धी होती है

पंचधौति -

- 1) दंतधौति – खदिरसार य निंब कांड इससे दंत का चर्वण किया जाता है
- 2) नासिका धौति – नेति क्रिया द्वारा आभ्यंतर नासामार्ग की शुद्धी की जाती है
- 3) जिह्वामूल धौति – तर्जनी व मध्यमा अंगुलीद्वारा गल मार्ग की शुद्धी की जाती है
- 4) कर्णमूल धौति – तर्जनीद्वारा कर्ण मे मर्दन – नादयोग प्राप्त्यर्थ
- 5) भाल वा कपालरंध धौति – निद्रापश्चात दक्षिण अंगुष्ठ द्वारा भ्रुमध्या स्थाने मर्दन – नासासमीपस्थ कफ निर्हर
- 6) गुदधौति / मूलधौति – हरिद्रा मूल गुद मे प्रविष्ट कर बाहर निकालना व पश्चात गुदप्रक्षालन

हुदधौति –

हुदय समीपस्थ अवयव व आमाशय इनका शोधन किया जाता है; इसके तीन प्रकार है

- 1) दंडधौति – गलमार्ग तक जानीवाली मृदू नलिका द्वारा आमाशयस्थ स्राव निकाले जाते है

श्वास कास प्रतिशयाय प्रतिबंधक

- 2) जलधौति – अल्प मात्रा मे अन्न सेवन कर ततपश्चात 5–6 ग्लास सैंधव मिश्रीत जलप्राशन कर पश्चात उसको वमन की तरह मुख से बाहर निकालना – शिरशूल अम्लपित दंतव्याधी

कास श्वास अजीर्ण कुष्ठ इनमे लाभकर

- 3) वस्त्रधौति – स्वच्छ वस्त्र की पटटी कोष्ठ जल मे भिंगोकर उसका निगलन करना; ततपश्चात नौली क्रिया कर उस पटटी को पुनः बाहर निकालना। कफज विकार नाशन पाचनशक्ती वर्धन

2) बस्ती =

गुदद्वारा जल अंदर खिचकर नौली प्रक्रिया द्वारा आंत्र की शुद्धी की जाती है ततपश्चात यह जल पुनः बाहर निकाला जाता है

- 1) पवनबस्ती/वातबस्ती/नलबस्ती – उत्कटासन मे बैठकर रबर नलिका गुदद्वार मे प्रविष्ट कर मध्यनौली द्वारा वायु अंदर लेकर पुनः निष्क्रमण
- 2) जलबस्ती – उपरोक्त विधि सेही नलिका द्वारा जल अंदर प्रविष्ट कर नौली क्रियाद्वारा जल पुनः बाहर निकाला जाता है।

3) नेति =

नासा व गलमार्गस्थ कफनिर्हरणार्थ यह विधि उपयोगी है।

- 1) सूत्रनेति – कार्पास निर्मात सूत्र नासाद्वार अंदर डालकर सूत्र का दुसरा भाग मुखद्वारा बाहर लाना।
- 2) जलनेति – स्वच्छ, कोष्ठ, लवणयुक्त जल नलिकायुक्त जलपात्र मे लेकर नलिका दक्षिण नासामार्ग मे प्रविष्ट कर मन्या वाम तरफ तिरछी करनेसे वामनासामार्ग द्वारा यह जल बाहर आता है।
- जलनेति – नित्य व सूत्रनेति सप्ताह मे एक या दो बार की जाती है।

4) नौली =

प्रधान कर्म है। उड़ीयान बंध की अवस्था मे किया जाता है।

नाभी समीपस्थ अवयव शेधनार्थ उदरस्थ स्नायुओ का संचालन किया जाता है।

इस क्रिया मे अग्निसार उड़ीयान बंध तुदसंचालन मध्य वाम व दक्षिण नौली इन क्रियाओ का अभ्यास किया जाता है।

फल – मंदाग्निसंदीपनपाचनादीसंधापिकानंदकरी सदैव।

अशेषदोषामय शोषणी च हटक्रिया या मौलीरियंच नौली: ॥ ह.प्र.

5) त्राटक =

निरक्षेनिश्वलदृशा सूक्ष्मलक्ष्य समाहितः।

अश्रुसंतापपर्यन्तम् अचार्येत् त्राटकं स्मृतम् ॥ ह.प्र.

एकांतचित्त होकर किसी सूक्ष्म वस्तु या बिंदू की तरफ निश्वल दृष्टी से अश्रुपात होनेतक देखना।

- 1) बाह्य त्राटक – दूर की वस्तु पर चित्त व दृष्टी एकग्र करना।
- 2) मध्य त्राटक – भिन्नी पर ओम या किसी चित्र पर दृष्टी एकग्र करना।
- 3) आभन्तर त्राटक – भ्रूमध्य या नासिकाग्र पर दृष्टी एकग्र करना।

6) कपालभाति =

भस्त्रावल्लोहकारस्य रेचपूरौ ससभ्रमौ।

कपालभातिर्विख्याता कफदोषविशोषणी ॥ ह.प्र.

अनुकुल आसन मे बैठकर पूरक करने के बाद कुंभक न करते हुए लोहकार के भस्त्रिका समान जलद रेचक क्रिया करना। यह क्रिया नेति के बाद की जाती है।

फल – कफदोषविशोषण, स्थौल्यनाशन, पाचनशक्तीवर्धक

षटकर्म लाभ – स्थौल्य, कफदोषज विकार नाशन, प्राणायाम सिध्दी मे मदद।

बंध =

शरीर स्थिरता के लिए आभ्यंतर अवयवों का आकुंचन प्रसारण जिसमें किया जाता है उसे बंध कहते हैं
प्रमुख बंध - 3

1) मूलबंध - पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर गुदप्रदेशस्थ स्नायुओं का उपर की तरफ आकुंचन कर उन्हे
प्रयत्नपूर्वक संकुचीत रखना; इससे अपान की गति उर्ध्व होती है।

हठयोगप्रदिपीकानुसार पार्ष्णी भाग से योनी गुद आटी स्थाने पीड़न कर संकोचन किया जाता है; उससे
अपान उर्ध्व भाग में आकृष्य होता है।

फल - वीर्यस्तंभन, अर्शनाशन, मलमूत्रविसर्जन सूखपूर्वक होता है

2) जालंधर बंध - अनुकुल आसन में बैठकर कंठप्रदेशस्थ स्नायुओं का आकुंचन किया जाता है।
हनु का भाग से कंठ के नीचे पीड़न किया जाता है।

हठयोगप्रदिपीकानुसार यह बंध जरामृत्युनाशन है, इससे उर्ध्वजनुगत इंद्रियों का बल बढ़ता है।

3) उड़डीयान बंध - पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर या खड़े होकर उभय हस्त जानु या जंधा पर रखे
जाते हैं; इस स्थिरी में उदरस्थ आंत्रों को आभ्यंतरः खिचा जाता है

फल - अजीर्ण, मलबद्धता अम्लपित्त इन व्याधीयों में इसका उपयोग है।

कुंडलिनी शक्ति जागृत करने के लिए इन तीनों बंधों का अभ्यास महत्वपूर्ण है।

5) प्रत्याहार

स्वविषयासंप्रयोग चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणं प्रत्याहारः । पा.यो.द.

इंद्रियों द्वारा अपने अपने विषयों से अलिप्त होकर चित्त के अनुस्वरूप होकर रहना ।

लाभ - ततः परमा वश्यतेन्द्रियाणाम् । पा.यो.द.

1) इन्द्रिया मन के स्वाधीन हो जाती है

2) मन में स्थिरता आकर मन के विषयों के प्रति आसक्ति कम होकर धारणा ध्यान समाधि का
मार्ग सुलभ हो जाता है।

6) धारणा

देशबन्धचित्तस्य धारणा । पा.यो.द.

चित्त को विशिष्ट स्थान पर स्थिर करने की साधना धारणा होय । पतंजली नुसार नाभीचक्र, हुदय
उर, कंठ, मुख, नासाग्र, नेत्र, भ्रूमध्य, मस्तक व उसके ऊपर का प्रदेश इन दस स्थानों पर ऋमशः
चित्त एकाग्र करने को कहा है।

याज्ञवल्क संहिता में पृथ्वी आप तेज वायु व आकाश इन पञ्चविध धारणाओं उल्लेख है ।

7) ध्यान

तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् । पा.यो.द.

साधक द्वारा किसी एक वस्तु पर चित्त एकाग्र करने के बाद उसी वस्तु पर उसकी एकतानता होना
याने किसी दुसरी वस्तु की तरफ ध्यान न जाकर केवल उसी वस्तु का चिंतन करना ।

प्रकार - 4

1) आधिभौतिक ध्यान - उदा. शालीग्राम पर ध्यान करना ।

2) आध्यात्मिक ध्यान - षट्चक्रोका ध्यान करना ।

3) आधिदैविक ध्यान - सूर्य चंद्र इनपर ध्यान करना ।

4) नादानुसंधान - यह ध्यान निराकार होता है ।

घेरंड संहितानुसार ध्यान प्रकार -3

- 1) स्थूल ध्यान – पूजा जाप व नामस्मरण समये इश्वर का ध्यान किया जाता है वह स्थूल ध्यान है
- 2) ज्योती ध्यान – मूलाधार चक्र के मध्य मे कुंडलिनी शक्तीसमीप ध्यान करना ।
अथवा भूमध्य स्थाने औंकार स्वरूप ध्यान करना ।
- 3) सूक्ष्मध्यान – घटचक्र भेदन कर सहस्राधार चक्रमे प्रविष्ट कुंडलिनी शक्ती की शांभवी मुद्रा की मदद से ध्यान करना ।

8) समाधि

तदेवार्थ मात्रनिर्भासंस्वरूपं शून्यमिव समाधि । पा.यो.द.

किसी वस्तु पर ध्यान करते समय धारणा के बाद साधक को उसके अस्तित्व का भी ध्यान नहीं रहता

उसे शून्य इव भासीत होता है उस अवस्था को समाधि कहते हैं ।

घेरंड संहिता मे समाधि का इन अवस्थाओं मे वर्णन किया है

- 1) ध्यान योग 2) नाद योग 3) रसानंद योग 4) लयसिध्दी योग 5) भक्तियोग समाधि 6) राजयोग समाधि

पतंजली नुसार समाधि प्रकार -2

- 1) संप्रज्ञात समाधि – इस अवस्था मे चित्त वृत्तीरहीत नहीं होता है; साधक जिस वस्तु पर ध्यान करता है

वह वस्तु या उसकी वृत्ती कायम रहती है, उसका बीज कायम रहने से इसे सबीज

समाधि भी कहते हैं । इसके विकल्प होने से इसे सविकल्प समाधि कहते हैं

इसके विकल्प (प्रकार) 4 हैं

- 1) सवितर्क समाधि – जब इष्ट देवता की मूर्ती या प्रतिमापर चित्त एकाग्र किया जाता है ।
- 2) सविचार समाधि – साधक जब पंचतन्मात्रा जैसे सूक्ष्म विषय पर मन स्थिर करता है
- 3) सानंद समाधि – साधक जब इससे भी सूक्ष्म विषय याने इन्द्रियों पर ध्यान करता है
- 4) सस्मित समाधि – जिस अवस्था मे साधक केवल अहंकार वा अस्मिता पर ध्यान करता है

2) असंप्रज्ञात समाधि

इस प्रकार मे सर्व वृत्तीयों का प्रकृति मे लय होकर केवल संस्कार मात्र रहता है ऐसी चित्तवृत्ती निरोध को असंप्रज्ञात समाधि कहते हैं ।

नाडीविचार

नाडीरचना – पद्मतंतुसमान

नाडीसंख्या – 1) शिवसंहिता – साडेतीन लक्ष

2) प्रश्नोपनिषद् व दर्शनोपनिषद् – 72,000

शरीर मे दस प्राणवाही नाड़ीया है ।

1) इडा 2) पिंगला 3) सुषुम्ना 4) गांधारी 5) हस्तिजिह्वा 6) पूषा 7) यशस्विनी 8) अलंबुषा

9) कुहु 10) शांखिनी इनमे प्रथम तीन प्रमुख हैं ।

1) इडा नाडी –

1) मेरुदंड के वाम भाग मे स्थित होती है , वाम नासारंध से श्वसन समये कार्यशील

2) पर्याय – चंद्रा गंगा वर्ण – श्वेत देवता – विष्णु

2) चंद्रतत्व प्रवाही शीतलता प्रदान करती है

2) पिंगला नाडी –

- 1) मेरुदंड के दक्षिण भाग मे स्थित होती है , दक्षिण नासारंध्र से श्वसन समये कार्यशील
- 2) पर्याय – यमुना सूर्य नाडी देवता – ब्रह्मा
- 3) सूर्यप्रवाही नाडी शरीर मे उष्णता प्रदान करती है

3) सुषुम्ना नाडी –

- 1) इडा व पिंगला के मध्य स्थान मे स्थित, उभय नासारंध्रो से श्वसन समये कार्यशील
- 2) पर्याय – शांभवी ब्रह्मरंध्र महापथ मध्यमार्ग सरस्वती योगवल्लभा देवता – शिव
- इडा पिंगला व सुषुम्ना इन्हे एकत्रित ‘त्रिवेणी’ कहा जाता है। भूमध्य स्थान मे इनका संगम होता है
- दक्षिणायन – वाम नासारंध्र से होनेवाला श्वसन बदलकर दक्षिण नासारंध्र से शुरू होना
- उत्तरायन – दक्षिण नासारंध्र से होनेवाला श्वसन बदलकर वाम नासारंध्र से शुरू होना
- 4) गांधारी – वाम नेत्र से वाम पादांगुष्ठ तक
- 5) हस्तिजिह्वा – दक्षिण नेत्र से दक्षिण पादांगुष्ठ तक
- 6) पूषा नाडी – दक्षिण कर्ण स्थाने
- 7) यशस्तिनी – वान कर्ण स्थाने
- 8) अलंबुषा – मुखस्थाने
- 9) कुहु – लिंग स्थाने 10) शंखिनी – गुदस्थाने

षटचक्र

चक्र	स्थान	महाभूत	देवता	वर्ण	दलसंख्या	मंत्राक्षर
मूलाधार	गुदसमीप	पृथ्वी	गणेश	रक्ताभ	4	भं
स्वाधिष्ठान	लिंगोर्ध्व	आप	ब्रह्मा	अरुणाभ	6	वं
मणिपूर	नाभी	तेज	विष्णु	नील	10	रं
अनाहत	हुदय	वायु	शिव	सुवर्ण	12	यं
विशुद्ध	कंठ	आकाश	रूढ़	चंद्रसमान	16	हं
आज्ञा	भूमध्य			रक्ताभ	02	
सहस्राधार	मस्तिष्क		परब्रह्म		1000	

निसर्गोपचार

शोध – जर्मनीके ग्रेफिन बर्ग मे विन्सेज प्रिस्निटज द्वारा 1840

लुड़ कुने – जलचिकित्सक

एडाल्फ जस्ट – मृतिका व मर्दन चिकित्सा

मुद्रा – 1) प्राणायामिक 2) अप्राणायामिक

1) प्राणायामिक मुद्रा

- 1) ज्ञानमुद्रा – शिरःशूल, उन्माद, चंचलता, नाशक, बुधीवर्धक
- 2) वायु मुद्रा – वेदनानाशक, पक्षाघात, गृध्रसी नाशक
- 3) पंचसंजीवनी मुद्रा – प्राण, समान, अपान, उदान, व्यान = तत तत वायु के कार्य मे लाभकर
- 4) शून्य व आकाश मुद्रा – अस्थी स्नायु दौर्बल्य नाशन, पक्षाघात वातव्याधी मे लाभकर
- 6) पृथ्वी मुद्रा – कार्यनाशन
- 7) वरूण मुद्रा – त्वक व रक्तविकार नाशन

8) सूर्यमुद्रा (अग्निमुद्रा) – अग्निमांदय व मेदोरोगनाशक

इतर

1) हठयोगप्रदीपीका कर्ता – स्वात्माराम

मुद्रा – 12 महामुद्रा – 10 बंध – 3 उडडीयान, जालंधर मूल

कामगार राज्य विमा महमंडल स्थापना – 1948 ,

अध्यक्ष – कामगार मंत्री उपाध्यक्ष – स्वास्थ्य मंत्री

1) पंचयम – अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह

2) पंचनियम – शौच संतोष तप स्वाध्याय इश्वरप्रणिधान

3) पंचक्लेश – अविदया अस्मिता राग द्रेष अभिनिवेश

4) पंचचित्तवृत्ति – प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृती

5) पंचचित्ताभूमिका – क्षिप्त मूढ़ विक्षिप्त एकाग्र विरुद्ध

(पंचचित्त अवस्था)

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE

Nutrients – the main nutrients are proteins, fats and carbohydrates.

Proteins

Proteins are complex nitrogenous compounds composed of carbon, hydrogen oxygen Nitrogen and sulphur.

Essential amino acids – proteins are made up of smaller units called as amino acids.

Some 24 amino acids are needed to body among which are called 'essential amino acids' A protein is said to be 'biologically complete' if it contains all the essential amino acids (EAA)

Functions –

- 1) Body building components
- 2) Repair and maintenance of body tissue.
- 3) Maintenance of osmotic pressure
- 4) Synthesis of certain substances like antibodies, plasma proteins, hemoglobin etc.

Requirement – 1.0 g protein /kg body weight.

Fats

Considered as calories

Fats are classified as

- 1) Simple lipids – triglycerides
- 2) Compound lipids – phospholipids
- 3) Derived lipids – cholesterol

Fatty acids –

- 1) Saturated fatty acids – Lauric, palmitic and stearic acids
- 2) Unsaturated fatty acids – oleic acid, linoleic acid, linolenic acid.

Linoleic acid serves as a basis for the production of other essential fatty acids.

Function – fats are considered as calories.

Requirement – ICMR has recommended a daily intake of not more than 20 percent of total Energy intake through fats.

Carbohydrates

Considered as source of energy.

Carbohydrate is essential for oxidation of fat and for the synthesis of certain non-essential Amino acids. Three main sources of carbohydrate are starch, sugars and cellulose.

Minerals

1) Calcium

a) Functions –

- 1) Formation of bone and teeth
- 2) coagulation of blood
- 3) Contraction of muscles, cardiac action
- 4) milk production

b) sources –

milk products, eggs, fish.

c) absorption

- Absorption of calcium is enhanced by vitamin D

2) Phosphorus	Essential for formation of bone and teeth. Important for all metabolism
3) Sodium	Found in all body fluids. Deficiency causes muscle cramps.
4) Potassium	Found in all body fluids.
5) Magnesium	Constituent of bone. Present in all body cells. Essential for normal metabolism Of calcium & potassium.
6) Iron	Formation of hemoglobin. Brain development and function. Regulation of body temperature, muscle activity and catecholamine metabolism.
7) Iodine	Synthesis of thyroid hormone
8) Fluorine	Essential for mineralization of bone and formation of dental enamel.
9) Zinc	Component of many enzymes. Required for synthesis of insulin.

Daily requirement

Minerals	Daily requirement
1) Calcium	400 – 500 mg
2) Iron	Adult male – 0.9 mg Adult females = Pregnancy First half – 0.8 mg second half – 3.5 mg Lactation – 2.4 mg
3) Iodine	150 micrograms per day
4) Fluorine	0.5 to 0.8 mg per liter. Fluorine content in drinking water – 0.5 mg/lit

Water related diseases

1) Viral	Viral hepatitis A and E, poliomyelitis, rotavirus diarrhea in infants
2) Bacterial	Typhoid, bacillary dysentery, Cholera
3) Protozoal	Amoebiasis, giardiasis
4) Helminthic	Round worm, thread worm, hydatid disease
5) Leptospiral	Weil's disease

Diseases due to chemicals –

- 1) High levels of fluoride causes dental carries
- 2) High nitrate content of water is associated with methaemoglobinemia.

Purification of water –

On large scale

A) Filtration - 98-99 percent bacteria are removed by filtration.

- 1) Slow sand filters – first used in Scotland and London in 1804.
- 2) Rapid sand filtration – first used in USA in 1885.

B) Disinfection –

- 1) chlorination – Chlorine kills pathogenic bacteria but has no effect on spores & certain viruses.

Orthotolidine test (OT) – enables quantity of both free and combined chlorine in water.

C) Other agents –

- 1) Ozonation – it eliminates undesirable odour taste and colour and removes all chlorine

From water. Also has a strong virucidal effect. The ozone dose required for potable water varies from 0.2 to 1.5 mg per liter.

- 2) Ultra violet radiation – UV radiation is effective against most microorganisms known to contaminate water supplies including viruses.

On small scale –

A) Boiling – water must be brought to a ‘rolling boil’ for 5 – 10 minutes. It kills bacteria, spores, cysts and ova. Also removes temporary hardness.

B) Chemical disinfection –

- 1) Bleaching powder – for 1000 liter water 2.5 gm bleaching powder is used.
- 2) Iodine – two drops of 2 percent ethanol solution of iodine is suffice for 1 liter water.
- 3) Potassium permanganate – for 1,00,000 part of water 0.5 part is used. It may kill Cholera vibrios but is of little use other disease organisms. It has other drawbacks such as altering colour taste and smell of water.
- 4) Chlorine tablets - single tablet of 0.5 gm is sufficient to disinfect 20 liters of water.
- 5) Calcium oxide – for 1 galan water 360g. calcium oxide is required.

Water quality and standards –

- 1) Acceptability aspects
- 2) Microbiological aspects
- 3) Chemical aspects
- 4) Radiological aspects

1) Acceptability aspects –

a) Physical parameters – water should be free from turbidity, color, other taste and odour.

b) Inorganic constituents –

- 1) Chlorides – The standard prescribed for chlorides is 200 mg/lit. maximum – 600mg/liter
- 2) Ammonia – Natural levels in ground and surface water usually below 0.2 mg/liter
- 3) pH – should be between 6.5 to 8.5
- 4) Hydrogen sulphide – 0.05 – 0.1 mg / liter.
- 5) Fluoride – 0.05 – 0.08 mg /liter
- 6) Nitrates – not more than 1mg/ liter.

Inorganic chemicals of health significance in drinking water

Constituents	Limit (mg/liter)	Constituents	Limit (mg/liter)
1) Antimony	0.005	9) Lead	0.01
2) Arsenic	0.01	10) Manganese	0.5
3) Barium	0.7	11) Mercury	0.001
4) Cadmium	0.003	12) Molybdenum	0.07
5) Chromium	0.05	13) Nickel	0.02
6) Copper	2	14) Nitrate (as NO ₃)	50
7) Cyanide	0.07	15) Nitrate (as NO ₂)	3
8) Fluoride	1.5	16) Selenium	0.01

b) Microbiological indications –

- 1) E. coli – must not be detectable in any 100 ml sample.
- 2) Total coliform bacteria - must not be detectable in any 100 ml sample

- 1) Safe water – 0 bacteria in 100 ml water
- 2) Moderately safe water – 1 – 2 bacteria in 100 ml water
- 3) Harmful water – 3 – 10 bacteria in 100 ml water

C) Radioactivity –

- 1) Gross alpha activity 0.1 Bq/L
- 2) Gross beta activity 1.0 Bq / L Bq = Becquerel 1 Bq = 1 disintegration per second.

Hardness of water

Hardness of water may be defined as the soap-destroying power of water. The consumers considers water hard if large amounts of soap are required to produce lather. The hardness in water is caused mainly by four dissolved compounds –

- 1) Calcium carbonate
- 2) Magnesium bicarbonate
- 3) Calcium sulphate
- 4) Magnesium sulphate

Classification –

- 1) Carbonate (temporary hardness)
- 2) Non carbonate (permanent hardness)
- 1) **Carbonate / Temporary hardness** –

Due to presence of calcium and magnesium bicarbonates

- 2) **Non carbonate / Permanent hardness** –

Due to presence of Calcium and magnesium sulphates.

Hardness in water is expressed in terms of "milli-equivalents per liter" mEq/l

1 mEq/liter of hardness – producing ion is equal to 50mg CaCO₃ (50ppm) in 1 liter of water.

Classification	Level of hardness (mEq/liter)
1) Soft water	Less than 1 (< 50mg/liter)
2) Moderately hard	1 – 3 (50 – 150 mg / liter)
3) Hard water	3 - 6 (150 – 300 mg / liter)
4) Very hard water	Over 6 (> 300 mg / liter)

Drinking water should be moderately hard. Softening of water is recommended when the hardness exceeds 3 mEq/L (300 mg per liter)

Removal of hardness

- 1) **For temporary hardness** –

a) Boiling – boiling removes the temporary hardness by expelling carbon dioxide, and precipitating the insoluble calcium carbonate. It is expensive method for large scale.

b) Clark method / addition of lime – Lime softening not only reduces the total hardness but also accomplishes magnesium reduction. Lime absorbs the carbon dioxide and precipitate the insoluble carbonate.

c) Addition of sodium carbonate – sodium carbonate removes both temporary and permanent hardness of water.

d) Permutit process – The naturally occurring compound of sodium and aluminum is called Zeolite which is costly; so it is prepared artificially which is called as 'permutit' (sodium Aluminum silicate). It is used for removing both temporary and permanent hardness.

It is porous in structure and the water can be filtered through it.

2) For permanent hardness –

a) Addition of sodium carbonate

b) Base exchange process – in the treatment of large water supplies, the permutit process is used. Sodium permutit is a complex compound of sodium, aluminum and silica. It has the property of exchanging the sodium cation for the calcium and magnesium ions in the water.

When hard water is passed through the permutit the calcium and magnesium ions are entirely removed by base exchange and sodium permutit is converted into calcium and magnesium permutit.

Homock's apparatus – to calculate dose of bleaching powder.

Lead is not dissolved in hard water.

- 1) Fluorine in excess amount in drinking water – dental fluorosis, spine stiffness
- 2) Fluorine less in drinking water – dental caries.
- 3) Nitrate more than 0.45 mg / L in drinking water – methahemoglobinemia
- 4) Polynuclear aromatic hydrocarbon more than 0.2 mg/liter – carcinogenic effect.

Ventilation

- 1) Natural ventilation
- 2) Mechanical ventilation – 4
 - 1) Exhaust ventilation
 - 2) Plenum ventilation
 - 3) Balanced ventilation
 - 4) Air conditioning

Oral rehydration therapy

ORS bicarbonate		ORS citrate	
1) Sodium chloride	3.5 gram	1) Sodium chloride	3.5 gram
2) Sodium bicarbonate	2.5 gram	2) Trisodium citrate dehydrate	2.9 gram
3) Potassium chloride	1.5 gram	3) Potassium chloride	1.5 gram
4) Glucose (dextrose)	20.0 gram	4) Glucose	20.0 gram
5) Potable water	1 litre	5) Potable water	1 litre

Pathogens and diseases (sexually transmitted diseases)

Pathogen	Disease or syndrome
1) Neisseria gonorrhoeae	Gonorrhea, urethritis, cervicitis, epididymitis, salpingitis, PID, Neonatal conjunctivitis.
2) Treponema pallidum	Syphilis
3) Haemophilus ducreyi	Chancroid
4) Chlamydia trachomatis	LGV, urethritis, cervicitis, proctitis, epididymitis, infant pneumonia, Reiter's syndrome, PID, Neonatal conjunctivitis
5) Calymmatobacterium Granulomatis	Donovanosis (granuloma inguinale)
6) Herpes simplex virus	Genital herpes
7) Hepatitis B virus	Acute and chronic Hepatitis
8) Human papillomavirus	Genital and anal warts
9) Candida albicans	Vaginitis

Obesity

Classification	BMI	Risk of comorbidities
1) Underweight	< 18.50	Low
2) Normal range	18.50 – 24.99	Average
3) Overweight	> 25.00	
Preobese	25.00 – 29.99	Increased
Obese class 1	30.00 – 34.99	Moderate
Obese class 2	35.00 – 39.99	Severe
Obese class 3	> 40.00	Very severe

Body Mass Index (BMI)

$$\text{Weight (Kg)} / \text{Height}^2 (\text{m})$$

Categories of Mental retardation

1) Mild mental retardation	IQ	50 – 70
2) Moderate mental retardation	IQ	35 – 49
3) Severe mental retardation	IQ	20 – 34
4) Profound mental retardation	IQ	Under 20

Children scoring above 70 are not described as mentally handicapped.

Milk hygiene

Milk borne diseases

Tuberculosis, brucellosis, streptococcal infection, Staphylococcal enterotoxin poisoning.

Salmonellosis.

:

Preservation of milk –

1) Boiling – this is the common method for milk preservation used. Maximum bacteria are killed In this method but with this lactic acid bacilli, vitamin B, C, Enzymes and lactose are Also lost.

2) Sterilization - in this method milk is heated up to the temperature 100°C and then cooled. In this method vitamin B and C are lost.

3) Pasteurization – pasteurization may be defined as the heating of milk to such temperature And for such period of time as are required to destroy any pathogens. There Are several methods of pasteurization.

a) Holder (vat) method – milk is kept at $63 - 66\text{ deg.C}$ for 30 minutes and then quickly cooled to 5 deg. C . used for small and rural communities.

b) HTST method – also called as high temperature and short time method. Milk is rapidly heated to temperature nearly 72 deg. C . Is held at that temp. for not less than 15 sec. and then rapidly cooled to 4 deg C .

c) UHT method – also known as altra high temperature method. Milk is rapidly heated usually in two stages to 125 deg. C for a few seconds only. it is then rapidly cooled and bottled as quickly as possible.

Tests for efficacy of pasteurization –

- 1) Phosphatase test
- 2) Standard plate count

Test for detection of microorganism in milk – Methylene blue reduction test

Occupational diseases

A) diseases due to physical agents

- a) Heat – heat exhaustion, heat syncope, heat cramps, burns.
- b) Cold – Trench foot, frost bite, chilblains
- c) Light – occupational cataract, miner's nystagmus
- d) Pressure – Cassion disease, air embolism, blast

B) Diseases due to chemical agents

a) Inorganic dust –

- 1) Coal dust – Anthracosis
- 2) Silica – Silicosis
- 3) Asbestos – Asbestosis, cancer lung
- 4) Iron – Siderosis

b) Organic (vegetable) dust –

- 1) Cane fibre – Bagasosis
- 2) Cotton dust – Bysinosis
- 3) Tobacco – Tobacosis
- 4) Mouldy Hay or grain dust – Farmer's lung

Vaccines

Vaccine is an immune-biological substance designed to produce specific protection against a given disease.

Live attenuated vaccines	Inactivated or killed vaccines
Bacterial – BCG, Typhoid (oral), Plague	Bacterial – Typhoid, cholera, Pertusis, Plague, c.s. meningitis.
Viral – Oral polio, Yellow fever, Measles, Mumps, Rubella, Influenza.	Viral – Rabies, Salk (polio), Influenza, Hepatitis B, Japanese encephalitis.

Toxoids – Diphtheria and Tetanus

The cold chain –

- 1) Among the vaccines polio is the most sensitive to heat, requiring storage at minus 20 degree.
- 2) Vaccines stored in freezer compartment – polio and measles.
- 3) Vaccines which must be stored in the cold part but never allowed to freeze are – typhoid, DPT, tetanus toxoid, DT and BCG.

Polio vaccine – 2 types

- 1) Salk vaccine by injection (killed vaccine)
- 2) Sabine vaccine by drops (live vaccine)

Contra indications for live vaccine – Leukemia, pregnancy, corticosteroids.

ARV vaccine – human diploid cell vaccine 20 IU/Kg

Complications of mumps – orchitis, pancreatitis, encephalitis, myocarditis.

Hepatitis B vaccine is of two types –

- 1) DNA recombinant
- 2) Plasma derived

Rubella vaccine –

- 1) Live attenuated vaccine, dose – 0.5 ml, route – S.C.
- 2) Is given preferably after 9 years of age up to 34 years to only girls.
- 3) It should be given minimum 3 to 4 months before pregnancy.
- 4) The vaccine will offer protection for 26 years.

RA 27/3 Rubella vaccine – produced in human diploid fibroblast

Haemagglutination test – Rubella

Shick test for – Diphtheria antitoxin

D.P.T. vaccine is given in lateral aspect of thigh (infant)

PCR test for – HCV, RNA

Australia antigen – (HBSAg) HBV

Neurological involvement by – Rabies, Small pox, Typhoid vaccine

Prophylactic dose of TT – 250 units

Prophylactic dose of Diphtheria antitoxin – 3000 – 5000 units

Mumps occurs – 5 – 15 years of age

Diphtheria incidence – 1 – 5 years of age

Immunoglobulin

Immunoglobulin	% in human body	Amount in blood serum
IgG	85 %	600 – 1800 mg / 100 ml blood serum
IgA	15 %	70 – 380 mg / 100 ml blood serum
IgM	5 – 10 %	120 – 130 mg / 100 ml blood serum
IgD	-	4 – 40 mg / 100 ml blood serum
IgE	Antiallergy antibodies	

Foods with most appropriate limiting amino acids in them

- A) Pulses – Methionine
- B) Maize – Lysine , tyrosine
- C) Wheat – Lysine, Threonine

Disease transmitting agents

Vector	Disease	Causative organism
Mosquito Anopheles	Malaria	Plasmodium
Culex	a) Filariasis b) Japanese encephalitis	Wucheria bancrofti Arbovirus
Aedes	a) Yellow fever b) Dengue c) Hemorrhagic fever d) Filariasis	Arbovirus Wucheria bancrofti
Monsonoides	Filariasis	Brugia malayi
Housefly	Enteric fever Diarrhoea Dysentery Cholera Amoebiasis Helminthiasis Polio, trachoma ,conjunctivitis	Salmonella \ Entameba histolytica

Sandfly	Kala azar Oriental sore Sandfly fever	Leishmania donovani
---------	---	---------------------

Committee / organization	Started in year
Bhore committee	1946
Mudaliar committee	1962
National malaria control programme	1953
National malaria eradication programme	1958
National TB control programme	1962
National leprosy eradication programme	1954 – 55
Small pox eradicated by	1974 (india 1978)
PHC's were started in	1952
ESI scheme	1975
Indian red cross	1920
AIDS day	1 December

Statistics	
Father of statistics	John Gruant
State with highest literacy rate	Kerala
State with lowest population growth rate	Kerala
State with highest population growth rate	Nagaland
Births have to be reported within	14 days after birth
Deaths have to be reported within	7 days after death

Nutrition

Fluorine safe limit	0.5 – 0.8 mg / liter
Zinc is a component of	Insulin
Sunflower oil is rich in	Linoleic acid
Animal source with essential fatty acid	Cod liver oil
Nitric acid test	Brown to orange colour with contaminated oil

Diet	Rich in
Soyabean	40 % protein, 20 % fat
Ground nut	40 % fat , 20 % protein
Fish and egg	No carbohydrate
Milk, seethapal, Ragi	Calcium
Pulses	Poor man meat
Jaggery	Energy and iron
Mango and papaya	Vitamin A
Coconut water	70 mg potassium / 160-200 k cal / liter
Milk	Best and complete food
Egg yolk	Cholesterol

Incubation periods

1) Influenza	1 to 3 days (18 – 72 hours)
2) Anthrax	1 to 3 days
3) Cholera	1 to 5 days
4) Bacillary dysentery	1 to 7 days
5) Diphtheria	2 to 5 days
6) Plague	2 to 6 days
7) Typhoid	10 to 14 days
8) Yellow fever	3 to 6 days
9) Dengue	3 to 15 days
10) Tetanus	6 to 10 days
11) Measles	10 days from exposure to onset of fever & 14 days to appearance of rash
12) Leptospirosis	10 days
13) Malaria	Not less than 10 days Falciparum – 12 (9 to 14) Vivax - 14 (8 to 17) Ovale – 17 (16 to 18) Quartan – 28 (18 to 40)
14) Pertussis	7 to 14 day
15) Polio	7 to 14 days
16) Q. fever	7 to 14 days
17) Chicken pox	2 to 3 weeks (14 -16 days)
18) Rubella	2 to 3 weeks (ave. 18 days)
19) Mumps	2 to 3 weeks (ave.18 days)
20) Brucellosis	1 to 3 weeks
21) Amoebiasis	2 to 4 weeks
22) Hepatitis A	15 to 50 days
23) Hepatitis B	50 to 160 days (45 – 180 days)
24) Tuberculosis	Weeks to months (tuberculin +ve = 3 to 6 weeks)
25) Kala Azar	1 to 3 months
26) Filariasis	8 to 16 months
27) Elephantiasis	10 years
28) Trachoma	5 to 12 days
29) Rabies	3 to 8 weeks
30) Leprosy	3 to 5 years
31) Aids	Uncertain (few months to 10 years)

Miscellaneous

Homock's apparatus – to calculate dose of bleaching powder

Lead is not dissolved in hard water

A National institute of communicable disease – Delhi

All India institute of Hygiene and public health – Calcutta

National tuberculosis center – Bangalore

8TH day disease is called as Neonatal tetanus

WHO slogan

- 1) Health care begins at home – 1977
- 2) Healthy cities for better life – 1996
- 3) Emerging infectious diseases global response global alert -1997
- 4) Pregnancy is precious; lets make it safe 1998
- 5) Active aging makes the difference – 1999
- 6) Safe blood starts with me – 2000

Establishments

- 1) World health organization – 7th April 1948
- 2) Indian Red cross – 1920
- 3) Unicef (United nations international children's emergency fund) – 1946
Headquarter at – New york

GOBI campaign of UNICEF –

- 1) G= Growth charts
- 2) O = Oral rehydration
- 3) B = Breast feeding
- 4) I = Immunization

- 4) Colombo plan – 1950
- 5) Rockefeller foundation – 1913
- 6) Ford foundation – health services at rural areas
- 7) CARE – co-operative for American Relief everywhere
- 8) Indian factories act - 1948 amended in 1989
- 9) E.S.I. act 1948 amended in 1975, 1984, 1989 (except for sugar factory)
- 10) School Health programme – 1909
- 11) F.A.O. (Food and agricultural organization) – 16 oct 1945
- 12) National health policy – 1982 – 83
- 13) Central government health scheme – 1954
- 14) Rural health scheme – by Srivastva committee
- 15) Pulse polio immunization programme - 14 november 1995
- 16) International year of fresh water -- 2003
- 17) First census was carried out – 1881
- 18) Doctor's day – 1 July
- 19) Malaria week – 1 – 7 th May
- 20) Breast feeding week – 1 – 7 August

- 1) Bacilli found in breast milk – Mycobacterium Leprae
- 2) Virus penetrating skin – Yellow fever agent
- 3) The country with highest accident rate – India
- 4) Presence of Nitrates in water indicates recent contamination
- 5) Presence of nitrates of more than 1mg/liter indicates past contamination
- 6) Commonest blood group – O
- 7) RH –ve – 7 % in south India
- 8) Energy from proteins – 4 Kcal / gr

- 9) Energy from carbohydrates – 4K cal / gr
- 10) Energy from fats – 9 K cal / gr
- 11) Riverine disease – Cholera
- 12) Poverty disease – Chaga's disease
- 13) Rural disease – Onchocerciasis
- 14) English disease – Chronic bronchitis
- 15) Farmer's disease – Alkylostomiasis
- 16) Epidemiological triad – Agent, Host, Environment
- 17) Nalgonda technique for deflourination of water –add lime + alum in sequential order

Forensic medicine and Toxicology

Forensic Medicine :

X – rays for age determination

Age	X – ray
15 – 16	Elbow
16 – 17	Ankle
17 – 18	Upper end of femur
18 – 19	Knee
2 nd to 5 th decade	Sternum fusion takes place

Foetal age determination

1st ossification center to appear – clavicle, lower jaw.

Bone	Ossification center in month
1) Calcaneum	5 th month
2) Sternum	6 th month
3) Talus	7 th month
4) Lower end of femur	9 th month (36 weeks)
5) Upper tibia	10 th month (40 weeks)

Post maturity – ossification center appear in capitate and hamate

Age importance –

- 1) No offence if done before 7 years (IPC)
- 2) No offence if the person is 7-12 years old but mentally incapable.

Important points –

- 1) In dead body (without foetus) and in men prostate lastly putrefied.
- 2) Antidote used in common type of poisonous snakes in India include Polyclonal Antisnake venom.
- 3) Chronic lead poisoning is known as plumbism or saturnism
- 4) Green coloured urine is observed in carbolic acid poisoning.
- 5) Homosexuality is often observed among addiction of cocaine.
- 6) Lucid interval is seen in Insanity.
- 7) Macerated body of foetus indicates dead born.
- 8) Medico legal autopsy is ordinarily done on request of sub inspector of police.
- 9) Phossy jaw is seen in chronic poisoning of phosphorus.
- 10) Pugilistic attitude of a burnt body is due to coagulation of proteins.
- 11) The most characteristic feature of drowning is froth at nostrils.
- 12) The most dependable method of identifying a person is finger prints (dactylography)
- 13) The most reliable evidence of death due to drowning is Mud and Sand in bronchioles
- 14) The preservative used for viscera in alcohol poisoning is saturated sodium chloride Solution.
- 15) The strongest corrosive poison is sulphuric acid.

Specific tests or diagnostic points –

- 1) Precipitin test – for determination of organ piece - man or other animal.
- 2) In anaphylactic shock – Dilation of Right heart.

- 3) Pulmonary artery congestion – Asphyxia.
- 4) Pulmonary vein congestion – Coma
- 5) In Asphyxia the Tardieu spots are on – pleura
- 6) In electric shock Tardieu spots are on pleura and pericardium.

For Laboratory examination

1) small intestine	Adult – 3 feet, child – 5 feet, fluid – 100 cc
2) Liver	Child – 500 gm adult – complete
3) Spleen	Child – half of adult adult – complete
4) Kidney	Child – half of both kidneys, adult – complete
5) Brain	300 gm
6) Blood	10cc (in pot. Oxlate and sodium fluorat)

Never use formalin or denatured spirit for preservation of organs.

For acid poisons – Rectified spirit.

Organ send to be for laboratory examination

1) Metallic poisoning	Hair
2) Arsenic	Bones, nails, hairs.
3) Antimony	Nail, skin, shaft – 6 inch piece.
4) Strychnine	Brain and heart
5) Co., alcohol, chloroform	Blood in heart chamber, lungs without preservation
6) Rabies	Negri bodies (brain) in 50% glycerol saline

In suspended animation – following examination done

A) Circulation –

- 1) Byfans light test
- 2) Magnus ligature test
- 3) Flurosceine test inj given s.c. – skin colour yellowish green in live person.
- 4) After burning – no red lines around the skin.

B) Respiration

- 1) Winslow glass test
- 2)

C) Eye changes

- 1) Sclera cornea conjunctive – non trasperant
- 2) Increase potassium in vitrous humor.
- 3) decreased intra ocular pressure.

D) Temperature

- 1) Temperature reduces to 2.5° F or 0.6° C
- 2) Thantometer is used to calculate temperature at anus or below liver region.
- In cold weather – rigor mortis – 2 to 3 days
- In hot weather – rigor mortis – 2 to 3 hours

Rigor mortis –

- 1) Firstly occurs in involuntary muscles and the voluntary muscles.
- 2) Last in eye lids
- 3) Lastly in fingers
- 4) Cause of R.M – Actin and myosin filament, adenosine triphosphate (ATP)

Putrefaction –

- 1) Starts at -50° C

- 2) Maximum at – 70 – 110⁰ F (30-37⁰c)
- 3) slow less than 100⁰ F
- 4) Bacteria responsible – Clostridium welchii
- 5) Gas formation after putrefaction – CH 4, H2S, Phosphated hydrogen
- 6) After decomposition – colour - = externally – green and internally – blackish red

Causes of death in hanging –

- 1) Pressure on common carotid artery – Brain ischemia
- 2) Pressure on veins – Brain hemorrhage
- 3) Pressure on vagus nerve – Heart failure

In judicial hanging death occurs due to pressure on spinal by breaking 1-2 vertebrae.

For medical ethics – Declaration of Geneva – 1944.

Fatal period of poisons

1) Sulphuric acid	10 – 15ml
2) Nitric acid	10 – 15 ml
3) Hydrochloric acid	15 – 20 ml
4) KOH, NaOH	5 – 10gms
5) Oxalic acid	15 – 20 gms
6) Carbolic acid	10 – 15 gms
7) Hydrocyanic acid	60 mg
8) Potassium Cyanide	200 mg
9) Phosphorus	100 – 150 mg
10) Arsenic	180 – 200 mg
11) Lead	0.5 – 20gms
12) Copper sulphate	15 – 30 gms
13) Mercury	1 gm
14) Abrus precatorius (gunja)	1 – 2 crushed seeds
15) Marking nut (bhallatak)	10 gms
16) Croton seeds (jayapal)	4 – 5 crushed seeds
17) Castor seeds (eranda)	10 crushed seeds
18) Opium	2 gms
19) Morphine	200 mg
20) Pethidine	2 gm
21) Methyl alcohol	60 – 200 ml
22) OPP	25 mg – 25 gms
23) D.D.T.	30gms
24) Dhatura	100 – 125 crushed seeds
25) Cannabis (bhanga)	2 – 10gm / kg body
26) Cocaine	1 gm
27) Nux vimoca (kuchala)	1 – 2 crushed seeds
28) Curare	30 – 60mg
29) Conium	1 cm of plant part
30) Digitalis	2 – 3 gms
31) Aconite	1 gm root
32) Nicotine	1 – 2 drops
33) Tobacco	15 – 30 gms
34) Oleander	15 – 20 gms of root

Fatal period

1) Carbolic acid	1- 2 hours
2) Cyanides	Immediate
3) Phosphorus	Variable
4) Arsenic	2 – 3 hours
5) Lead	Variable
6) Copper	1 – 3 days
7) Mercury	2 – 3 days
8) Abrus precatorius (gunja)	3 – 5 days
9) Marking nut (bhallatak)	12 – 24 hours
10) Castor seeds	Variable
11) Croton oil and seed	Variable
12) Opium	6 – 12 hours
13) Methyl alcohol	1 – 3 days
14) Barbiturates	1 – 2 days
15) OPP	½ - 3 hours
16) D.D.T	24 hours
17) Endrine	½ - 3 hours
18) Dhatura	24 hours
19) Cannabis	12 hours
20) Cocaine	2 hours
21) Strychnine	1 – 2 hours
22) Curare	1 – 2 hours
23) Conium	Few hours
24) Digitalis	1 – 24 hours
25) Aconite	6 hours
26) Nicotine	1 – 10 minutes
27) Oleander	24 hours

Poisons leading to **constriction of pupils**

- 1) Opium 2) Morphine 3) Tobacco
 4) OPP 5) Carbolic acid 6) Curare
 7) Anesthetics 8) Alcohol 9) Fuels

Poisons causing **alternate constriction and dilation of pupils**

- 1) Barbiturate 2) Aconite

Poisons leading to **dilatation of pupils**

- 1) Cyanides 2) Datura 3) Cocaine
 4) Alcohol 5) Digitalis 6) Cannabis
 7) Atropa beladonna 8) Hyoscyamus 9) Co
 10) Nicotine 11) Antihistaminics 12) Strychnine
 13) Calotropis 14) fuels 15) Oleander
 16) Corrosives except carbolic acid

Poisons causing typical **P.M. lividity**

- 1) Cyanide – pink 2) Opium – Almost black
 3) CO – Bright cherry red 4) Hydrogen sulphide – Bluish green
 5) Phosphorus – Dark brown 6) Potassium chlorate – chocolate brown
 7) Nitrates – Reddish brown

Antidotes

1) Mineral acids	CaO, MgO
2) Alkalies	Weak acids, Acetic acid, Vinegar, lemon juice
3) Oxalic acid	Lime
4) Carbolic acid	Magnesium sulphate
5) Cyanides	Nitrates, kelocyanor, PAPP, Hypo
6) Phosphorus	Copper sulphate
7) Arsenic	Ferric oxide and BAL
8) Iodine	Starch, Hypo
9) Lead	Sodium or magnesium sulphate and EDTA
10) Copper	Potassium ferrocyanide and penicillamine
11) Mercury	Sodium formaldehyde sulphonylate and Penicillamine / BAL
12) Abrus	Antiabrin
13) Snakes	Anti snake venom serum
14) Scorpion	Antivenin and local narcotics
15) Methyl alcohol	Ethyl alcohol
16) Opium	Naloxone / nalmefene
17) Opium (chronic)	Methadone / LAAM
18) OPP	Atropine and oximes
19) Dhatura	Prostigmine / pilocarpine
20) Cocaine	Amyl nitrate inhalation
21) Strychnine	Barbiturates, Chloroform
22) Oleander	Anasthetics, morphine
23) Curare	Prostigmine
24) Thallium	Pot. Heacyanoferrate (Prussian blue)

Poisons with characteristic smell

1) Cyanides	Bitter almond
2) Phosphorus	Garlicky
3) OPP	Kerosene like/ garlicky
4) opium	Raw flesh
5) Cannabis	Burnt rope
6) H ₂ S	Rotten egg
7) CO	Burnt coal

Poisons used as arrow poisons

- 1) Abrus precatorius
- 2) Aconite
- 3) Strychnine
- 4) Croton
- 5) Snake venom
- 6) scorpion venom
- 7) Curare
- 8) Calotropis

Poisons resisting putrefaction

- 1) Dhatura
- 2) Phosphorus
- 3) All metals
- 4) Strychnine
- 5) Nicotine
- 6) Endrine
- 6) D,D,T.
- 7) Alcohol
- 8) Oleander

Poisons that are stored in the body

- 1) Organophosphorus compounds
- 2) Organochlorous compounds
- 3) Strychnine
- 4) Thiopentone
- 5) heavy metals
- 6) Radio active substances

Poisons causing toxicity

1) Nephrotoxic	Carbolic and oxalic acid, methanol, heavy metals, EDTA Penicillamine, salicylates
2) Hepatotoxic	Alcohol, arsenic, phosphorus, paracetamol, steriodies BAL, iron, Naphthalene
3) Dawali poisons	Mercury, phosphorus
4) spinal poison	Nux vomica, gelcinium
5) Cardic poison	Aconite, oleander, digitalis, quinidine, tobacco, HCN
6) Neurotoxic	Cobra, krait, scorpion. Venom
7) Hematotoxic	Viper, scorpion, venoms
8) Myotoxic	Sea snake venom

Tests for poisoning

1) Sulphuric acid	Carbonization
2) Nitric acid	Xanthoproteic reaction
3) Carbolic acid	Green urine, Prussian blue test
4) Arsenic	Marsh's test , Reinh's test
5) Lead	Punctate basophilia
6) Opium	Marquis test
7) Alcohol	Mac ewan's test
8) Dhatura	Mydriatic tset
9) CO gas	Spectroscopic test

Some important features in poisoning –

- 1) Blotting paper like stomach – sulphuric acid
- 2) Black stool – lead poisoning
- 3) Blue vomitus and stool – copper
- 4) Froth from mouth – opium
- 5) Tactile hallucinations – Ergot, cocaine
- 6) Carboluria (oigurea,albuminurea,hematuria) – Carbolic acid
- 7) Leather bottle appearance of stomach – carbolic acid
- 8) Phossy jaw – glass jaw – phosphorus
- 9) Red velvety appearance of stomach – Arsenic
- 10) Mees lines on finger and nails – Arsenic
- 11) Colicky pain and blue line on gums – Lead
Lead line or Bertonian line
Wrist drop and foot drop (lead palsy)
- 12) Blue line on gums, pink disease (acrodynia) – Mercury
- 13) The triad of coma, pin point pupil and depressed respiration – opioid poisoning
- 14) Hippus reaction (alternate dilatation & constriction of pupils) – Aconite

Food poisoning

Types –

- 1) Infection type – Salmonella group of organisms, other may be e.coli, Streptococci and staphylococci.
- 2) Toxin Type – Enterotoxin formed by staphylococcus, other may be E. coli or vibrio
- 3) Botulinism – Clostridium botulinum.

विकृतिविज्ञान

दोषगती – त्रिविध

- 1) क्षय – स्थान – वृद्धी
- 2) उर्ध्व – अधः – तिर्यक
- 3) कोष्ठ- शाखा – मर्मास्थिसंधि

दोषो की कालकृत गती – 3

- 1) संचय
- 2) प्रकोप
- 3) प्रशम

दोषो की प्राकृति गती – = स्थान गती = स्वस्थावस्था में होती है।

दोषो की विकृती गती = क्षय व वृद्धी = रोगी अवस्था में होती है।

व्याशी मार्ग – त्रयो रोगमार्ग इति शाखा मर्मास्थिसंधि कोष्ठश्च । च.सू. 11/48

शाखामार्ग	कोष्ठमार्ग	मध्यम मार्ग
बाह्य रोगमार्ग	आभ्यन्तर रोगमार्ग	मध्यम रोगमार्ग
रक्तादयो धातवः त्वक् च	महास्त्रोत, शारीरमध्य, महानिम्न आमपक्वाशय	बस्ती, हुदय, मूर्धादी मर्म अस्थी संधि व तनिबृद्ध स्नायुकण्डरा
गलगंड, पिंडका, अलजी, अपची चर्मकील, अधिमांस, मषक, व्यंग कुष्ठ विसर्प, शोथ, गुल्म, अर्श, विद्रूढि	ज्वर, अतिसार, छर्दि, अलसक विसूचिका, हिक्का, श्वास, कास आनाह, प्लीह, उदर विसर्प, शोथ, गुल्म, अर्श, विद्रूढि	पक्षवृद्ध, पक्षग्रह, अपतानक, अर्दित शोष, राजयक्षमा, अस्थीसंधिशूल गुदभ्रंश शिरोरोग, हुद्रोग, बस्तीरोग

दोषो के कोष्ठ से शाखा में गमन के कारण – 4

- 1) व्यायामात्
- 2) उष्मणः तैक्षण्यात्
- 3) हितस्य अनवचारणात्
- 4) द्रुतत्वात् मारुतस्य

दोषो को शाखा से कोष्ठ में लाने के उपाय – 5

- 1) वृद्धी
- 2) अभिष्यंदात्
- 3) पाकात्
- 4) स्त्रोतोमुखविशेषनात्
- 5) वायोश्च निग्रहात्

व्याधी –

व्याख्या –

- 1) तद् दुःख संयोगः व्याधयः उच्यन्ते । सु.सू. 1/23
- 2) विकारो धातुवैषम्यं । च.सू. 9/4
- 3) रोगस्तु दोषवैषम्यं । अ.हु.सू. 1/20
- 4) तथाविध दोषदूष्यसंमूर्च्छनावस्थावस्थाविशेषो ज्वरादिरूपो व्याधीः । मा.

पर्याय -

आमय, गद, आतंक, यक्षमा, ज्वर, विकार, रोग, पाप्मा,

व्याधी का मूल कारण दोष -

1) सर्व एव निज विकाराः नान्यत्र वातपित्तकफेभ्यो निर्वर्तने यथा हि शकुनिः सर्वदिवसमपि परिपतन् स्वां छायां नाति वर्तते तथा स्वधातुवैषम्यनिमित्ताः सर्वे विकाराः वातपित्तकफान् नातिवर्तने । च.सू. 19/16

2) सर्वेषां च व्याधीनां वातपित्तश्लेष्माण एव मूलं । सु.सू. 24/8

व्याधी का समवायी कारण - दोष

व्याधी का असमवायी कारण - दोष दूष्य संमूच्छना

व्याधी का निमित्त कारण -- प्रज्ञापराध, मिथ्या आहार विहार इ.

व्याधी प्रकार -

1) त्रयो रोगाः निज आगन्तु मानसाः ।

तत्र निज शारीरदोषसमुत्थः

आगन्तुः भूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसमुत्थः

मानसः पुनः इष्टस्य अलाभात् लाभात् च अनिष्टस्य उपजायते । च.सू. 11/45

2) चतुर्विध रोग - अग्ननुज वातज पित्तज कफज

3) रोगानिक -

अ) प्रभावभेद - 2 साध्य असाध्य

ब) बलभेद - 2 मृदू दारूण

क) अधिष्ठानभेद - 2 शारीर मानस

ड) हेतुभेद - 2 शारीरदोषवैषम्यज आगन्तुज

इ) आशयभेद - 2 आमाशयसमुत्थ पक्वाशयसमुत्थ

ई) स्वभावभेद - 2 उत्तान गंभीर

फ) अवस्थाभेद - 2 साम निराम अथवा सोम्य आग्नेय

4) द्विविध रोग - अनुबंध्य अनुबंध

1) अनुबंध्य (स्वतंत्र) -

अ) स्पष्ट आकृतयोः (व्यक्तिलिंगो)

ब) यथास्वं समुत्थान उपशयो

2) अनुबंध (परतंत्र) -

उपरोक्त विपरीत लक्षणयुक्त

5) इन्द्रियप्रदोषज व्याधी -

इन्द्रियाणि समाश्रित्य प्रकुप्यन्ति यदा मलाः ।

उपधातोपतापाभ्यां योजयन्तीन्द्रियाणि ते ॥ च.सू. 28/20

6) उपधातुप्रदोषज व्याधी -

स्नायौ सिराकण्डराभौ दुष्टाः क्लिश्नन्ति मानवमा

स्तंभसंकोचखल्लीभिः ग्रंथिस्फुरणसुप्तिभिः ॥ च.सू. 28/21

7) मलप्रदोषज व्याधि –

मलानामाश्रित्य कुपिता भेदशोषप्रदूषणम् ।

दोषा: मलानां कुर्वन्ति संगोत्सर्गातीव च ॥ च.सू. 28/22

8) संतर्पणोत्थ व अपतर्पणोत्थ व्याधि –

संतर्पणोत्थ व्याधि	प्रमेह, प्रमेह पिडका, कोठ, कण्डू, कुष्ठ, पांडू, ज्वर, आमप्रदोषज विकार, मूत्रकृच्छ्र अरोचक, तन्दा, क्लैव्य, अतिस्थोल्य, आलस्य, गुरुगान्ता, इन्द्रियस्त्रोरसां लेप बुध्देमोह, प्रमीलक, शोफ
अपतर्पणोत्थ व्याधि	देहानिवलवर्ण ओज शुक्रमांस परिक्षय, कासानुबंधी ज्वर, पार्श्वशूल, अरोचक श्रोत्रदौर्बल्य, उन्माद, प्रलाप, ह्रुदयव्यथा, विटमूत्रसंग्रह, जंघा उरुत्रिकसंश्रित शूल पर्वास्थिभेद, संधिभेद, वातज रोग, उर्ध्ववात

9) अपरिसंख्येय विकार –

विकाराः पुनः अपरिसंख्येयाः प्रकृति अधिष्ठान लिंग आयतन विकल्प विशेष अपरिसम्भ्येयत्वात्

आम –

परिभाषा – उष्मणो अल्पबलत्वेन धातुम् आदयम् अपाचितम् ।

दुष्टमामाशयगतं रसं आमं प्रचक्षते ॥ अ.हु. सू. 13/24

स्वरूप – अविपक्वं असंयुक्तं दुर्गंधं बहुपिच्छिलम् ।

सदनं सर्वगान्त्राणां आम इति आभेधीयते ॥ मा.नि.

उपमा – कोट्रवो विषस्य ।

हेतु – विरुद्धाध्यशनाजीणशीलिनो विषलक्षणम् ।

आमदोषं महाघोरं वर्जयेत् विषसंज्ञकम् ॥ अ.हु.सू.8/13

लक्षण – स्त्रोतोरोध बलभ्रंश गौरव अनिलमूढता: ।

आलस्य अपक्ति निष्ठिव मलसंग अरुचि क्लमाः ॥ अ.हु.सू. 13/23

सामदोष लक्षण

साम वात	निराम वात
विबंध	निविबंध
वेदना	अल्पवेदन
तंदा आंत्रकूजन	-----
शोथ निस्तोद ऋमशो अंगानि पिडयन	विशद रूक्ष
स्नेहाद्यैः वृद्धिमाजोति सूर्यमेघोदये निशि	विपरीत गुणैः शान्तिं स्निग्धैः याति विशेषतः

साम पित्त	निराम पित्त
दुर्गंध	विगंध
हरीतश्याव	आताम्रपीत
अम्ल	कटू
स्थिर	अस्थिर
अम्लिका कंठ हुद्याहकर	रूचीपक्ति बलप्रदम्
घन गुरु	अत्युष्ण

साम कफ	निराम कफ
आविल तंतुल स्थान कण्ठदेशे अवरिष्टते क्षुद उदगार विधातकृत दुर्गंध	फेनवान पिण्डित पाण्डु निस्सार ----- छेदवान वक्त्रशुद्धिकृत अगन्ध

साम दोष लक्षण – स्त्रोतोरोध बलभ्रंशा गौरव अनिलमूढता ।

आलस्य अपकि निष्ठिव मलसंग अरूचि क्लमः ॥ अ.हु.सू. 13/23

साम पुरीष लक्षण – संसृष्टमेभिर्दोषे स्तु न्यस्तमप्सु अवसीदति ।

पुरीषं भृशदुर्गंधिं पिच्छिलं चामसंजकम् ॥ सु.उ. 40

साम व्याधी लक्षण – क्षुन्नाशो हुदयाशुद्धिः तंद्रा जठरगौरवैः ।

दोषप्रवृत्तीर्नो यत्र व्याधीं आमान्वित वदेत् ॥ वंगसेन 22/539

दोषपाक लक्षण – दोषप्रकृति वैकृत्यं लघुताज्वरदेहयोः ।

इन्द्रियाणां च वैमल्यं दोषाणां पाकलक्षणम् ॥ मा.नि. ज्वर (मधुकोष)

1) जिस दोष से ज्वर उत्पन्न हुआ है उसकी प्रकृति के विपरीत लक्षण उत्पन्न होना

2) ज्वर मे व देह मे लघुता उत्पन्न होना

3) इन्द्रियो मे विमलता (इन्द्रियों को अपने विषयों को ग्रहण करना)

धातुपाक लक्षण – निद्रानाशो हुदिस्तम्भो विष्टम्भो गौरव अरूची ।

अरति: बलहानिश्च धातुनां पाकलक्षणम् ॥ मा.नि.

निद्रानाश, हुद स्थान मे स्तंभवत, विष्टभ, गुरुता, अरूची, अरति, बलनाश उपरोक्त उभय (दोषपाक व धातुपाक लक्षण माधव ने ज्वर के संदर्भ मे कहे हैं ।

पादचतुष्टय –

1) वैदय गुण – 1) श्रुते पर्यवदातत्व – वैदय को शास्त्र का ज्ञान सर्व तरह से हो (विशुद्ध ज्ञान तत्व)

3) बहुशो दृष्टकर्मता – रेगी, औषध निर्माण तथा औषध प्रयोग बहु बार किया हो

3) दाक्ष्य – कार्यतत्पर होना

4) शौच – पवित्रता होना

2) औषधी गुण – 1) बहुता – औषधी बहु प्रमाण मे प्राप्त हो

2) योग्यत्व – औषधी व्याधीनाश मे योग्य हो

3) अनेकविधकल्पना – अनेक कल्प बनाने की औषधी मे योग्यता होना

4) संपत – औषधी अपने रस गुण वीय विपाकादी मे संपन्न हो ।

3) परिचारक गुण – 1) उपचारज्ञता – उपचारो का पूर्ण ज्ञान हो

2) दाक्ष्य – कार्यतत्पर हो

3) अनुरागश्च भर्तरि – रूग के प्रति प्रेम हो 4) शौच – पवित्रता हो

4) रोगी गुण – 1) स्मृती – व्याधी का इतिहास बताने की क्षमता होने के लिए स्मरणशक्ती

2) निर्देशकारीत्व – वैद्य की आज्ञाओं का पालन करना

3) अभीरूत्व – रोग हरण के लिए निर्भयता 4) ज्ञापकत्व – वेदना बता सकने की क्षमता

भावप्रकाशानुसार – चिकित्सा के सप्तपाद है = चतुष्पाद + दूत दीर्घायु द्रव्य

व्याधी साध्यासाध्यत्व -

सुखसाध्य	कष्टसाध्य
1) हेतु पूर्वरूप रूप अल्पत्व	1) निमित्त (हेतु) पूर्वरूप रूप मध्यम बल
2) न च तुल्यगुणो दूष्यो न दोषः प्रकृतिर्भवेत् (दोष से दूष्य तुल्यगुण न हो, दोष से रोगी की प्रकृति समान (तुल्य) न हो।)	2) कालप्रकृति दूष्याणां सामान्येऽन्यतमस्य च । (दोष से काल प्रकृति दूष्य इनमें से एक की समानता हो)
3) गतिरेका	3) विदयात् एकपथं नातिपूर्णचतुष्पदम्, द्विपथं नातिकालं
4) नवत्व	4) अनवं
5) रोगस्योपद्रवो न च	5) नाति उपद्रवपिडीतम्
6) एकदोषजं (दोषश्वैक समुत्पत्तौ)	6) द्विदोषजं
7) चतुष्पादोपपत्तिश्च सर्वाषधक्षमः	7) गर्भीणीवृद्धबालानां , शस्त्रक्षाराग्निकृत्या
8) न देशो दुरुपक्रमः	8) कृच्छ्रदेशजम्

याप्य	प्रत्याख्येय
1) शेषत्वादायुषो याप्य; पथ्यसेवया लब्धाल्पसुखं अल्पेन हेतुना आशुप्रवर्तकम् (असाध्यं) (आयुष्य शेष होने के कारण पथ्यसेवन से अल्प सुख ; अल्प हेतुसेवन से आशुप्रवर्तन)	1) दुर्बलस्य सुसंवृद्धं व्याधीं सारिष्टमेव च
2) गम्भीरं बहुधातुस्यं मर्मसंधिसमाश्रितम्	2) क्रियापथं अतिक्रान्तं सर्वमार्गानुसारीणम्
3) नित्यानुशायिनं रोगं दीर्घकालावस्थितम्	3) औत्सुक्यारतिसंमोहकरमिन्द्रियनाशनम्
4) द्विदोषजम्	4) त्रिदोषजम्

ज्वरे तुल्यऋतु दोषत्वं प्रमेहे तुल्यदूष्यता । रक्तगुल्मे पुराणत्वं सुखसाध्यस्य लक्षणम् ॥ मा.नि.

नियम	अपवाद
1) तुल्य ऋतु दोषत्व व्याधी – असाध्य	ज्वर
2) तुल्य दोष दूष्य व्याधी – असाध्य	प्रमेह
3) पुराणत्व (जीर्ण व्याधी) – असाध्य	रक्तगुल्म

प्राकृतः सुखसाध्यस्तु वसंतः शरद उद्भवः । च.चि. 3

- 1) वसंत ऋतु मे उत्पन्न कफज ज्वर – सुखसाध्य
- 2) शरद ऋतु मे उत्पन्न पित्तज ज्वर – सुखसाध्य
- 3) वर्षा ऋतु मे उत्पन्न वातज ज्वर – कष्टसाध्य

स्रोतस –

व्याख्या –

- 1) स्त्रवणात् स्त्रोतांसि । च.सू. 30/12
- 2) स्त्रोतांसि खलु परिणामपादयमानानां धातुनामभिवाहीनि भवन्ति अयनार्थेन । च. वि. 5/3
- 3) मूलात् खादन्तरं देहे प्रसृतं तु अभिवाहि यत्
स्रोतसं तद् इति ज्ञेयं सिराधमनी वर्जितम् ॥ सु.शा. 9/11

स्वरूप -

स्वधातु समवर्णनि वृत्त स्थूलानि अणूनि च ।

स्त्रोतांसि दीर्घाणि आकृति प्रतान सदृशानि च ॥ च.वि. 5/33

पर्याय - सिरा, धमनी, रसायनी, नाड़ी, पंथ, मार्ग, शरीरछिद्र, संवृत असंवृत स्थानानि, आशय, निकेत

प्रकार - यावन्तः पुरुषे मूर्तीमतो भावविशेषः तावन्त एवास्मिन् स्त्रोतसां प्रकार विशेषः ।

सर्वे हि भावाः पुरुषे नान्तरेण स्त्रोतांस्याभिनिर्वर्तने, क्षयं वा अपि अधिगच्छन्ति । च.वि. 5/3

1) चरक - 13 स्त्रोतस (गर्भप्रकरण में आर्तववह स्त्रोतस का उल्लेख)

2) सुश्रुत - 11 स्त्रोतस (योगवाही - 22 स्त्रोतस) मेदोवह अस्थीवह मज्जावह माने नहीं हैं ।

3) अष्टांगसंग्रह - जीवीतायतन शब्द का प्रयोग स्त्रोतस के लिए विया है ।

स्त्रोतोदुष्टी सामान्य हेतु -

1) दोषो के समान गुण आहार विहार सेवन

2) धातुओं के विरुद्ध गुण आहार विहार सेवन

स्त्रोतोदुष्टी सामान्य लक्षण -

अतिप्रवृत्तेः संगो वा सिरणां ग्रन्थयो अपि वा ।

विमार्गमनं चापि स्त्रोतसां दुष्टिलक्षणम् ॥ च. वि. 5/ 24

स्त्रोतोदुष्टी हेतु व लक्षण -

स्त्रोतस	दुष्टि कारण	स्त्रोतोदुष्टी लक्षण
1) प्राणवह	क्षयात् (धातुक्षय से), संधारणात् (मलमूत्रादी वेग धारण से) रौक्ष्यात् (रूक्ष आहार सेवन से) व्यायामात् क्षुधितस्य (भूख लगानेपर व्यायाम करने अन्यैश्च दारूणैः (शक्ती से बाहर कठिन कर्म)	अतिसृष्टि, अतिवर्ध्द, कुपित अल्पाल्प अभीक्षण (पुनः पुनः), सशब्द शूलयुक्त श्वास लेना ।
2) उदकवह	औषधायात् (उष्ण आहार विहार से) आमाद् (आमदोष से), भयात् (भय से) पानात् (मदयपान से) अतिशुष्कान्नसेवनात् तष्णायाश्वातिपिडनात् (तृष्णा वेग रोकने से)	जिह्वा तालु ओष्ठ कंठ क्लोम शोष विपासा च अतिप्रवृद्धां
3) अन्नवह	अतिमात्रस्य (अतिमात्र में भोजन) अकाले (भोजन समय न होनेपर भोजन) अहितस्य भोजनात् (अहितकर भोजन से) वैगुण्यात् पावकस्य च (अग्नि के वैगुण्य से)	अनन्ताभिलाषा, अरोचक अविपाक चर्दि
4) रसवह	गुरु शीत अतिस्निग्ध अतिमात्रं समश्नताम् चिन्त्यानां चातिचिन्तनात्	अश्रद्धा अरुचि आस्यवैरस्य अरसज्जता हुल्लास गौरव तंद्रा अंगमर्द ज्वर तम पांडुत्व स्त्रोतसान् रोध क्लैब्य साद कृशांगता अग्निनाश अयथाकाल वली पलीत
5) रक्तवह	विदाही अन्नपान, स्निग्ध द्रव उष्ण अन्नपान, भजतां चातपानलौ	कुष्ठ विसर्प पिडका रक्तपित्त असृग्दर गुदमेहस्यपाक प्लीहा गुल्म विद्रधि निलिका कामला व्यंग पिल्लवस्तिलकलका ददु चर्मदल श्वित्र पामा कोठास्त्रमंडल

6) मांसवह	अभिष्यंदी स्थूल गुरु भोजन भुक्त्वा च स्वपतां दिवा	अधिमांस अर्बुद मांसकील गलशालूक गलशुंडिका पूतीमांस अलजी गलगड गंडमाला उपजिह्विका
7) मेदोवह	अव्यायामात्, दिवास्वप्नात् मेदयानां चातिभक्षणात्, वारूण्याश्वातिसेवनात्	प्रमेह पूर्वरूप - दन्तादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं पाणीपादयोः दाहः चिककणता देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते ।
8) अस्थीवह	व्यायामात्, अतिसंक्षोभात्, अस्थनामतिविघटनात् वातलानां च अतिसेवनात्	अध्यस्थि, अधिदन्त, दन्तभेद दन्तशूल अस्थिशूल अस्थिविवर्णता केशलोमनखश्मश्रु दोष
9) मज्जावह	उत्पेषाद् (कुचल जाने से) अत्यभिष्यंदात् (कफ के भर जाने से), अभिधातात्, प्रपीडनात् विरूधदानां च सेवनात्	रुक् पर्वणां भ्रमो मूर्च्छा दर्शनं तमस्तथा अस्थां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम्
10) शुक्रवह	अकालयोनीगमनात् निग्रहात् (शुक्रवेगनिग्रहात्) अतिमैथुनात्, शस्त्रक्षाराग्निभिस्तथा	क्लैब्य, अप्रहर्षण रोगी ता क्लीबं अल्पायुः विरूपं प्रजायते न चास्य जायते गर्भः पतति प्रस्त्रवत्यपि शुक्रं हि दुष्टं सापत्यं सदारं बाधते नरम्
11) मूत्रवह	मूत्रितोदकभक्ष्य स्त्रीसेवनात् मूत्रनिग्रहात् (मूत्रवेग रोककर जल पीने से, भोजन करने से, मैथुन करने से मूत्रवेग निगग्रहसे) क्षीणस्याभिहतस्य (शरीर क्षीण होने से, अभिधात से)	अतिसृष्ट अतिदब्ध प्रकुपित अल्पाल्प अभीक्षण (पुनःपुनः) वा बहल सशूल मूत्रयन्तं,
12) पुरीषवह	संधारणात् (वेगधारण) अत्यशनाद् अजीर्ण अध्यशनात् वर्चोवाहिनी दूष्यन्ति दुर्बलानेः कृशस्य च	कृच्छ्रेण अल्पाल्पं सशब्दशूलम् अतिद्रवम् अतिग्रथितं अतिबहु च उपविशन्तं
13) स्वेदवह	व्यायामाद् अतिसंतापात् शीतोष्णाक्रमसेवनात् स्वेदवाहिनी दूष्यन्ति क्रोधशोकभयस्तथा	अस्वेदनं अतिस्वेदनं पारूष्यमतिश्लक्षणताम् अंगस्य, परिदाहं लोमहर्ष

स्त्रोतोदुष्टी चिकित्सा –

- प्राणवह स्त्रोतस – प्राणवहानां दुष्टानां श्वासिकी क्रिया । (श्वास व्याधीसमान चिकित्सा)
- उदकवह स्त्रोतस – उदकवहानां दुष्टानां तृष्णोपशमनी क्रिया (तृष्णा व्याधी चिकित्सा)
- अन्नवह स्त्रोतस – अन्नवहानां दुष्टानां आमप्रदोषिकी क्रिया (आमदोषनाशक चिकित्सा)
- रसवह स्त्रोतस – रसजानां विकाराणां सर्व लंघनमौषधम् ।
- रक्तवह स्त्रोतस – विधिशोणितिकेऽध्याये रक्तजानां भिषग्नितम् ।
- मांसवह स्त्रोतस – मांसजानां तु संशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्म च ।
- मेदोवह चिकित्सा – अष्टोनिन्दितिकेऽध्याये मेदोजानां चिकित्सितम् ।
- अस्थीवह स्त्रोतस – अस्थ्याश्रयाणां व्याधीनां पंचकर्माणि भेषजम् । बस्तयः क्षीरसर्पिषी तिक्ककोपहितानि च ॥
- मज्जावह व शुक्रवह स्त्रोतस – मज्जशुक्रसमुत्थानं औषधं स्वादुतिक्ककम् ।
अन्नं व्यवायव्यायामो शुद्धिः काले च मात्रया ॥
- मलज रोग चिकित्सा – न वेगान्धारणीय अध्यायोक्त चिकित्सा

निदानपंचक –

निदान (हेतु)

व्याख्या –

- 1) निर्दिश्यते व्याधि: अनेन इति निदानम् । मा.नि.
- 2) निश्चित्यं दीयते प्रतिपादयते व्याधि: अनेन इति निदानम् । मा.नि.
- 3) व्याधिनिश्चय कारणं निदानम् । मा.नि.
- 4) व्याधि उत्पत्तिहेतुः निदानम् । मा.नि.
- 5) सेति कर्तव्यताको हेतुः निदानम् ।

पर्याय –

निमित्त, हेतु, आयतन, प्रत्यय, उत्थान, कारण मा.नि.
कर्ता, कारक, मूल योनी (अष्टांगसंग्रह)

प्रकार – चरक – 3 असात्मेन्द्रियार्थसंयोग प्रज्ञापराध परीणाम

माधवनिदान – 14

- 1) सन्निकृष्ट विप्रकृष्ट व्याभिचारी प्राधानिक
- 2) असात्मेन्द्रियार्थसंयोग प्रज्ञापराध परीणाम
- 3) दोषहेतु व्याधीहेतु उभयहेतु
- 4) व्यंजक उत्पादक
- 5) बाह्य आभ्यंतर

1) सन्निकृष्ट –

कालदृष्टी से नजदिकी कारण – नक्त दिन भुक्त के आदि मध्य अन्त मे क्रमशः कफ पित्त वात का प्रकोप होता है । (इसमे संचय की आवश्यकता नहीं होती है ।)

2) विप्रकृष्ट –

हेमंत मे निचीत श्लेष्मा वसंत मे प्रकृपित होकर कफज रोग का कारण होता है
ज्वर मे –

- 1) रुक्षादीसेवा – सन्निकृष्ट हेतु
- 2) रुद्रकोप – विप्रकृष्ट हेतु

3) व्यभिचारी –

व्यभिचारी यथा यो दुर्बलत्वाद् व्याधीकरण असमर्थः । मानि
दुर्बल होने से व्याधी निर्माण मे असमर्थ होता है
अल्पांश या अल्पबल होने से यह हेतु व्याधी निर्माण नहीं करता या अल्पबला व्याधी निर्मिती
जब बलवान होता है तब बलवान व्याधी निर्माण करता है ।

4) प्राधानिक –

उग्र स्वभाव के कारण शीघ्र ही दोषों को कुपीत कर व्याधी उत्पन्न करता है ।
उदा. विष आदी

ब) 1) असात्मेन्द्रियार्थ संयोग –

रूप रसादी का अयोग अतियोग मिथ्यायोगादी

2) प्रज्ञापराध –

- प्रज्ञापराधो मिथ्याज्ञानादी
- धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत् कुरुते अशुभम् ।
प्रज्ञापराधं तं विदयात् सर्वदोषप्रकोपणम् ॥ च.शा, 1/102

3) परिणाम –

परिणामः अयोद्दियुक्ता ऋतुस्वभावजा शीतादयः । मा.नि.

काल के अयोग अतियोग मिथ्यायोग आदी स्वरूप लक्षण

कालः पुनः परिणामः उच्यते ।

क) 1) दोषहेतु –

चयप्रकोप प्रशमनिमित्ता यथर्तुत्पन्ना मधुरादयः । मा.नि.

शिशिर हेमंत मे मधुर रस उत्पत्ती से कफ चय व वसंत मे प्रकोप इस प्रकार दोषप्रकोप

2) व्याधी हेतु –

व्याधी को उत्पन्न करनेवाला विशिष्ट हेतु

उदा. मृदभक्षण से पांडु रोग उत्पत्ती

3) उभय हेतु –

किसी विशिष्ट दोष का प्रकोपक होते हुए किसी रोग का भी उत्पादक हेतु उभय हेतु होय

इ) 1) उत्पादक हेतु –

दोष से समवाय अथवा उपादानरूपी कारण होकर व्याधी उत्पन्न करनेवाला हेतु

उदा. हेमंत मे उत्पन्न मधुर रस कफ का 'उत्पादक' हेतु है ।

2) व्यंजक –

तत्र व्यंजकः प्रेरकः इति ।

हेमंत मे संचित कफ पुनः वसंत मे सूर्य की किरणों से पिघलकर कफज रोगों की उत्पत्ती करता है; अतः सूर्यसंताप कफ का 'व्यंजक हेतु' हुआ ।

व्यंजक हेतु को 'प्रेरक' हेतु भी कहा जाता है ।

इ) 1) बाह्य –

आहार विहार काल आदी से जो दोषप्रकोप होता है उसे बाह्य हेतु कहा जाता है ।

2) आभ्यंतर –

शारीरस्थ 'दोष' व 'दूष्य' इन्हे आभ्यंतर हेतु कहा जाता है । (मधुकोष)

पूर्वरूप

व्याख्या –

1)प्राग्रूपं येन लक्ष्यते ।

उत्पत्सुरामयो दोषविशेषणाधिष्ठितः ।

लिंगम् अव्यक्तम् अल्पत्वात् व्याधीनां तद् यथायथम् । वा.नि. 1/4

उत्पन्न होने जा रहे व्याधी मे दोष अधिष्ठित होकर अव्यक्त लक्षण अल्प रूप से उत्पन्न करते है उन्हे पूर्वरूप कहा जाता है ।

2) अव्यक्तं लक्षणं तस्य पूर्वरूपमिति स्मृतम् । मा.नि.

3) भाविव्याधिबोधकमेव लिंगं पूर्वरूप इति ।

4) स्थानसंश्रयिणः कुरुद्धा भाविव्याधिप्रबोधकम् ।
दोषाः कुर्वन्ति यल्लिंगं पूर्वरूपं तदुच्यते ॥ मा.नि.

प्रकार -

अ) 1) सामान्य पूर्वरूप -

दोष व दूष्य संमूच्छना समय भावी व्याधी के सूचक लक्षण से उस व्याधी की कल्पना की जाती है पर उस व्याधी का दोषविशेष ज्ञात नहीं होता; जैसे वातज या पित्तज ज्वर

2) विशेष पूर्वरूप -

जिन लक्षणों से केवल व्याधी का ज्ञान होता है अपितु व्याधीजनक दोष का (प्रकार) का भी ज्ञान होता है । उदा. जृम्भा से वातज ज्वर, नेत्रदाह से पित्तज ज्वर, अरुची से कफज ज्वर

ब) 1) शारीर पूर्वरूप -

जैसे ज्वर में आलस्य मुखवैरस्य गौरव आदी शारीर संबंधी पूर्वरूप व्यक्त होना

2) मानस पूर्वरूप -

अरति, हितोपदेश से विरोध आदी मानस संबंधी पूर्वरूप व्यक्त होना

3) शारीर मानस पूर्वरूप -

अल्प लवण कटू आदी सेवन की इच्छा व मधुगाढ़ी से द्वेष इस प्रकार उभय पूर्वरूप व्यक्ती पूर्वरूप ज्ञान महत्व -

1) पूर्वरूप काल में किया जानेवाले क्रियाविशेषों का ज्ञान होता है ।

जैसे - 1) ज्वरस्य पूर्वरूपे लघुअ अशन अपतर्पणं वा । (च.नि. 1)

2) वातज ज्वर के पूर्वरूप में घृतपान :

3) अश्मरी के पूर्वरूप में स्नेहादी क्रिया

2) व्याधीविनिश्चयार्थ -

हारिद्रवर्णं रूधिरं च मूत्रं विना प्रमेहस्य हि पूर्वरूपैः ।

यो मूत्रयेत्तं वदेत्प्रमेहं रक्तस्य हि स प्रकोपः ॥ मा.नि. / च.चि. 6

हारीद्रवर्णं व रूधीर वर्णं मूत्रप्रवृत्ती देखकर दो प्रकार के व्याधी का अनुमान

1) प्रमेह की पूर्वरूप सह है तो व्याधी विनिश्चय 'प्रमेह' क्रिया जाता है ।

2) प्रमेह के पूर्वरूप न हो तो व्याधी विनिश्चय 'रक्तपित्त' क्रिया जाता है ।

रूप -

व्याख्या -

1) तदेव व्यक्तां यातं रूपमित्याभिधीयते । मा.नि.

2) तस्मात् उत्पन्नव्याधिबोधकमेव लिंगं रूपं । मा.नि.

3) तथाविधदोषदूष्य संमूच्छनाविशेषो ज्वरादिरूपो व्याधिः; तत्कार्यशारूचादयः

4) प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिंगम् । च.नि. 1

पर्याय -

संस्थान, व्यंजन, लिंग, लक्षण, चिन्ह, आकृती

व्याधी व रूप (लक्षण) भेद -

ज्ञानार्थं यानि चोक्तानि व्याधिलिंगानि संग्रहे ।

व्याध्ययस्ते तदात्वे तु लिंगानीष्टानि नामयाः ॥ च.नि. 8

ग्रंथो मे व्याधी निदान ज्ञानार्थ जो तदात्व (परावलम्बी) लक्षण बताये है उन्हे लक्षण / रूप कहते है और जिन लक्षणो मे तदात्व (परावलंबीत्व) नही होता है उन्हे व्याधी कहा जाता है ।

संप्राप्ति –

व्याख्या –

- 1) यथा दुष्टेन दोषेण यथा च अनुविसर्पता ।

निवृत्तिः आमयस्य असौ सम्प्राप्तिः जाती आगति ॥ अ.हु.नि. 1/8

दोष जिस प्रकार के निदानो से दूषित होकर (प्राकृत या वैकृत), जिस प्रकार (उर्ध्व या अध आदी) गतीयो से विसर्पण करते हुए (धातु आदी को दूषित कर) रोग को उत्पन्न करता है उसे सम्प्राप्ति कहते है ।

- 2) दोषेतिकर्तव्योपलक्षितं व्याधिजन्म सम्प्राप्तिः । मधुकोष

3) व्याधिजनक व्यापारविशेषयुक्तं व्याधीजन्मेह सम्प्राप्ति शब्देन वाच्यम् । चक्रपणि

- 4) सम्प्राप्तिर्जातिरागतिरित्यूनर्थान्तरं व्याधेः । च.नि. 1/11

पर्याय – जाति , आगति

सम्प्राप्ति मे स्थान महत्व –

स एव कुपितो दोषः समुत्थानविशेषः ।

स्थानान्तराणि च प्राप्य विकारान् कुरुते बहुन् ॥ मा.नि.

कुपित दोष जिस स्थान मे संश्रय करता है उस स्थान विशेष के अनुसार व्याधी उत्पन्न होता है ।

प्रकार –

संख्या, प्राधान्य, विधि, विकल्प, बल व काल

वाग्भट व कविगज गणनाथ सेन ने विधि का संख्या मे अन्तर्भाव कर विधि इस प्रकार की पृथक गणना नही की है ।

1) संख्या –

यथा अन्नैव वक्ष्यन्ते अष्टो ज्वरा इति । मानि

दोष-दूष संमूर्च्छना के बाद व्याधी की संख्या रूप गणती

2) विधि –

विधिर्नाम द्विविधा व्याधयो निजागन्तुभेदेन, त्रिविधा स्त्रिदोषभेदेन, चतुर्विधा साध्यासाध्य

मृदूदारूण भेदेन । च.नि. 1

मधुकोष – समानेन धर्मेण परिग्रहो भेदानां यत्र क्रियते स विधिः ।

किसी समान धर्म; के आधार पर व्याधी के भेद किये जाते है । उदा. – निज व आगंतु भेद दोष भेद से तीन प्रकार, साध्यासाध्य भेद से चार प्रकार, गती भेद से रक्तपित्र के उर्ध्व वा अधोग

3) विकल्प –

- 1) समवेतानां पुनर्दोषाणां अंशांश बलविकल्पो विकल्पोऽस्मिन्नर्थे । च.नि. 1

- 2) दोषाणां समवेतानां विकल्पो अंशांश कल्पना । अ.हु.नि. 1

मधुकोष – ‘अंश’ शब्द से वातादी दोषोगत रूक्षादी गुणो की एक द्वी त्री या समस्त रूप से विकल्पना कर संप्राप्ति ज्ञात करना ।

किसी व्याधी मे एकत्र दोषो के गुणो के प्रकोपांश का सूक्ष्म विचार करना विकल्प संप्राप्ति है

4) प्राधान्य –

1) प्राधान्यं पुनः दोषाणां तरतमाभ्यामुपलभ्यते । तत्र द्वयः तर त्रिषु तम इति । च. नि 1
जहा दो या तीन दोष व्याधी उत्पन्न करनेवाले होते हैं, वहा दो दोष व्याधीजनक हो तो प्रधान दोष के लिए 'तर' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे वातपित्तज व्याधी में वात प्रधान होनेपर पित्त वृद्ध व वात वृद्धतर का प्रयोग होता है । त्रिदोषज व्याधी में सबसे अधिक बढ़े हुए दोष के लिए 'तम' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे सान्त्रिपातज व्याधी में वात 'वृद्धतम' पित्त 'वृद्धतर' व कफ 'वृद्ध' इस प्रकार संप्राप्ति ज्ञान होता है ।

2) स्वातंत्र्यपारतन्नाभ्यां व्याधेः प्राधान्यमादिशेत् । अ.हु.नि. 1

प्राधान्यं विवृणोति – स्वातंत्र्यपारतन्नाभ्यामिति । अनुबन्ध्यानुबन्धभावेनेत्यर्थः । मधुकोष यदि किसी रोग में वातगुणों के ज्यादा लक्षण प्राप्त होते हैं व कफ के अल्प लक्षण प्राप्त होते हैं तो उसे वातप्रधान कफानुबंधी माना जाता है
इसमें वात – अनुबन्ध (प्रधान) ; कफ – अनुबंधी (अप्रधान)
दो व्याधीयों के संरभ में – ज्वर अगर प्रथम उत्पन्न हुआ व उसके बाद कास उत्पत्ति है तो
ज्वर – प्रधान = स्वतंत्र = अनुबन्ध
कास = परतंत्र = अनुबंधी

5) बल संप्राप्ति –

हेत्वादिकात्स्न्यावियवैर्बलाबलम् । अ.हु. नि. 1

हेतु पूर्वरूप रूप आदी पूर्णरूप से व बलवान् = बलवान् व्याधी

हेतु पूर्वरूप रूप आदी अल्परूप से व अपबल = अल्पबल व्याधी

इसप्रकार व्याधी के बलाबल का ज्ञान करनेवाली सम्प्राप्ति = बल सम्प्राप्ति

चरक ने बलसम्प्राप्ति को पृथक न मानकर काल सम्प्राप्ति से उसका संबंध जोड़कर 'बलकाल' नाम से एक ही सम्प्राप्ति भेद कर दिया है ।

6) काल सम्प्राप्ति –

नक्तं दिनर्तुभुक्तांशैव्याधिकालो यथामलम् । मा. नि.

नक्त (प्रथम द्वितीय तृतीय प्रहर)

दिन (प्रथम द्वितीय तृतीय प्रहर)

ऋतु – हेमान्तादी

भुक्तकाल (भुक्तमात्रे, जीर्यति अन्ने, जीर्णे अन्ने)

इस प्रकार 'काल' के कारण व्याधी के बलाबल पर होनेवाला परीणाम

1) सामान्य सम्प्राप्ति – दोषज प्रकारों का ज्ञान नहीं होता है

2) विशेष सम्प्राप्ति – दोषज प्रकारों का ज्ञान होता है

उपद्रव –

1) उपद्रवस्तु खलु

अ) रोगोत्तरकालजो

ब) रोगाश्रयो

क) रोग एव स्थूलोऽणुर्वा

ड) रोगात् पश्चाज्जायत इत्युपद्रवसंज्ञा । च. चि. 21/40

रोगोत्तरकालज इति रोगमध्यकालज – चक्रपाणि

- 2) रोगारंभक दोषप्रकोपजन्यो अन्यविकारः उपद्रवः । मा.नि.
- 3) व्याधे: उपरि यो व्याधिः भवत्युत्तरकालजः ।
उपक्रमाविरोधी च स उपद्रवः इति उच्यते ॥ मा.नि.
- 4) तत्र औपसर्गिको नाम यः पूर्वोत्पन्नं व्याधिं जघन्यकालजातो व्याधिः उपसृजति,
स तन्मूल इत्युपद्रवसंज्ञा । सु.सू.35/18

उपद्रव व व्याधीसंकर-

कश्चिद्धीरोगो रोगस्य हेतुभूत्वा प्रशास्यति । न प्रशास्यति चाप्यन्ये हेतुत्वं कुरुतेऽपि च ॥
एवं कृच्छ्रतमा नृणां दृश्यन्ते व्याधिसंकराः । ते पूर्वं केवला रोगाः पश्चादहेत्वर्थकारिणः ॥ च.नि. 8
कभी एक रोग दुसरे रोग का हेतु बनकर स्वयं शांत हो जाता है
कभी दुसरे रोग को उत्पन्न कर स्वयं भी प्रशासीत नहीं होता तो उस समय शरीर में दो रोग
अवस्थीत रहते हैं उसे 'व्याधीसंकर' कहते हैं – यह अवस्था कष्टसाध्य मानी जाती है ।

निदानार्थकर रोग -

ते पूर्वं केवला रोगाः पश्चादहेत्वर्थकारिण ।
पूर्वं मे उत्पन्न व्याधी दुसरे व्याधी की उत्पत्ती का कारण बन जाता है उसे निदानार्थकर रोग कहते हैं
उदा. - ज्वरसंतापाद् रक्तपित्तमुदीर्यते ।
रक्तपित्ताज्ज्वरः ताभ्यां शोषश्च अपि उपजायते ॥
प्लीहाभिवृद्ध्यां जठरं जठरात् शोथ एव च ।
अशोभ्यो जठरं दुःखं गुल्मश्च अपि उपजायते ।
प्रतिश्यायाद् भवेत् कासः कासात् संजायते क्षयः ।
क्षयो रोगस्य हेतुत्वे शोषस्याप्युपलभ्यते ॥ च. नि. 8/17,18

उदर्क -

उदर्कं नाम उत्तरकालीन फलम् ।

व्याधी प्रशम होने के बाद शरीर पर अवस्थीत रहनेवाली लिकृती या चिन्ह

उपशय - अनुपशय -

- 1) औषधान्नाविहाराणामुपयोगं सुखावहम् । विदयादुपशयं व्याधे: ॥ मा.नि.
- 2) औषधादिजनितः सुखानुबंध उपशयः । मा. नि.

उपशय उपयोग -

गृद्धलिङ्गव्याधिं उपशयानुपशाभ्यां परीक्षेत् । च. वि. 8

उपशय व चिकित्सा -

व्याधी निदान निश्चित होने तक औषध अन्न विहार इनका जो सुखावह उपयोग किया जाता है
उसे उपशय कहा जाता है । निदान निश्चिती के बाद इनका उपयोग किया जाय तो उसे चिकित्सा
कहा जाता है ।

अनुपशय - उपशय के विपरीत औषध अन्न विहार का अहितकर उपयोग दिखता है उसे अनुपशय कहते हैं

विपरीतो अनुपशयो व्याध्यसात्म्यमिति स्मृतः । अ.हु. नि. 1

अनुपशय को व्याधी के लिए असात्म्य होता है

निदाने तस्य अंतर्भावः, दोषस्य रोगस्य वर्धकत्वात् । - मधुकोष

अनुपशय यह दोष व रोग का वर्धक होने से निदान (हेतु) मे उसका अन्तर्भाव किया जाता है ।

उपशय प्रकार	औषध	अन्न	विहार
हेतुविपरीत	शीत कफ ज्वर मे शुंथि आदी उष्ण औषध	श्रम तथा वातजन्य ज्वर मे मांसरस एवं ओदन	दिवास्वाप से उत्पन्न कफ मे रात्री जागरण
व्याधिविपरीत	अतिसार मे स्तंभनार्थ कूटज कुछ मे खदिर प्रमेह मे हरिद्रा	अतिसार मे स्तंभनार्थ मसूर	उदावर्त मे प्रवाहण
हेतुव्याधिविपरीत	वातिक शोथ मे वातहर तथा शोथहर दशमूल क्वाथ	वातिक ग्रहणी मे तक्र शीतवातोथित ज्वर मे पेया	स्निग्ध आहरसेवनोत्पन्न व दिवास्वाप से उत्पन्न तंद्रा मे रात्री जागरण
हेतुविपरीर्थकारी	पित्तप्रधान व्रणशोथ मे उष्ण उपनाह प्रयोग	पित्तप्रधान व्रणशोथ मे विदाही अन्न	वातजन्य उन्माद मे भयदर्शन
व्याधि विपरीर्थकारी	चर्दि मे वमनकारक मदनफल प्रयोग	अतिसार मे विरेचनार्थ क्षीर का प्रयोग	चर्दि मे वमनार्थ प्रवाहण
हेतुव्याधि विपरीतार्थकारी	अग्नि से दहन पश्चात अगरु सदृश्य उष्ण द्रव्य लेप विषज रोग मे विषप्रयोग	मदयपानजनीत मदात्यय रोग मे मदकारक अन्न प्रयोग	व्यायाम से उत्पन्न संमूढ वात (उरुस्तंभ) मे जल मे तैरने का व्यायाम

अरिष्ट -

1) नियतमणख्यापकं लिंगं अरिष्टं । मधुकोष

2) क्रियापथं अतिक्रान्तं केवलं देहमाल्पुतः ।

चिन्हं कुर्वन्ति यद् दोषास्तदरिष्टं निरुच्यते ॥ च.इ. 11/29

क्रियापथ (चिकित्सामार्ग) को अतिक्रान्त कर सर्व देह मे दोष प्रसृत होकर जो चिन्ह / लक्षण निर्माण करते हैं उन्हे अरिष्ट कहते हैं ।

1) पुरुष आश्रीत भाव (वर्ण स्वर गंध इ) की परीक्षा – प्रकृति व विकृति से करने चाहिए

2) पुरुष अनाश्रीत भावो (छाया प्रभा दूत) आदी की परीक्षा – अप्तोपदेश व युक्ति से करनी चाहिए

अरिष्ट लक्षण विकृती प्रकार – 3

1) लक्षणनिमित्ता –

सा यस्या: शरीरे लक्षणानि एव हेतुभूतानि भवन्ति दैवात् ;

लक्षणानि हि कानिचिच्छरीरोपनिबद्धानि भवन्ति

यनि हि तस्मिन तस्मिन काले तत्राधिष्ठानमासादय तां तां विकृतिमुत्पादयन्ति । च. इ. 1

शरीर मे दैव (पूर्वजन्मकृत कर्म) के अनुसार अरिष्ट लक्षण उत्पन्न होते हैं ।

इनमें से कुछ लक्षण शरीर से संबंधीत रहते हैं

जो विकृती उत्पादक समय मे शरीर के भिन्न भिन्न प्रदेश मे अपना स्थान बनाकर विकृति उत्पन्न करते हैं

2) लक्ष्य निमित्ता –

लक्ष्यनिमित्ता तु सा यस्या उपलभ्यन्ते निमित्तं यथोक्तं निदानेषु ।

लक्ष्यनिमित्ता विकृति जिसे कहते हैं जिसका निदान स्थान मे कारण प्राप्त होता है ।

3) निमित्तनुरूपा –

निमित्तानुरूपा तु निमित्तार्थानुकारिणी या, तामनिमित्तां निमित्तमायुष्यः प्रमाणज्ञानस्येच्छन्ति भिषजो ।

जो निमित्त (हेतु) के अर्थ (कार्य-रोग बोधनरूप) को अनुकरण करने वाली हो ।

यह विकृती रोगोत्पत्ती की निमित्त नहीं होती पर आयुअ के प्रमाण ज्ञान में निमित्त होती है ।
जो निमित्त न होते हुए भी निमित्त के कार्य को करे । जैसे रुक्ष शीतादी पदार्थों का सेवन वातवर्धक होता है किन्तु वह यदी वातशामक होने लगे तो उसे निमित्तानुरूपा विकृति कहते हैं ।

अष्टो महागद -

अनु	चरक	सुश्रुत	दारभट
1	वातव्याधी	वातव्याधी	वातव्याधी
2	अपस्मार	अश्मरी	अश्मरी
3	कुष्ठ	कुष्ठ	कुष्ठ
4	मधुमेह	प्रमेह	प्रमेह
5	उदर	उदर	उदर
6	शोथ	भगंदर	भगंदर
7	राजयक्षमा	मूढगर्भ	ग्रहणी

अष्टमहागद के उपद्रव -

प्राणमांसक्षय श्वास तृष्णा शोष वमी ज्वरः ।
मूर्च्छा अतिसार हिककाभिः पुनश्चैते उपद्रुता ॥
वर्जनीय विशेषेण सु.सू. 33/5

अष्टमहारोग अचिकित्स्य होने के कारण -

- 1) बल मांस क्षय होने से

:



Pathology

Inclusion bodies

Inclusion body	Seen in
Negri bodies	Rabies
Warthin's finkeldy bodies	Measles
Babes ernest granules	Diphtheria
Lewis bodies	Parkinsonism
Donovan bodies	Granuloma inguinale
L.D. bodies	Kala Azar
Garnier bodies	Small pox
Russel's bodies	Multiple myloma

Disease and etiological agent

Plague	<i>Yersinia pestis</i>
Gonorrhoea	<i>Neisseria gonorrhoeae</i>
Chancroid	<i>Haemophilus ducreyi</i>
Brucellosis	<i>Brucella melitensis</i>
Bacterial endocarditis	<i>Streptococcus viridans</i>
	<i>Staphylococcus aureus</i>
Chaga's disease	<i>Trypanosoma cruzi</i>
Dengue	<i>Toga virus</i>
Syphilis	<i>Treponema pallidum</i>
Kala Azar	<i>Leishmania mexicana</i>
Filariasis	<i>Wuchereria bancrofti</i>
Rabies	Rabies virus – (Arbovirus)
Viral encephalitis	Anthropod –bone – virus
Rat bite fever	<i>Spirillum minus</i>

Diagnostic tests

Dick test	Scarlet fever
Montoux test	Tuberculosis
Mistunda test	Hansen's disease
Rose water test	Rheumatoid arthritis
Widal test	Enteric fever
Shilling test	Vit B 12 deficiency
Rose Bengal card test	Brucellosis
String test	Cholera
Schiller's test	Carcinoma cervix
ITO test	Chancroid
Shick test and Elek's test	Diphtheria
Von –Pirquet test	Tuberculosis

Most common malignancies –

- 1) In male – Ca oral cavities
- 2) In female – Ca cervix
- 3) In children – Acute leukaemias

Window period – Time between HIV infection and appearance of antibodies to HIV

Murphy's triad – Appendicitis = pain first vomiting next fever last

Looser's zone – osteomalacia

For detection of myocardial infarction; most specific enzyme is – CPK – MB

Main pathological features –

- 1) Sago spleen – In focal amyloidosis
- 2) Lardoceous spleen – In diffuse amyloidosis
- 3) Mallory's hyaline body – Alcoholic hepatitis
- 4) Grey and red hepatization – Pneumonia
- 5) Nutmeg liver – Chronic passive congestion
- 6) Lumpy bumpy basement membrane – systemic lupus erythematos
- 7) Onion skin lesion – S.I.E.

Main complications

Measles	Otitis media
Typhoid	Paralytic ileus
Whooping cough	Pneumonia
Diphtheria	Myocarditis
Hypothyroidism	Hypothermia
Chronic glomerular nephritis	Myocardial infarction
Mumps – in children	Encephalitis
- In adolescents	Orchitis

Rose red spots – Typhoid

Sun burn rash / necklace rash - pellagra

Commonest dermatological lesion – Acne vulgaris

Commonest drug induced rash – Toxic erythema

Normally turn over period of body skin – 28 days

Main signs

Kehr sign	Shoulder pain due to irritation of diaphragm in spleen rupture
Sign de dance	Feeling emptiness in rt. Iliac fossa in intussusception
Balance's sign	Shifting dullness in ruptured spleen
Battle sign	Ecchymosis on mastoid due to fracture of post cranial fossa
Rovsing's sign	Pressure in left iliac fossa causes pain in right iliac fossa in acute appendicitis
Cooper's sign	Tenderness in left lateral position in acute appendicitis
Murphy's sign	Pain in rt. Hypochondric region in acute cholecystitis
Boa's sign	Hyperesthesia below 9 th rib on rt side in cholecystitis
Troister sign	In Ca stomach
Marion sign	In benign prostate enlargement
Tent sign	In ovarian cyst
Mathe's sign	In perinephric abscess
Sunset sign	In Hydrocephalus
Macewen's sign	In Hydrocephalus
Kerning sign	In meningitis
Flag sign	In kwashiorkor

Alder sign	In ruptured ectopic pregnancy
Pipe stem stool	In X ray of ulcerative colitis
Trendelenburg test	In Varicose veins
Hutchison's teeth	In Congenital syphilis

Commonest site of lesions

Corn	Feet and toes
Callosity	Hand
Carcinoma small intestine	Jejunum
Carcinoma colon	Sigmoid colon
Tubercular ulcer	Small intestine
Typhoid ulcer	Small intestine
Crohn's disease	Ilio caecal valve
Ulcerative colitis	Rectum
Commonest intussusception	Ilio caecal
Amoebiasis	Sigmoid colon
Pregnancy tumor	Gums

Synonyms –

- 1) Takayasu disease – pulse less disease
- 2) wilson's disease – hepato lenticular disease
- 3) Burger's disease – Thrombo arteritis obliterans

Hematuria –

- 1) before micturition – ulcer of urinary tract
- 2) end of micturition – vesical calculus
- 3) at the beginning or end of micturition – benign prostate hypertrophy

Fluid infusion is essential when burn is 15% in adults and 10% in children

Commonest fracture in Cushing's syndrome – vertebrae

Madura foot – Mycotic infection

Leather bottle stomach – initis plastica

Tennis elbow – tendinitis of lateral epicondyle of humerus

Ulcers –

- 1) flask shaped ulcers – in amoebiasis
- 2) bottle neck shaped ulcers – in amoebiasis
- 3) tropic ulcers – neurogenic ulcers
- 4) snail track ulcers – syphilis
- 5) marzollin's ulcers – on the scar of burns

Main component of gall stone – cholesterol

Silver needle is used for – renal biopsy

Main triads –

- 1) Murphy's triad – in acute appendicitis – pain fever vomiting
- 2) triad of portal hypertension – splenomegaly, ascites, oesophageal varicosity
- 3) for whooping cough – whoop, lymphocytosis, decreased ESR
- 4) Cushing's triad – in increased intracranial pressure
Increased BP and pulse rate and decreased respiratory rate
- 5) Saint triad – gall stone, hiatus hernia, diverticulosis

Acid fast bacilli – TB, leprosy, nocardia
All cocci are gram positive except Neisseria
All Bacilli are gram negative except diphtheria, tetany, TB, anthrax and Actinomycosis
100 day cough – whooping cough
8 th day disease – neonatal tetanus
Mycobacterium lepra can be found in breast milk
Yellow fever virus can penetrate skin
Epidemic dropsy is because of argemone mixicana oil
Smallest living organism – mycoplasma

Main gaits –

- 1) lurching gait – paralysis of gluteaus medius and minimus
- 2) spastic gait – hemiplegia
- 3) waddling gait – proximal muscle weakness
- 4) drunken gait – cerebral ataxia
- 5) stamping gait – sensory ataxia
- 6) fastinating gait – parkinsonism

Antibodies and immunoglobulin

- 1) smallest Ig – Ig G
- 2) Ig that crosses placenta – Ig G
- 3) warm antibodies – Ig G
- 4) Largest Ig – Ig M
- 5) Cold antibodies – Ig M
- 6) heat liable Ig – Ig E
- 7) Commonest Ig deficiency – Ig A
- 8) Ig present in milk – Ig G, Ig A

Antibodies of A and B develop after 6 months of age

Bombay or Oh blood –

- 1) have anti A anti B and anti H antibodies
- 2) incompatible with all except same blood group

Commonest blood group – 'o' blood group

Rh –ve 7% in south India

Blood persons prone to -

Blood group – 'O'	Blood group 'A'
Duodenal and gastric ulcers	Carcinoma stomach
Rh, heart disease	Carcinoma
Hemolytic tendencies	Pernicious anemia
Leprosy	Thrombosis in female taking contraceptives

Anaphylactic reaction is mediated by – Ig E

Cytotoxic reaction is mediated by – Ig G and Ig M